समकालीन हिंदी कथा साहित्य में नारी-विमर्श

सम्पादक
डॉ. चौधारे श्वेता बाबुलाल

समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में नारी-विमर्श

सम्पादक

डॉ. चौधारे श्वेता बा.

हिंदी विभागाध्यक्ष, मुळा एज्युकेशन सोसायटी संचालित
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, सोनई,
तहसील-नेवासा, जिला अहमदनगर

सह-सम्पादक

प्रा. अमोल दहातोंडे

अध्यक्ष

प्राचार्य डॉ. जी.बी. कल्हापुरे

हिंदी विभागाध्यक्ष, मुळा एज्युकेशन सोसायटी संचालित
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, सोनई,
तहसील-नेवासा, जिला अहमदनगर

लता साहित्य सदन

गाजियाबाद

कार्यालय

Principal

ISBN : 978-93-80462-72-1

© : संपादकगण

मूल्य : पाँच सौ रुपये

प्रथम संस्करण : 2016

प्रकाशक : नवभारत प्रकाशन
डी-626, गली नं. 1, अशोक नगर
(निकट ललिता मन्दिर)
शाहदरा, दिल्ली-110093
मोबाइल : 09968047183, 09717507223
email : fatehchand058@gmail.com

शब्द-संयोजन : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली-110094

मुद्रक : पूजा प्रिंटर्स
जगतपुरी विस्तार, दिल्ली-110093

Samkaleen Hindi Katha-Sahitya Mai Nari-Vimarsh
Edited by *Dr. Chaudharey Sweta Ba.*

प्रस्तुत कृति में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं कि संपादक मंडल उनके विचारों से सहमत हो।

डॉ. तसनीम पटेल ... 78
14. मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी-विमर्श
डॉ. गजाला वसीम अब्दुल बशीर शेख ... 83
15. समकालीन कहानियों में चित्रित विद्रोही माँ
काळे पुष्पलता विठ्ठलराव ... 87
16. स्त्री-विमर्श में कठगुलाब एक अनुशीलन
डॉ. खोत ज्योती चंद्रमोहन ... 92
17. मृदुला गर्ग के उपन्यासों में नारी-विमर्श
लोहकरे किशोर बळीराम ... 98
18. समकालीन कथा साहित्य में नारी-विमर्श
डॉ. मधु जैन
19. हिंदी साहित्य के प्रतिनिधि महिला उपन्यासकारों के साहित्य में नारी-विमर्श ... 102
प्रा. दहातोंडे सोपान धानुदास ... 109
20. समकालीन हिंदी कहानियों में नारी-विमर्श
डॉ. शेख एन.डी. ... 113
21. समकालीन हिंदी कहानियों में नारी-विमर्श
प्रा. डॉ. प्रतिभा रं. धारासूरकर ... 118
22. समकालीन हिंदी कहानियों में नारी-विमर्श
प्रा. राजेंद्र घोडे ... 122
23. हिंदी साहित्य में बदलता परिवेश और नारी का आत्मसंघर्ष
डॉ. विजयालक्ष्मी रामटेके ... 129
24. समकालीन हिंदी कहानियों में नारी का परिवारिक रूप
प्रा. डॉ. कुसुम राणा ... 133
25. संघर्ष में दलित नारी-विमर्श
डॉ. रूपाली दळवी ... 139
26. 'आज बाजार बंद है' उपन्यास में नारी-विमर्श
तुपे सरला सुर्यभान ... 142
27. नारी-विमर्श : अवधारणा और स्वरूप
डॉ. शहाबुद्दीन नियाज मुहम्मद शेख ... 146
28. समकालीन हिंदी कहानियों में अभिव्यक्त सुंदर एवं आकर्षक नारी
डॉ. अमानुल्ला शेख

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी-विमर्श

वर्तमान हिन्दी साहित्य में आम आदमी की पीड़ा उसकी त्रासदी को स्वर देनेवाले साहित्यकारों में मैत्रेयी पुष्पा का नाम प्रमुख है। उन्होंने नारी की विवशताओं समस्याओं को केवल समझा ही नहीं बल्कि अपने उपन्यासों में उन्हे आक्रोशपूर्ण वाणी भी दी।

नारी विमर्श वर्तमान उपन्यास साहित्य का एक महत्वपूर्ण आयाम है। पुरुषप्रधान भारतीय समाज में नारी को हमेशा दुय्यम स्थान दिया गया है। लेकिन आज दुय्यम नहीं बल्कि समान स्थान की अपेक्षा नारी को है। नारी विमर्श की अवधारणा में नारी के पिछड़ेपन के करणों तथा विभिन्न प्रयासों के परिणाम स्वरुप उनमें उत्पन्न चेतना को देखा जा सकता है। तात्पर्य नारी विमर्श नारी चेतना का ही दूसरा रुप है। समकालीन नारी लेखन में मुख्यतः जिन प्रश्नों को उठाया गया है, उनमें नारियों की आत्मनिर्भरता, स्वतंत्रता, स्वअस्तित्व, अस्मिता, नये मूल्य एवं नये संस्कारो से प्रभावित नारी रुप को अधिकाधिक चित्रित करने का प्रयास विभिन्न उपन्यासकारों ने किया है।

वैसे तो नारी चित्रण पुरुष और महिला दोनो के उपन्यासो मे मिलता है, लेकिन नारी के अनुभव एवं नारी जीवन का एहसास पुरुष लेखको से कई हद तक स्त्री लेखिकाओं का अलग होता है। नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं को व्यक्त करने का उनका अपना एक अलग ढंग होता है। पुरुषों की अपेक्षा स्त्री अपने निजी अनुभव स्वाभाविकता के साथ लिख सकती है। पुरुष जब स्त्री की स्थितियों को लिखता है, तो उसमें कल्पना का आ जाना स्वाभाविक बात है, लेकिन उन्हीं स्थितियों को जब स्वयं एक स्त्री वर्णित करती है, तो उसका प्रभाव उसकी सच्चाई पूरी तरह भिन्न होती है।

महादेवी वर्मा ने भी माना है कि...''पुरुष के द्वारा नारी का चरित्र अधिक आदर्श बन सकता है, परन्तु अधिक सत्य नहीं, विकृति के अधिक निकट पहुँच सकता है, परन्तु यथार्थ के अधिक समीप नहीं। पुरुष के लिए नारीत्व कल्पना है, परन्तु नारी के लिए अनुभव। अपने जीवन का जैसा सजीव चित्र वह हमे दे सकेगी, वैसा पुरुष बहुत साधना के उपरान्त भी शायद ही दे सके।''[1] पुरुष किसी पुरुष की

स्थितियों को प्रकट करने में निश्चित ही सफल हो सकता है, लेकिन नारी की अनुभूति को प्रकट करने के लिए विवश हो उसे कल्पना का सहारा लेना पड़ता है। समकालीन महिला लेखिकाएँ नारी विरोधी व्यवस्था का विरोध कर नवीन मूल्यों को स्थापित करना चाहती है, लेकिन यह पुरुष विरोध नहीं बल्कि पुरुष प्रधान समाज के विचारों का एवं सामाजिक विषमता का विरोध है। डॉ. शीला रजवार ने लिखा है...। "परिस्थितिवश उत्पन्न सामाजिक विषमता के विरुद्ध आवाज उठाना समय और मानव विकास की सहज प्रक्रिया है।"[2] और मानव होने के नाते विषमता के विरुद्ध आवाज उठाना उसका अधिकार है।

अतः नारी के प्राकृतिक स्वअस्तित्व को समाज के समक्ष उपस्थित करने हेतु समकालीन महिला उपन्यासकारों को विद्रोही स्वर अपनाना पड़ा। समकालीन अनेक महिला कथाकारो ने नारी जीवन की विषमताएँ, समस्याएँ आदि को बदलते मूल्यों के तहत परिवर्तित विचारों से विश्लेषित करने का प्रयास कर भारतीय नारी जीवन के सभी सम्भावित पहलुओ को बडी बेबाकी के साथ डकेरा उनमे मैत्रेयी पुष्पा का नाम प्रमुख है। उनके 'अल्मा कबुतरी', 'इदन्नमम', 'चाक', बेतवा बहती रही उपन्यासों में नारी जीवन की सूक्ष्म दृष्टि का परिचय होता है। 'इदन्नमम' उपन्यास के कारण वह चर्चा में आई। 'इदन्नमम' उपन्यास नारी संघर्ष को वाणी देता है। सामन्ती समाज के अत्याचारों को सहती जूझती अभिशप्त नारी की व्यथा का बयान ही प्रस्तुत उपन्यास है। समाज में नारी की स्थिति एवं नियति को मैत्रेयीजी ने अभिव्यक्त किया है। नारीवादी आन्दोलन से प्रभावित हो उन्होंने ऐसे नारी पात्रों की सृष्टि की है जो अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष करते हुए खुद के निर्णय खुद लेना पसंद करती है, और पुरुषों का सहारा लेना पसंद नहीं करती क्योंकि पुरुषो का सहारा लेकर वह अपनी आत्म संतुष्टि की भावना को ठेंस नहीं पहुँचाना चाहती।

सदियों से पुरुष प्रधान समाज के विचारों की शिकार बनते रहनेवाली नारी के भिन्न रूप उन्होंने अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किये हैं। नारी के ऐसे विभिन्न रूप हमें उनके 'इदन्नमम' उपन्यास में मिलते हैं...।" प्रस्तुत उपन्यास में सामन्ती समाज के हिंसक अन्तर्विरोधो और दोहरे चरित्र को जानने समझने के साथ-साथ बदलते परिवेश में अन्य विकल्पों की अनन्त सम्भावनाओं की तलाश में निकली ग्रामीण, अनपढ, अंगूठा टेक औरतों की व्यथा कथा है–जो पाठक के अन्तर्मन को छूने में कामयाब है।"[3] इस चरित्र प्रधान उपन्यास में तीन प्रमुख नारी चरित्र है, बऊ (दादी) प्रभा (माँ) और मंदा इन तीनों की अपनी वेदनाएँ, समस्याएँ और सीमाएँ है। अपने-अपने तरीके से तीनों अन्याय का प्रतिरोध करती है। उपन्यास की मंदा अधिकारों के लिए किए गए आन्दोलनों की आत्मा है। वह शोषितों के साथ जुड़

दो मोर्चों पर लड़ती है। एक तो नारी होने की पहचान को कायम करने हेतू दूसरे दोनों की शोषण मुक्ति के लिए। आज स्त्री की स्थितीयों में परिवर्तन लानेवाली सोच विश्वव्यापी सोच बन गई है। उपन्यास में मंदा का स्वर इस परिवर्तन की धारा से जुड़ी मैत्रेयी जी का भी स्वर है।

'इदन्नमम' उपन्यास के समान ही 'बेतवा बहती रही' के नारी पात्र भी विशिष्ट है। इस उपन्यास के उर्वशी, मीरा, जीजी, नानी, दादी, शेरा की साहसी पत्नी आदि चरित्र विशेष एवं अविस्मरणीय है। मैत्रेयीजी का पहला उपन्यास 'बेतवा बहती रही' आँचलिकता के परिप्रेक्ष्य में एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। लेखिका ने इस उपन्यास में नायिका उर्वशी के माध्यम से हमारे समाज की किसी भी निर्धन नारी की त्रासदी को अभिव्यक्ति दी है। उर्वशी मैले कुचेले अभावग्रस्त परिवार में जन्मी है, उसके लिए उसका अप्रतिम सौन्दर्य वरदान नहीं अभिशाप साबित होता है। उपन्यास में समाज की विभिन्न बातों की झलकियां दिखाई देती हैं, लेकिन मुख्य आख्यान उर्वशी की दुःखमय विडम्बना का है। जिस परिवार में कडे परिश्रम के बावजूद दो वक्त की रोटी जुटाना मुश्किल है, वहाँ उर्वशी का दहेज जुटाना असंभव सी बात है। समाज में लडकी के पिता का दहेज न जुटा पाने के कारण लड़की पर होनेवाले अत्याचार एवं उसकी असह्य स्थिति को उर्वशी के माध्यम से देखा जा सकता है। उपन्यास में उर्वशी का भाई अजित अपने पिता की बेबसी का फायदा उठाकर अपनी इकलौती बहन उर्वशी को एक अमीर दुहाजू को बेचने का प्रयास करता है। लेकिन सहेली मीरा के नाना द्वारा उसे बचा लेने पर वही उसका विवाह एक गुणवान लड़के से कर देते हैं लेकिन कुछ थोड़े समय में ही वह विधवा हो जाती है। तब भाई अजित अपने स्वार्थ हेतु उर्वशी का विवाह मीरा के बूढ़े विधुर पिता बरजोर सिंह के साथ जबरदस्ती कर देता है, फलस्वरुप उसे इस विक्रय मे दस बिघा जमीन मिल जाती है। अंत में बदला लेने हेतू बरजोरसिंह ही उर्वशी को जहर देकर मार डालता है।

उपन्यास में पाठक उर्वशी के दुःख से जुड़ जाता है। क्योंकि समाज में ऐसे कई उर्वशियों का आक्रोश, असहाय माता-पिता एवं ऐसे कई जबरदस्ती पुनःविवाह करनेवाली पीड़ित नारियों को वह देखता है। इसलिए उर्वशी की स्थितियाँ पाठकों का हृदय हिला देनेवाली है। जो पाठकों के मन में नारी पर होनेवाले अन्याय के प्रति आक्रोश भी पैदा करती है। उपन्यास में लेखिका ने इस बात की ओर भी संकेत किया है कि आज भी किसी नियम या कानून का इस्तेमाल स्त्री के लिए एक हथियार के रूप मे ही किया जाता है। कभी-कभी विवाह विच्छेद या विधवा विवाह स्त्री की सुविधा या स्वतंत्रता के लिए नहीं उसके लिए यातना के द्वार खोलने वाला बन जाता

है। आगे नायिका सारंग का विद्रोही तेवर, न्याय और अधिकार की लड़ाई सामाजिक कार्य आदि में सारंग का एक सचेत एवं क्रियाशील नारी रूप प्रकट होता है।

निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि मैत्रेयीजी ने अपने उपन्यासों में नारी शोषण उनकी दासता एवं दबी कुचली सर्वहारा नारी के प्रश्न उठाये है। छोटा मोटा काम करनेवाली कडी मेहनत करते हुए परिस्थितियों को भुगतने वाली नारी उनके उपन्यास साहित्य के केंद्र में है, उसी के साथ विभिन्न कारणों से समकालीन नारी की परिवर्तित मानसिकता के कारण जागृत सजग स्वअस्तित्व के लिए संघर्ष करने वाली नारी के विभिन्न रूपों को उन्होंने अपने उपन्यासों में अभिव्यक्ति दी है।

मैत्रेयीजी के उपन्यासों में प्रस्तुत नारी विमर्श की उपलब्धि के रुप में हम देख सकते है कि उनका उपन्यास साहित्य नारी के लिए प्रेरणादायी बन सकता है, क्योंकि उन्होंने अपने उपन्यास साहित्य में पुरुष प्रधान भारतीय समाज रचना में नारी की अस्मिता उसकी पहचान उसकी शक्ति उसकी लडाई और उससे जुडे तमाम सवालो को लेकर लिखा है। उन्होने अपने लेखन द्वारा नारी वर्ग को भारतीय संस्कृति में कितना ऊँचा स्थान है यह बताना चाहा। वह नारी को जागृत कर स्वअस्तित्व बोध कराना चाहती है। उनका साहित्य गरीबों की बहू बेटियों का शोषण और बेबस लाचार नारी की आवाज को नारी विमर्श का समर्थन करने वाले अपने भारत देश एवं शोषकों तक पहुँचाने का कार्य कर सकता है।

डॉ. गजाला वसीम अब्दुल बशीर शेख
हिंदी विभाग अध्यक्षा
श्री आसारामजी भांडवलदार महाविद्यालय
देवगांव (रं.), ता.कन्नड, जि.औरंगाबाद।
समकालीन कहानियों में चित्रित विद्रोही 'माँ'

संदर्भ एवं विवेचित ग्रंथ

1) समकालीन महिला लेखनः डॉ. ओमप्रकाश शर्मा, पृ. 26, 27
2) स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य में नारी के बदलते संदर्भ–डॉ. शीला रजवार पृ. 65
3) नयी सदी के उपन्यासः स. डॉ. नवीनचन्द्र लोहनी पृ. 174
4) अल्मा कबुतरी–मैत्रेयी पुष्पा, पृ. 358
5) चाक–मैत्रेयी पुष्पा
6) इदन्नमम–मैत्रेयी पुष्पा
7) बेतवां बहती रही–मैत्रेयी पुष्पा

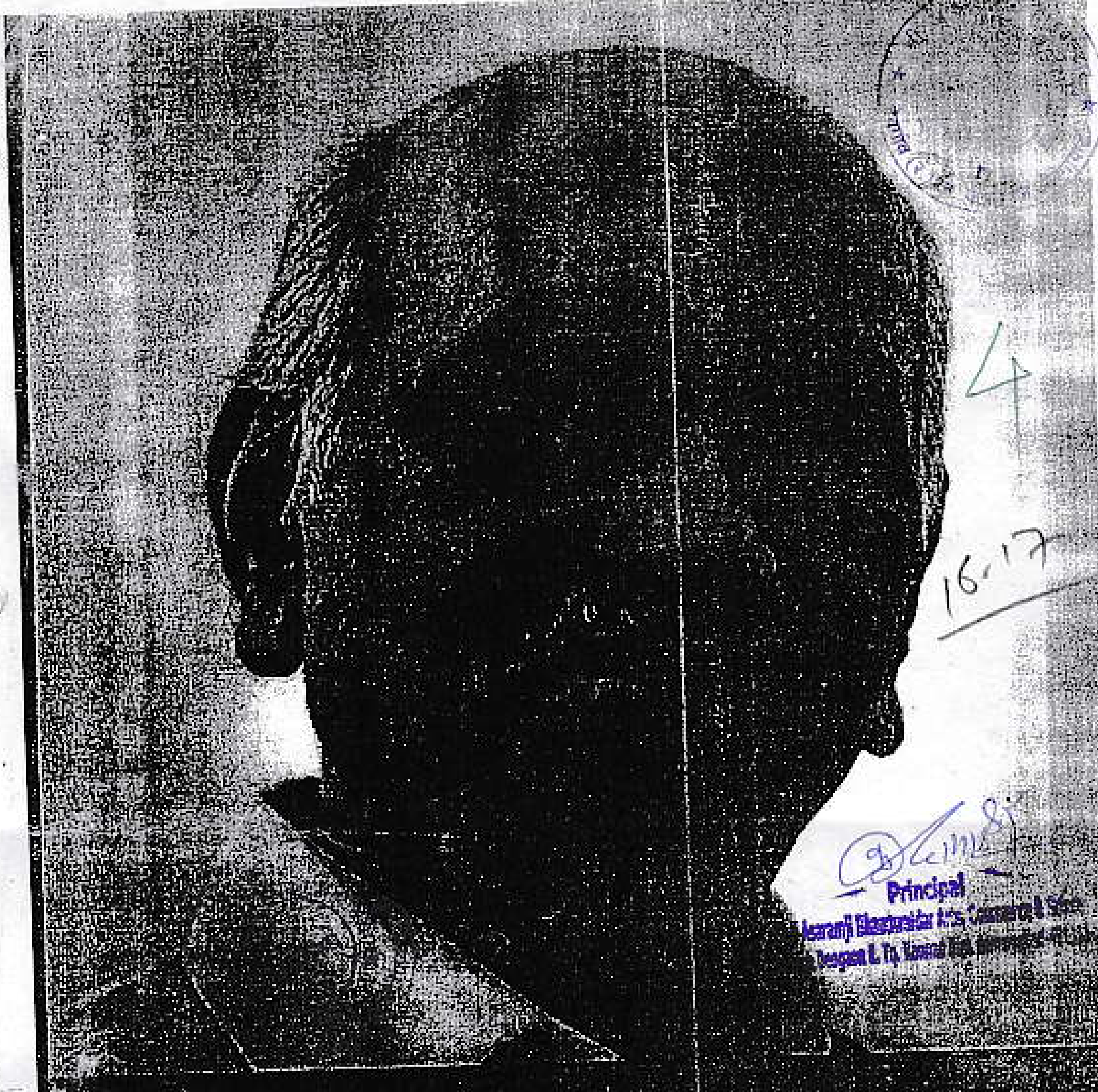

प्रयोजनमूलक हिंदी

चिंतन-अनुचिंतन

सम्पादक

डॉ. सुधाकर शेंडगे | डॉ. सुकुमार भंडारे

डॉ. गोविंद बुरसे | डॉ. रमेश शिंदे

Principal

प्रयोजनमूलक हिन्दी
चिंतन अनुचिंतन

संपादक मंडल

डॉ. सुधाकर शेंडगे — डॉ. सुकुमार भंडारे

डॉ. गोविन्द बुरसे — डॉ. रमेश शिन्दे

Principal
Shri Asaramji Bhandwaldar Arts, Commerce & Science
College Deogaon R. Tq. Kannad Dist. Aurangabad-431115

विकास प्रकाशन कानपुर

मूल्य : छः सौ पचास रुपए मात्र

पुस्तक	:	प्रयोजनमूलक हिन्दी : चिंतन अनुचिंतन
संपादक	:	डॉ. सुधाकर शेंडगे, डॉ. सुकुमार भंडारे डॉ. गोविन्द बुरसे, डॉ. रमेश शिन्दे
प्रकाशक	:	**विकास प्रकाशन** 311 सी, विश्व बैंक बर्रा, कानपुर– 208027
©	:	संपादकाधीन
संस्करण	:	प्रथम, 2016 ई.
आवरण-सज्जा	:	छपाई घर, ब्रह्मनगर, कानपुर
शब्द-सज्जा	:	रिचा ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	साक्षी आफसेट, कानपुर
मूल्य	:	650.00
I.S.B.N.	:	978-93-81279-80-9

12. कम्प्यूटर पर हिंदी : यूनिकोड से विश्व भाषा की ओर — 95
डॉ. ईश्वर पवार

13. भाषिक संप्रेषण — 101
डॉ. सुनील बाबुराव कुलकर्णी (देशगव्हाणकर)

14. प्रयोजनमूलक हिन्दी : नयी सोच की दस्तख — 112
प्रा. डॉ. रमा दुधमांडे

15. इंटरनेट और हिंदी — 118
डॉ सातापा शामराव सावंत

16. ऑनलाईन पाठ्यक्रमों का वर्तमान परिदृश्य — 121
डॉ. शैलेश मरजी कदम

17. प्रयोजनमूलक हिन्दी स्वरूप, क्षेत्र एवं तत्व — 125
डॉ. जी. शान्ति

18. जनसंचार के माध्यमों में प्रयुक्त भाषा (समाचार पत्र और दूरदर्शन के संदर्भ में) — 131
प्रा. डॉ. एस. आर. सांगोळे

19. हिंदी ब्लॉग : जनसंचार माध्यम का नया रूप — 138
डॉ. अशोक मर्डे

20. प्रयोजनमूलक हिन्दी में डॉ. माधव सोनटक्के का योगदान — 144
डॉ. कोटुळे बायजा

21. प्रयोजन के शिल्पी : डॉ. माधव सोनटक्के — 150
डॉ. देशमुख दस्तगीर सरदारमियाँ

22. संचार का सशक्त माध्यम पत्रकारिता — 155
डॉ. गजाला वसीम अब्दुल बशीर शेख

23. प्रयोजनमूलक हिन्दी : अवधारणा, स्वरूप-विवेचन — 162
प्रा. भास्कर शिवलाल राठोड

24. वैज्ञानिक, तकनीकी तथा प्रौद्योगिक क्षेत्रों में अनुवाद — 166
प्रा. कापावर व्ही. डी.

25. अनुवाद समस्या और गुण — 170
प्रा. डॉ. मुरलीधर अच्युतराव लहाडे

22

संचार का सशक्त माध्यम पत्रकारिता

– डॉ. गजाला वसीम अब्दुल बशीर शेख

आज 21वीं सदी का युग पूर्णतः मीडिया का युग है। आधुनिक युग में मीडिया की भूमिका बहुत बढ़ गयी है। हिंदी आज केवल साहित्य तक सीमित न रहकर प्रशासन, मीडिया पत्रकारिता, बैंक, विज्ञान आदि क्षेत्रों में प्रयुक्त हो रही है। आधुनिक युग में सूचना के साधनों में काफी वृध्दि हुई है। मीडिया सूचनाओं एवं विचारों को पाठकों तक पहुँचाता है। मीडिया सूचित करता है, शिक्षित बनाता है, एवं जागृति पैदा करने के साथ-साथ मनोरंजन भी करता है। संचार को जनसंचार से जोड़कर व्यापक बनाया गया है। जनसंप्रेषण के बिना जन संचार का कोई महत्व नहीं। जनसंचार की विभिन्न परिभाषाएँ भी की गई हैं जिनमें डैनिस मैकबेल संचार को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक अर्थपूर्ण संदेशों के प्रेषण के रूप में स्वीकार करते हैं। जनसंचार संप्रेषित संदेशों को बड़ी संख्या में लोगों को ग्रहण कराता है।

आधुनिक युग में संचार माध्यमों की भूमिका महत्वपूर्ण है। इन सभी माध्यमों की हिंदी महत्वपूर्ण भाषा बन चुकी है। इन माध्यमों में हिंदी का परिनिष्ठित रूप होता है। जनसंचार या जनमाध्यमों को मुद्रण माध्यम और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के रूप में रखा गया है। मुद्रण माध्यम अन्य आधुनिक माध्यमों की अपेक्षा सबसे प्राचीन है। मुद्रण माध्यम के अंतर्गत समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, जर्नल पुस्तकें, पॉम्पलेट, पोस्टर आदि आते हैं। अन्य संचार माध्यमों की अपेक्षा यह लिखित माध्यम अधिक विश्वसनीय होते हैं। यह मुद्रित साहित्य पत्रकारिता के अंतर्गत रखा जाता है। इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के अंतर्गत रेडियो, दूरदर्शन, इंटरनेट, संगणक आदि आते हैं।

संचार माध्यमों में एक सशक्त एवं महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में पत्रकारिता या जर्नलिज्म को देखा जाता है, समाचारों का लेखन प्रकाशन एवं संयोजन प्रसारण संपादन ही पत्रकारिता है ।

पत्रकारिता लोकमत बनाने का एक महत्वपूर्ण साधन है। उसका मुख्य ध्येय सेवा है, और उसका उद्देश्य यह होना चाहिए की लोकभावना को समझकर उसकी अभिव्यक्ति की जाए। 19वीं शताब्दी में ही पत्रकारिता ने नवजागरण आरंभ कर दिया था। बीसवीं शताब्दी में इसका व्यापक विकास होने

के साथ-साथ विविध आयामों के रूप में भी इसे विकसित किया गया।

हिंदी पत्रकारिता का प्रारंभ कलकत्ता से हुआ। गुलामी से मुक्ति पाने के लिए भी भारतीय लोगों ने पत्रकारिता का सहारा लिया था । आजादी के बाद आजतक पत्रकारिता का संघर्ष चलता रहा। सन 1780 में प्रकाशित भारत का प्रथम समाचार पत्र हिक्की गजट से आरंभ होकर पत्रकारिता आजतक की लंबी यात्रा कर रही है।

आकाशवाणी और दूरदर्शन भी पत्रकारिता के क्षेत्र में आ गये हैं। अतः इनकी व्यापक परिभाषा करना आवश्यक है।

पत्रकारिता का क्षेत्र वर्तमान समय में अत्यंत विशाल हो चुका है। आजादी के बाद हिंदी पत्रकारिता विभिन्न रूपों में विकसित हुई। आज वह केवल राजनीति एवं साहित्य तक सीमित न रह वाणिज्य, व्यवसाय, विज्ञान, धर्म, फिल्म आदि विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश कर चुकी है।

पत्रकारिता के विभिन्न आयाम

आजादी के बाद पत्रकारिता अत्यंत तीव्र गति से विकसित हुई उसके व्यापक रूप को देखते हुए उसे अनेक रूपों में विभाजित किया जाता है।

साहित्य की लघु पत्रिकाएँ : आजादी के पहले हिंदी पत्रकारिता स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ी हुई थी। उस समय अनेक साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से जनआंदोलन में हिस्सा लिया था। साहित्यिक लघु पत्रिकाएँ इस युग में प्रकाशित हुई थीं। पत्रकारिता का यह स्वरूप विकसित हो विभिन्न रूपों में फैलता रहा। इस युग में विभिन्न लघु पत्रिकाओं के प्रकाशन के माध्यम से साहित्य के विभिन्न आंदोलन हुए। इसी युग में हिंदी साप्ताहिक धर्मयुग का प्रकाशन हुआ। साप्ताहिक हिंदुस्तान का भी प्रकाशन हुआ। सरकार ने आजकल मासिक आरंभ किया। ज्ञानोदय के प्रकाशन को व्यावसायिक रूप भी दिया गया था। लघु पत्रिका आदेश के प्रकाशन का आरंभ रमेश बक्शी ने किया और 1969 में दिल्ली में पहली लघु पत्रिका प्रदर्शनी आरंभ की गई।

प्रगतिशीलता को आगे बढ़ाने हेतु लघु पत्रिका निकेत का प्रकाशन किया गया। तात्पर्य लघु पत्रिकाओं के रूप में साहित्यिक पत्रकारिता सामने आई और उसे पत्रकारिता के प्रमुख प्रकार के रूप में स्थान प्राप्त हुआ।

खेल पत्रकारिता : आधुनिक युग में खेल का महत्त्व दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है। खेलों में बढ़ती रुचि एवं उसके इतने प्रचार-प्रसार के कारण ही खेल पत्रकारिता सामने आई। खेलों में बढ़नेवाली रुचि ही खेल पत्रकारिता के महत्त्व को साबित करती है। खेलों के लिए विभिन्न समाचार पत्रों में नियमित स्तंभ होते हुए भी खेल पत्रिकाएँ भी प्रकाशित की जाती हैं। केवल खेल से संबंधित

समाचार ही इन पत्रिकाओं में होते हैं। हिंदी में अनेक खेल पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। तात्पर्य क्रीडा लेखन का क्षेत्र हिंदी में अधिक विकसित हो रहा है। दैनिक हिंदुस्तान में भी खेलों को कवरेज मिलता था। कई विशेषांक निकाले गये जिनमें ओलंपिक क्रिकेट एवं एशियाई खेल विशेषांक को विशेष महत्व है। 1971 में खेल युग, खेल समाचार जैसे खेल पत्रिका एवं मासिक प्रकाशित हुए। खेल के संबंध में प्रकाशित पुस्तकें भी खेल पत्रकारिता के अंतर्गत आती हैं। नैशनल बुक ट्रस्ट ने भी इसमें काफी योगदान दिया है।

बाल पत्रकारिता : भारतेन्दु युग से बाल दर्पण से बाल पत्रकारिता का प्रारंभ माना जाता है। 1917 में प्रकाशित बालसखा में बालकों के लिए रोचक निबंध, कविताएँ, पहेलियाँ प्रकाशित हुई। बाल पत्रिका, बालक, चंदामामा, गुड़िया, बालभारती, जीवन शिक्षा, आदि बाल पत्रिकाएँ महत्त्वपूर्ण रहीं। ऐसी पत्रिकाओं में बालकों के लिए ज्ञान और मनोरंजन की सामग्री होती है। बालकों पर अच्छे संस्कार करना उनको दिशा एवं प्रेरणा देना, उनकी प्रतिभा जाग्रत करना, उनका व्यक्तित्व बनने में सहायता करना यह बाल पत्रकारिता का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है। आज इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए बालकों से संबंधित स्तंभ चलाए जा रहे हैं। नवभारत टाईम्स, हिंदुस्तान, जागरण जैसे समाचार पत्रों में इस प्रकार के स्तंभ प्रकाशित होते हैं।

फिल्म पत्रकारिता : फिल्म निर्माण के केंद्र मुंबई, कोलकाता और चेन्नई रहे हैं लेकिन हिंदी की फिल्म पत्रकारिता का केंद्र दिल्ली रहा है। अधिक वितरण एवं प्रदर्शन के कारण फिल्म पत्रकारिता यहाँ विकसित हुई। फिल्मी पत्रकारिता के रूप में नव चित्रपट, रंगभूमि का प्रकाशन हुआ। फिल्मों के बढ़ते प्रभाव के कारण अनेक पत्रिकाएँ प्रकाशित होती रहीं। युगछाया, चित्रलेखा, सरगम जैसी फिल्मी पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई। ऐसी पत्रिकाओं से पाठक अधिक प्रभावित हुआ। सुषमा और चित्रा जैसी फिल्मी पत्रिकाओं का उर्दू के साथ हिंदी में भी प्रकाशन हुआ। माधुरी, फिल्मी कलियाँ, पालकी आदि फिल्मी पत्रिकाएँ भी प्रकाशित होती रहीं। कई पत्र-पत्रिकाएँ नियमित रूप से फिल्मों के स्तंभ भी देती हैं। कई पत्रिकाओं में एक से अधिक पृष्ठों के अलग से स्तंभ भी निकाले जाते हैं। जिनमें हम दैनिक भास्कर, नवरंग और नई दुनिया का उल्लेख कर सकते हैं। इसी के साथ मुंबई में फिल्म जर्नलिस्ट सोसायटी और दिल्ली में फिल्मी क्रिटिक्स एसोसिएशन का आरंभ भी हुआ। पाठकों की फिल्मों के प्रति बढ़ती रुचि एवं फिल्मी पत्रकारिता पर फिल्मों का प्रभाव फिल्मी पत्रिकाओं या पत्रकारिता के लिए विशेष महत्वपूर्व रहा।

वाणिज्यिक एवं आर्थिक पत्रकारिता : देश की अर्थव्यवस्था में हमेशा

से वाणिज्य व्यवसाय का विशेष महत्त्व रहा है। वाणिज्य और आर्थिक पत्रकारिता के कारण ही हम उद्योग, उत्पादन एवं व्यापार की विभिन्न गतिविधियों से परिचित होते हैं। व्यवसाय में निरंतर होनेवाले परिवर्तन एवं विस्तार को ध्यान में रखते हुए अनेक समाचार-पत्र वाणिज्य एवं अर्थ विषयक विशेष पृष्ठ प्रकाशित करते हैं। अर्थ और व्यवसाय पर आधारित कई वाणिज्यिक पत्र भी प्रकाशित होते हैं। वाणिज्यिक पत्रिकाओं मे स्टॉक एक्सचेंज, सराफा बाजार, मंडी बाजार आदि उद्योगों से संबंधित कारोबार का विस्तृत लेखा-जोखा होता है। वाणिज्यिक पत्रकारिता का विकास आरंभ में अंग्रेजी में जितना हुआ उतना हिंदी में नहीं हो पाया। भारत में पहली वाणिज्यिक पत्रिका 1886 में कलकत्ता में 'कैपिटल' नाम से शुरू हुई। इकोनॉमिक टाईम्स और फायनेंशियल एक्सप्रेस पत्रिकाओं में उद्योग से संबंधित समाचार ही प्रकाशित होते है। कोलकाता में उद्योग भारती और नागपुर से उद्यम नामक पत्रिकाएँ भी निकलती हैं। नवभारत टाईम्स, लोकसत्ता आदि में भी वाणिज्य एवं अर्थ विषयक समाचार छापे जाते हैं। भारत में 1961 में आर्थिक पत्रकारिता की शुरुआत हुई। उद्योग के क्षेत्र में वाणिज्य एवं आर्थिक पत्रकारिता एक महत्वपूर्ण पत्रकारिता के रूप में उभरी है। अर्थनीति से जुड़े इस पत्रकारिता का महत्व दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है लेकिन फिर भी हिंदी में ऐसे समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं की ओर अधिक आवश्यकता है। क्योंकि आधुनिक उपभोक्तावादी समाज में बाजार केंद्रित अर्थ व्यवस्था के कारण व्यवसाय वाणिज्य विषयक पत्र एवं पत्रिकाओं के प्रकाशन को और अधिक विस्तारित किया जा सकता है।

ग्रामीण एवं कृषि पत्रकारिता : जनसंचार के विभिन्न साधनों का गाँव तक पहुँचना इसलिए अनिवार्य है कि उनके द्वारा ग्रामीण एवं कृषि विषयक समस्याओं को केंद्र बनाया जा सकता है। क्योंकि आज भी भारत के गाँवों में पिछड़ापन एवं समस्याएँ अधिक मात्रा में हैं। गाँव की समस्याएँ एवं पिछड़ेपन को सबके समक्ष ला गाँवों में नई चेतना एवं विज्ञान, ज्ञान को पहुँचाने का काम केवल समाचार पत्र ही कर सकते हैं। आज समाचार पत्रों को ग्रामीण एवं कृषि विषयक समस्याओं पर केंद्रित कर प्रकाशित किया जाने लगा है। आज, महानगरों से निकलने वाले समाचार पत्रों में भी गाँव एवं अंचल से संबंधित खबरें छपकर आ रही हैं। कुछ पत्र-पत्रिकाएँ ग्राम परिवेश से भी निकाली जा रही हैं। कृषि विषयक विशेषांक भी निकल रहे हैं। जिन समाचार पत्र-पत्रिकाओं में गाँव एवं कृषि विषयक समाचार ही प्रमुख रूप से दिये जाते है उन्हें ग्रामीण एवं कृषि पत्रकारिता में रखा जाता है। कृषि, पशुपालन, बीज, खाद जैसे कई विषय इसके अंतर्गत आते हैं। तात्पर्य आजकल केवल समस्याओं का चित्रण ही नहीं बल्कि

आधुनिक कृषि विकास के लिए सहायक मार्गदर्शन भी ग्रामीण पत्रकारिता द्वारा दिया जा रहा है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद एवं कृषि विश्वविद्यालयों से पत्र-पत्रिकाएँ भी निकल रही हैं। महाराष्ट्र में सकाळ वृत्तपत्र समूह की ओर से 'ॲग्रोवन' नामक दैनिक का आरंभ करना इस क्षेत्र में एक उल्लेखनीय बात है।

रेडियो और टेलीविजन पत्रकारिता : इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की पत्रकारिता भी अब प्रिंट मीडिया में आ जाने के कारण रेडियो पत्रिकाएँ भी प्रकाशित हो रही हैं। अब रेडियो केवल प्रसारण पत्रकारिता ही नहीं रहा बल्कि वह मुद्रित पत्रकारिता भी बन गया है। हर रेडियो स्टेशन पर प्रकाशित होनेवाले समाचारों की समाचार बुलेटिन मुद्रित भी की जाती है। आज अनेक रेडियो पत्रिकाएँ भी प्रकाशित हो रही है। उसी प्रकार टेलीविजन भी अत्यंत व्यापक हो गया है। टेलीविजन के संबंध में भी अनेक पत्र मुद्रित भी होते हैं, और इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता के रूप में भी सामने आते हैं। इसे पत्रकारिता का नया रूप कहा गया है। दूरदर्शन ने फोटो पत्रकारिता को स्थिर के स्थान पर चलित बना दिया है। टेलीविजन के कार्यक्रमों और समाचारों के लिए प्रिंट मीडिया का सहयोग व्यापक रूप में लिया जा रहा है। समाचार लेखन भी टेलीविजन का एक विशेष क्षेत्र बन गया है, उसी के साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी इसका काम बहुत आगे बढ़ चुका है। आज रेडियो एवं टेलीविजन पत्रकारिता का व्यापक महत्व है।

महिला पत्रकारिता : महिला पत्रकारिता नारी चेतना एवं नारी समस्याओं को समाज के सामने लाने का एक मंच है। स्त्री शिक्षा, स्त्री स्वास्थ्य, मातृत्व, सौंदर्य प्रसाधन, हस्तकला, व्यक्तित्व विकास आदि विभिन्न पहलुओं की जानकारी देना ही इस पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य रहा है। आधुनिक युग में स्त्री पत्रकारिता और नारी संबंधित पत्रिकाओं की संख्या बढ़ रही है। इन पत्रिकाओं में गृहशोभा, वामा, वनिता जैसी अनेक पत्रिकाएँ महिलाओं पर अलग साप्ताहिक पृष्ठ निकालती हैं। दैनिक भास्कर में मधुरिमा और नई दुनिया में नायिका इसी प्रकार की पत्रिकाएँ हैं। आज प्रिंट मीडिया ही नहीं बल्कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में भी महिला पत्रकारों का वर्चस्व बढ़ रहा है। इसीलिए महिला पत्रकारिता भी पत्रकारिता का आवश्यक अंग एवं विशेष आयाम के रूप में उभर रही है।

फोटो पत्रकारिता : समाचार पत्रों को सजीव बनाने का कार्य फोटो करते हैं। समाचारों से संबंधित फोटो लेना, फोटो बनवाना, उसे उचित शीर्षक देने का कार्य, फोटो पत्रकार का होता है। फोटो पत्रकारिता हमें व्यक्तियों, वस्तुओं घटनाओं के यथार्थ तक पहुँचाने वाली होने के कारण बड़ी ही विश्वसनीय होती है। फोटो पत्रकारिता भी पत्रकारिता के क्षेत्र में बहुत ही महत्वपूर्ण होती जा रही है। समाचार पत्रों में समाचार के साथ संबंधित चित्र भी दिये जाते हैं। जो

समाचार को आकर्षक बना देते हैं। इसमें भाषा के बिना भी समाचारों का सम्प्रेषण किया जा सकता है। घटनाओं, समारोहों, सेमीनारों, वार्ताओं और परिसंवादों के कारण भी फोटो पत्रकारिता का महत्व बढ़ता जा रहा है।

शैक्षिक पत्रकारिता : समाज परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम होने के कारण पत्रकारिता का अनन्य साधारण महत्व है। विभिन्न शैक्षिक, संस्थाओं द्वारा चलायी जानेवाली शैक्षिक प्रवृत्तियाँ, शिक्षा जगत की घटनाएँ एवं शैक्षिक समस्याओं को जनसंचार माध्यमों के द्वारा जनता तक पहुँचाने का कार्य शैक्षिक पत्रकारिता करती है। शैक्षिक पत्रकारिता समाज में वैचारिक चेतना का विकास करने के साथ-साथ शिक्षा संस्थाओं में आपसी संबंध स्थापित करने का सशक्त माध्यम बन सकती है। शिक्षा से संबंधित समस्याओं को समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर उन समस्याओं का समाधान करने के लिए प्रेरित करना ही शिक्षा पत्रकारिता का अर्थ एवं उद्देश्य है।

खोजी पत्रकारिता : खोजी पत्रकारिता को अनुसंधानात्मक पत्रकारिता के नाम से भी जाना जाता है। इसके द्वारा समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार के विभिन्न प्रकरण पर से पर्दा उठाया जाता है। पत्रकार का उद्देश्य सत्य तक पहुँच कर समाज के सामने सत्य की पोलखोल करना होता है। इस पत्रकारिता के पत्रकार बड़े साहसी होते हैं। उन्हें समाज का प्रतिबिंब समाज के सामने लाना होता है।

इस पत्रकारिता में पत्रकार बड़े-बड़े घोटालों का पर्दाफाश करते हैं। प्रतिदिन समाचार पत्रों में खोजपूर्ण समाचार प्रकाशित होते हैं इसलिए खोजी पत्रकारिता के लिए स्वतंत्र समाचार पत्रों की आवश्यकता नहीं होती। बढ़ता आतंकवाद, स्त्रियों एवं बच्चों की तस्करी, विभिन्न अपहरण की घटनाएँ जैसे क्षेत्रों में अपनी जान को जोखिम में डालकर कई पत्रकार काम कर रहे हैं, ऐसे पत्रकारों को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता होती है। खोजी पत्रकारिता पर पुस्तकें भी लिखी जा रही हैं।

इसके अतिरिक्त धार्मिक पत्रकारिता, खेल पत्रकारिता, संसदीय पत्रकारिता, विदेशी पत्रकारिता, कार्टून पत्रकारिता जैसे अनेक क्षेत्रों में पत्रकारिता अपना काम प्रभावी ढंग से कर रही है।

स्वतंत्रता के बाद समाचार पत्रों में परिवर्तन, आधुनिकीकरण और नयी तकनीकों का विकास हुआ। पत्रकारिता के विकास में साहित्य और समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा। समाचार पत्रों की संख्या लगातार बढ़ती गयी। आज पत्रकारिता का क्षेत्र इतना विकसित हो चुका है कि अनेक प्रकार की पत्रिकाओं ने अपनी अलग पहचान बनाई है। महिलाओं, बच्चों, युवाओं, विज्ञान, खेल, राजनीति, अर्थव्यवस्था एवं साहित्य के लिए अलग-अलग पत्रिकाओं का प्रकाशन

इसी का प्रतीक है।

रेडियो पत्रकारिता के क्षेत्र में भी नये प्रयोग हुए टेलीविजन के आने से पत्रकारों को नया अवसर प्राप्त हुआ। दूरदर्शन के बढ़ते हुए चैनलों में हिंदी का प्रयोग होने लगा। इस प्रकार पत्रकारिता का प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के क्षेत्र में लगातार विकास होता रहा।

हिंदी पत्रकारिता की उपलब्धि के रूप में हम देख सकते हैं कि पत्रकारिता के माध्यम से ज्ञान सूचना जागृति मनोरंजन जैसी बातें प्राप्त तो होती हैं उसी के साथ इसके बढ़ते विकास एवं निरंतर नये-नये आयामों के कारण आज के युवाओं के लिए रोजगार पाने एवं उसमें कुछ कर दिखाने की संभावनाएँ बढ़ती जा रही हैं। आज हिंदी पाठ्यक्रमों में पत्रकारिता को समाविष्ट किया जा रहा है, जिस कारण छात्र शैक्षिक काल से ही हिंदी भाषा एवं हिंदी पत्रकारिता के विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार की संभावनाओं से परिचित हो जाते हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आज आधुनिक मशीनों से हिंदी समाचार पत्रों को प्रकाशित किया जा रहा है, जो हिंदी भाषा एवं हिंदी पत्रकारिता के लिए महत्वपूर्ण साबित हो रहा है और इनका पाठक वर्ग व्यापक है और हिंदी पत्रकारिता निरंतर बढ़ती जा रही है। आज हिंदी का पाठक वर्ग सबसे अधिक है और उसने अंग्रेजी समाचार पत्रों को भी पीछे छोड़ दिया है। इस प्रकार हिंदी पत्रकारिता निरंतर विकास की ओर अग्रेसर है, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने आकर प्रिंट मीडिया का भविष्य अनेक संभावनाओं से भर दिया है।

पत्रकारिता एक ऐसी विधा है जो कला विज्ञान उद्योग इतिहास अर्थव्यवस्था समाजव्यवस्था राजनीति जैसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्रों को प्रभावित करने की क्षमता रखती है। जिस कारण राष्ट्रीय जीवन में उसका महत्वपूर्ण स्थान बन चुका है।

संदर्भ

1. हिंदी के प्रयोजन मूलक भाषा रूप : डॉ. माधव सोनटक्के
2. मीडिया और हिंदी सं. मधु खराटे
3. मीडिया और समाज : जोगेन्द्रसिंह बिसेन
4. प्रिंट मीडिया लेखन : प्रो. रमेश जैन
5. आधुनिक पत्रकारिता : डॉ. अर्जुन तिवारी
6. हिंदी का वैश्विक परिदृश्य : डॉ. पंडित बन्ने

हिंदी विभाग अध्यक्षा
श्री आसारामजी भांडवलदार महाविद्यालय
देवगांव (रंगारी), ता. कन्नड, जि. औरंगाबाद.

समकालीन हिन्दी कविता

विविध विमर्श

स्त्री विमर्श
दलित विमर्श
आदिवासी विमर्श

सम्पादक
डॉ. अलका गडकरी-जाधव

Principal
Smt Asmamji Bhandwalder Arts, Commerce & Science
College Devgaon R. Tq. Kannad Dist. Aurangabad-431115

समकालीन हिंदी कविता : विविध विमर्श

सम्पादक
डॉ. अलका गडकरी

पराग प्रकाशन कानपुर

मूल्य : पाँच सौ रुपये मात्र

पुस्तक	:	समकालीन हिंदी कविता : विविध विमर्श
सम्पादक	:	डॉ. अलका गडकरी
प्रकाशक	:	**पराग प्रकाशन**
		311 सी, विश्व बैंक, बर्रा - कानपुर - 208 027
संस्करण	:	प्रथम, 2017
आवरण सज्जा	:	छपाई घर, ब्रह्मनगर, कानपुर
शब्द सज्जा	:	रिचा ग्राफिक्स, नौबस्ता, कानपुर।
मुद्रक	:	साक्षी ऑफसेट, यशोदा नगर, कानपुर
मूल्य	:	500/-
ISBN	:	978-93-82409-38-0

अनुक्रम

स्त्री विमर्श

1. पूनम तुषवाड की कविताओं मे बदलता स्त्री जीवन
   प्रा. डॉ. सुकुमार भंडारे — 17
2. समय से संघर्षरत कवयित्री : कात्यायनी
   प्रा. डॉ. गोविंद बुरसे — 25
3. सुशीला टाकभौरे के काव्य में नारी
   प्रा. डॉ. ए. जे. बेवले — 30
4. निर्मला पुतुल की कविता में स्त्री-विमर्श
   प्रा. डॉ. यशवंते एस. जे. — 37
5. अनामिका के काव्य में नारी विमर्श
   प्रा. डॉ. वसंत माळी — 43
6. सुनीता जैन के काव्य में स्त्री-विमर्श
   प्रा. डॉ. गिरीश काकी — 50
7. समकालीन कविता और नारी विमर्श
   प्रा. डॉ. ज्ञानेश्वर महाजन — 57
8. स्त्री कविता में व्यक्त स्त्री-विमर्श
   डॉ. दत्तात्रय फुके — 64
9. समकालीन हिंदी कविता में स्त्री-विमर्श
   प्रा. डॉ. सरला दवंडे — 69
10. कुमार अंबुज के कविता मे स्त्री-विमर्श
   प्रा. प्रशाद संदीप ईश्वर — 76
11. अनामिका के काव्य में व्यक्त स्त्री-जीवन
   प्रा. रीना सुरडकर — 82
12. समकालीन कविता में व्यक्त स्त्री-विमर्श
   प्रा. संगीता नारायण खंडागळे — 90

5

अनामिका के काव्य में नारी विमर्श

प्रा. डॉ. बसंत माळी

प्रस्तावना

समकालीन कविता की शुरुआत सातवें दशक से मानी जाती है। शिवकुमार मिश्र इस संबंध में लिखते हैं... "सातवें दशक के साहित्य में खास तौर से कविता में एक नई पहचान का संकेत मिलता है। अतएव सातवें दशक को समकालीनता का प्रारंभ बिंदु मान सकते हैं। सातवें दशक की पहचान का संबंध मोहभंग से है, जो सिर्फ कविता में ही नहीं, पूरे सामाजिक जीवन के टूटने से है। उन मनोकांक्षाओं के निरर्थक साबित हो जाने से है। जो साधारण जनता ने खास तौर से युवा पीढ़ी ने आजादी मिलने के साथ अपने मन में पाली थी। एक बेहतर राजनीतिक तंत्र बेहतर समाज व्यवस्था, सब को विकसित होने और आगे बढ़ने के समान अवसर।" [1]

"साहित्य के विश्व में एक साथ, एक समय में जीने और साहित्य सृजन करनेवालों को 'समकालीन' शब्द से संबोधित करते हैं।"

'समकालीन' शब्द के संबंध में प्रो. सुवास कुमार का कहना है कि, "जो समकालीन होता है उसके लिए तात्कालिक समय और समाज को समझना तथा उसकी मांग को पूरा करना बहुत जरूरी होता है। जो सही अर्थों में समकालीन है वह अपने सामाजिक जीवन यथार्थ को अच्छी तरह समझता है और उसे वाणी देता है।" [2]

"समकालीन हिंदी कविता में अनामिका एक महत्त्वपूर्ण कवयित्री के रूप में उभरी है। उन्होंने कहानी, उपन्यास कविता, निबंध आदि विधाओं में साहित्य सृजन किया है। अनामिका को बचपन से ही काव्य लेखन की प्रेरणा मिली थी। उनके व्यक्तित्व पर पिता का गहरा प्रभाव था। अपने बडे भाई की प्रेरणा से ही वे उच्च शिक्षा के लिए दिल्ली आई और यहीं दिल्ली विश्वविद्यालय के सत्यवती कॉलेज में अंग्रेजी की सीनियर रीडर के रूप में कार्यरत हो गई।

अनामिका एक कवयित्री, उपन्यासकार, निबंधकार के साथ-साथ अंग्रेजी की प्राध्यापक है। उसके साथ-साथ उन्होंने रेडियो टेलीविजन के और पत्र-

पत्रिकाओं में अपना योगदान दिया है। अनामिका को हिंदी साहित्य की सेवा के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। जिनमें प्रमुख है– राष्ट्रभाषा परिषद पुरस्कार, भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार, गिरिजाकुमार माथुर पुरस्कार, ऋतुराज पुरस्कार प्राप्त है। 'खुरदुरी हथेलियाँ' नामक काव्य पर सन् 2008 में आपको केदार सम्मान प्राप्त है।

अनामिका का काव्य संसार

अनामिका के नौ काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। जिनमें 'शीतल स्पर्श एक धूप को', 'गलत पते की चिट्ठी', 'समय के शहर', 'बीजाक्षर', 'अनुष्टुप', 'कविता में औरत', 'खुरदुरी हथेलियाँ', 'दूबधान', 'कवि ने कहा' आदि है।

अनामिका ने अपने काव्य में स्त्री का सशक्त चित्रण किया है। उनकी कविता स्त्री के किसी ना किसी रूप को चित्रित करती है। कवयित्री ने नौकरी करने वाली स्त्रियों की वेदना का सशक्त चित्रण किया है। बाजारवाद के इस दौर में स्त्री आटे के जैसी पिसती जा रही है। स्त्री को रोजगार के अवसर तो दिखाई देते हैं लेकिन क्या वह उसके लिए लाभदायक है। अनामिका ने मॉडलिंग के क्षेत्र में गई स्त्री की व्यथा, पीड़ा को व्यक्त किया है। वह अपने देह का इस्तेमाल नहीं करना चाहती लेकिन परिस्थिति से विवश होकर उसे वह कदम उठाने पड़ते हैं। इस संदर्भ में "घूंघट के पट खोल रे' कविता में स्त्री की व्यथा दिखाई देती है।

"सारी लड़ाई इसी की अगर है
कि बोले देह देह की बोली
टीवी दुट में बोल तो रही हूं
पर आपके सिर के ऊपर से गुजरी हूं
अन समझी बात की तरह
पीढ़ु की रफ्तार में।" (घूंघट के पट खोल रे पृ. 32)

अनामिका ने 'खुरदुरी हथेलियाँ' नामक काव्य में नारी मन की पीड़ा, तकलीफ, आक्रोश का यथार्थ वर्णन किया है। अनामिका ने अपनी कविता में स्त्री की अदम्य जिजीविषा एवं प्रबल इच्छा शक्ति का परिचय दिया है।

'कविता में औरत' अनामिका का चर्चित कविता संग्रह है। इसमें 'मौसम बदलने की आहट' नामक कविता में नारीवाद का स्वरूप एवं समाज में आज की स्त्री की क्या स्थिति है इसका बड़ा मार्मिक वर्णन है।

अनामिका ने अपनी कविताओं में नारी पर होनेवाले अत्याचार का, मार-पीट का सशक्त वर्णन किया है। स्त्री अपने विचारों का, भावनाओं का दमन करती है। शादी के बाद स्त्री को परिवार में एक उपयोगी वस्तु के रूप में रखा जाता है।

कवयित्री ने 'फर्नीचर' नामक कविता में घर में स्त्री का उनकी दशा अत्यंत मार्मिक वर्णन किया है।

> "रात को जब सब सो जाते हैं
> अपने इन बरफाते पाँवों पर
> आयोडिन मलती हुई सोचती हूँ मैं ....
> किसी जनम में मेरे प्रेमी रहे होंगे फर्नीचर
> कठुआ गये होंगे किसी शाप से ये ।"

(खुरदुरी हथेलियाँ पृ. 19)

अनामिका ने अपनी 'स्त्रियाँ' नामक कविता में स्त्री को केवल उपभोग की वस्तु मानने वाले पुरुषवादी समाज पर तीखा प्रहार किया है–

> "सुनाया गया हमको
> यों ही उड़ते मन से
> जैसे सुने जाते हैं फिल्मी गाने
> सस्ते कैसेटों पर
> ठसा ठस्स ठुँसी हुई बस में"

(खुरदुरी हथेलियाँ पृ. 13)

अनामिका की स्त्री संबंधी कविताएँ उसके अपने नारीत्व का बोध कराती हैं। भारतीय समाज में स्त्री के जो चेहरे हैं वे पश्चिमी देशों से अलग हैं। भारतीय स्त्री श्रम, शोषण, यातना तथा उपेक्षा की सदियों से शिकार रही है। समाज उसे त्याग, सहनशीलता की मूर्ति समझता रहा है। आधुनिक, शिक्षित, आर्थिक दृष्टि से मुक्त स्त्रियों की स्थिति भी समाज में पुरुष के समकक्ष नहीं बन पाई है। नारी अभी भी वास्तविक स्वतंत्रता को, समाज में अपने उचित स्थान को प्राप्त नहीं पाई है।

अनामिका ने अपनी कविताओं में समाज का घिनौना रूप, मनुष्य की कामवासना का चित्रण किया है। 'चौदह बरस की दो सेक्स वर्कर्स' नामक कविता में मनुष्य अपनी बेटी की आयु की लड़की को कामवासना की दृष्टि से देखता है। वह लड़की केवल चौदह बरस की है। खुद के पेट के लिए वह ऐसा काम करती है। उसको पता भी नहीं सेक्स क्या होता है–

> "अंकल तुम भारी बहोत हो,
> अच्छा चॉकलेट खिला दो ।
> अंकल तुम्हारी बेटी भी है ।
> अच्छा बोलो उसका नाम क्या है
> वह भी मेरे जैसी मजेदार है क्या

बोलो तो !''
(चौदह बरस की दो सेक्स वर्कर्स पृ. क. 39)

समकालीन कविताओं के क्षेत्र में अनामिका का नाम बहुत महत्वपूर्ण है। समकालीन कविता पूर्णतः किसी विशेष विचारधारा की कविता न होकर समग्र रूप से जीवन और समाज के बदलाव को प्रस्तुत करती है। कविता अनामिका की प्रिय विधा है। कविता के संबंध में वह कहती है, 'कविता का स्वभाव ही ऐसा है कि वह बहुत ज्यादा नहीं बोलती। बोलती है तो इशारों में कभी दास्तान लेकर बैठी तो कुछ चुनिन्दा क्षण और विवरणों का घरौंदा-सा सजा देती है। मानो मानकर चल रही हो की बीज तो ग्रहण कर ही लिया सुननेवाले ने अब अपने आँगन में बोकर खुद देखेगा कि पत्तियाँ कैसे चटकती है।''

अनामिका की कविताओं में स्त्री के विविध रूपों का वर्णन मिलता है। नारी के विभिन्न रूपों में माँ का रूप सबसे अधिक गौरवशाली होता है। पत्नी के रूप में उसके व्यक्तित्व का विकास अवश्य होता है किन्तु मातृत्व के बिना उसके जीवन में पूर्णता नही आती। संतान को जन्म देना, मातृत्व की पहचान है। वास्तव मे माँ संसार का सबसे अनमोल रत्न है। अनामिका के काव्य में मातृत्व की झलक दृष्टव्य है....

''दूध जब उतरता है पहले पहले बेटा
छातियों में माँ की
झुरझुरी जगती है पूरे बदन में !
उस दूध का स्वाद अच्छा नहीं होता,
उसको बुगलाकर भी जाए बच्चा
तो सात प्रकोपों में भी जी जाए बच्चा।''
(खुरदुरी हथेलियाँ पृ. 182)

अनामिका एक स्त्री होने के कारण स्त्री का मर्म अपने काव्य में प्रस्तुत करती है। एक माँ की संवेदना 'ऋषिका' नामक काव्य में है–

''माँ, भूख लगी है !
इस सनातन वाक्य में
एक स्प्रिंग है लगा,
कितनी भी हो आलसी माँ,
वह उठ बैठती है
और फिर कनस्तर खड़कते है।''
(दूबधान – पृ. 137)

अनामिका अपनी कविता के माध्यम से माँ का स्नेह, अपनापन का यथार्थ

वर्णन करती है। स्त्री को सुख जितना भी मिल जाए लेकिन उसमें मातृत्व तथा प्रेम की भावना को निकाला नहीं जा सकता।

अनामिका ने 'मौसियाँ' नामक कविता में 'माँ' की ममता का मन को स्पर्श करने वाला वर्णन किया है। प्रस्तुत कविता में कवयित्री कहती है कि माँ का प्रेम संसार में अनमोल रत्न के समान है। मौसी माँ का ही प्रति रूप है। पुत्री अपनी मौसी से अपने मन की बातें करती है। मौसी जो माँ के न होने पर माँ की जगह लेती है। मौसी उसे आगे आनेवाली त्रासदी से सतर्क रहने की सलाह देती है । प्रस्तुत कविता में बेटी की निजी संवेदना का मार्मिक वर्णन किया है–

''वे बारिश में धूप की तरह आती हैं
थोड़े समय के लिए और अचानक
हाथ के बने स्वेटर, इंद्रधनुष तिल के लड्डू
वे आती हैं झूला झुलाने
पहली मितली की खबर पाकर
और गर्भ सहलाकर।''

(खुरदुरी हथेलियाँ – अनामिका पृ. 21)

अनामिका ने 'समय के शहर में' नामक कविता में माँ की ममता का बहुत सुन्दर वर्णन किया है।

''माँ, तुम देवदार की पेटी हो,
दूध तुम्हारा किरण-किरण से यों झड़ता है।
किसलय के नन्हें अधरों पर बल पड़ता है।
पर अब जब मेरी यादों की कोख भरी है,
अनुभूति की असल गर्भ में एक फूल
धीरे-धीरे माँ।''

(समय के शहर में – पृ. 69)

अनामिका ने अपने काव्य में बेटी को पराया धन मानने वाला पर करारा प्रहार किया है समाज में लड़की को पराया धन माना जाता है। उसका शोषण किया जाता है। लड़की से अधिक महत्ता लड़कों को दिया जाता है। पढ़ाई, खेल, खाना सब बातों में लड़के आगे होते हैं– कवयित्री ने 'बेजगह' नामक कविता में ऐसे समाज का यथार्थ चित्रण किया है।

''राम पाठशाला जा।
राधा खाना पका।
राम आ बताशा खा।
राधा झाड़ू लगा।

भैया अब सोएगा
जाकर बिस्तर बिछा ।"

(खुरदुरी हथेलियाँ – पृ 15)

अनामिका के 'खुरदुरी हथेलियाँ' कविता संग्रह के संबंध में समीक्षक नैया कहते हैं, "'खुरदुरी हथेलियाँ' संग्रह की कविताएँ एक स्त्री की दृष्टि से देखी गई उत्तर आधुनिक समाज और समय की, विडंबनाओं का बयान करती हैं। कवयित्री अनामिका ने समाज और समय के प्रश्नों, संबंधों में आई रिक्तता की भूख, साधारण आदमी के दुःख-दर्द को और अपने हिस्से की धूप तलाशती स्त्री पीड़ा को इस कविता संग्रह में व्यक्त किया है। इन कविताओं में एक ओर जहाँ वे समय की कड़वाहटों को देखती है वहीं दूसरी ओर जीवन् की कोमलता को भी अनदेखा नहीं करती हैं। यह कोमलता चाहे उन्हें घर में काम करनेवाली महरी की खुरदुरी हथेलियों से क्यों न मिली हो।"[4]

स्त्री का शोषण हर युग में होता रहा है। किन्तु जब स्त्री इस शोषण का विरोध करती है, अपने अधिकारों की माँग करती है, तब उसका विद्रोह एक नया रूप लेकर आता है। कवयित्री ने अपनी कविता में एक नारी का ऐसा ही वर्णन किया है–

"एक दिन हमने कहा
हम भी इन्सान हैं –
हमें कायदे से पढ़ो एक-एक अक्षर
जैसा पढ़ा होगा बी. ए के बाद
नौकरी का पहला विज्ञापन"

(खुरदुरी हथेलियाँ – पृ. 13)

अनामिका के कविता के संबंध समीक्षक प्रो. अजय तिवारी लिखते हैं कि, "निजता और सामाजिकता के संबंधों को, अंतर्जगत और बहिर्जगत के द्वंद्व और तनाव को अभिव्यक्त करने के लिए अनामिका ने 'खुरदुरी हथेलियाँ' संग्रह को एक सुगठित तार्किक योजना में बाँधा है।"[5]

अनामिका के काव्य की भाषा :

अनामिका भाषा के संबंध में लिखती हैं– "कविता आंदोलन की भाषा बोलती है चेतना की भूमिका नाम मात्र होती है, तराश भर।" अनामिका ने अपनी कविताओं तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी शब्दों का सुन्दर प्रयोग किया है।

अनामिका ने अपनी कविताओं की भाषा में गुजरती हुई स्त्री के दुःख दर्दों को प्रस्तुत किया है। इनकी भाषा में स्पष्टता, सरलता का सुन्दर समन्वय दिखाई देता है। भाषा में एक-एक शब्द का चयन बड़ी कुशलता, कल्पकता के साथ किया

है। कुल मिलाकर हम कह सकते हैं भाषा पर अनामिका का पूरा अधिकार रहा है।

निष्कर्ष :

समकालीन कवयित्रियों में अनामिका का नाम एक संवेदनशील एवं सामाजिक यथार्थ के कवि के रूप में चर्चित है। उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से स्त्री मुक्ति के प्रश्नों, मानवी रिश्तों में आई रिक्तता आम आदमी का जीवन, नौकरी करनेवाली स्त्री का संघर्ष, विधवा स्त्री का चित्रण, स्त्री के सुख-दुःखों का, उसके हिस्से की धूप तलाशती स्त्री की पीड़ाओं को कविता के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

अंत में हम कह सकते हैं कि समकालीन कविता के क्षेत्र में अनामिका का योगदान बहुत महत्व रखता है। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से स्त्रियों में नई चेतना जागृत करने का कार्य किया है। अपने अधिकारों के प्रति जागृत करने का प्रयास किया है।

संदर्भ

1. कविता का यथार्थ– अरविन्दाक्षन – पृ. 63
2. वही, पृ. 99
3. समीक्षा – सुरेश पंडित 2013 – पृ. 54
4. प्रगतिशील वसुधा – अक्तूबर–दिसबर 2007 – पृ. 292
5. अनामिका की कविताओं का सम्बोध्य – डॉ. सुस्मित पी. वी. – पृ. 47

सहा. प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
श्री आसारामजी भांडवलदार महाविद्यालय
देवगांवरंगारी ता. कन्नड जि. औरंगाबाद
दूरभाष – 9860673712
ई. मेल – vmali813@gmail.com

समकालीन महिला लेखन एवं स्त्री-विमर्श

डॉ. वसंतकुमार गणपत माळी
डॉ. गजाला वसीम अब्दुल बशीर

Principal
Shri Asaramji Bhandwaldar Arts, Commerce & Science College Deogaon R. Tq. Kannad Dist. Aurangabad-431115

समकालीन महिला लेखन एवं स्त्री-विमर्श

संपादक

डॉ. वसंतकुमार गणपत माळी
डॉ. गजाला वसीम अब्दुल वशीर
श्री आसारामजी भांडवलदार महाविद्यालय
देवगाँव (रंगारी)
जिला औरंगाबाद–431115

पूजा पब्लिकेशन
कानपुर- 208 021

ISBN : 978-93-83171-18-7

पुस्तक : समकालीन महिला लेखन एवं स्त्री–विमर्श
संपादक : डॉ० वसंतकुमार गणपत माळी
डॉ० गज़ाला वसीम अब्दुल बशीर
© संपादकाधीन
प्रकाशक : पूजा पब्लिकेशन
6-B, बौद्धनगर, नौबस्ता
कानपुर– 208 021
मो० : 09415909291, 9839991140
E-mail : pujapublication0512@gmail.com
संस्करण : प्रथम, 2017
मूल्य : 650.00 रुपये मात्र
शब्दसज्जा : विष्णु ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक : श्रीपूजा प्रिण्टर्स
कानपुर

Samkaleen Mahila Lekhan Evam Stri-Vimarsh
By : Dr. Vasantkumar Mali, Dr. Gazala Wasim Abdul Bashir
Price : Rs. Six Hundred Fifty Only.

समर्पण

स्वर्गीय
श्री आसारामजी (दादा)
भांडवलदार
को
सादर...

॥ सा विद्या या विमुक्तये ॥

महाराष्ट्र शासन

सत्यमेव जयते

कार्यालय
श्री. आसारामजी भांडवलदार कला वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय देवगाव (र) ता. कन्नड जि. औरंगाबाद

दि बोदवड सार्व. को-ऑप. एज्यु. सोसायटी लि. बोदवड द्वारा संचालित

कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय बोदवड, जि.जलगाँव

हिंदी विभाग

एवं

महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई

तथा

सांस्कृतिक कार्य निदेशालय के सहयोग से आयोजित

राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी के अवसर पर प्रकाशित ग्रंथ

समकालीन हिंदी ग़ज़ल

- संपादक -

डॉ. कामिनी तिवारी

डॉ. मधुकर खराटे

Principal
Shri Asaramji Bhandwaldar Arts, Commerce & Science College Deogaon R. Tq. Kannad Dist. Aurangabad-431 1..

समकालीन हिंदी ग़ज़ल

- संपादक -

डॉ. कामिनी तिवारी डॉ. मधुकर खराटे

ISBN : 978-93-8478-49-0

रोली प्रकाशन
'सी' 449 गुजैनी, कानपुर - 208 022

E-mail : roliprakashan.kanpur@gmail.com
Website : www.roliprakashankanpur.com

ग्रंथ : समकालीन हिंदी ग़ज़ल

संपादक : डॉ. मधुकर खराटे
डॉ. कामिनी तिवारी

प्रकाशक : रोली प्रकाशन
सी–449, गुजैनी, कानपुर, – 22
मो. नं. : 09415133173

संस्करण : प्रथम, 20 अगस्त 2017

मुद्रक : आविष्कार ग्राफिक्स,जलगाँव

मूल्य : 500/-
ISBN : 978 - 93 - 84478 - 49 - 0

Samkalin Hindi Gazal
Edited by - Dr. Madhukar Kharate
Dr. Kamini Tiwari
Price : Five Hundred only

अनुक्रम

1. समकालीन हिंदी ग़ज़लों का परिदृश्य 13 - 17
ज़हीर कुरेशी
2. ग़ज़लकार नन्दलाल पाठक 18 - 25
डॉ. मधुकर खराटे
3. समकालीन हिंदी ग़ज़लों में साम्प्रदायिक सद्‌भावना के स्वर 26 - 31
डॉ. कामिनी भवानीशंकर तिवारी
4. आम आदमी के दुःख-दर्द, यातना और समस्याओं को अभिव्यक्त करती समकालीन हिंदी ग़ज़ल 32 - 36
डॉ. सुरेश तायडे
5. जीवन के विविध आयामों को स्पर्श करता ग़ज़लकार- जहीर कुरेशी 37 - 40
सुशील कुमार शैली
6. ज़हीर कुरेशी के गज़लों में अभिव्यक्त मानव जीवन के विविध आयाम 41 - 44
डॉ. प्रिया ए.
7. जहीर कुरेशी की गजलों में नारी वेदना की अभिव्यक्ति 45 - 49
अजित चुनिलाल चव्हाण
8. समकालीन हिंदी ग़ज़ल में प्रेम निरुपण 50 - 53
डॉ. जिजाबराव विश्वासराव पाटील
9. समकालीन हिंदी ग़ज़लों में आर्थिक चिंतन 54 - 59
डॉ. जगदीश चव्हाण
10. हिंदी गज़ल का नया दौर 60 - 62
डॉ. जयश्री गावित
11. समकालीन ग़ज़लों में चित्रित मनुष्य 63 - 65
डॉ. संजयकुमार शर्मा
12. ये शायरी जुबां है किसी बेजुबान की 66 - 68
बालाजी सुर्यवंशी
13. जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में पर्यावरण बोध 69 - 71
डॉ. भारती बी. बळवी
14. चन्द्रसेन विराट की ग़ज़लों में सामाजिक -राजनीतिक बोध का चित्रण 72 - 75
डॉ. अमोल रा. दंडवते
15. सामाजिक सरोकारिता को निबाहती राजन स्वामी की ग़ज़ल 76 - 80
डॉ. संजय सोपान रणखांबे
16. डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल की 'रोशनी बनकर जिओ' ग़ज़लों में अभिव्यक्त आशावादी स्वर 81 - 84
डॉ. पिरू रतू गवळी
17. जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में सामाजिक चिंतन 85 - 86
डॉ. अमृत खाडपे
18. समकालीन हिंदी गजलों में सामाजिक चेतना 87 - 90
डॉ.गौतम भाईदास कुवर

19. जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में नारी विमर्श 91 - 94
डॉ. कल्पना एल. पाटील
20. हिंदी ग़ज़लों में आम आदमी का जीवन 95 - 99
डॉ. लता गुजराथी
21. उर्दू के हिन्दी लहजे के शायर बशीर बद्र के गज़लों में **सामाजिकता** 100 - 103
डॉ. राजेश भामरे
22. मानवीय जीवन की संवेदनाओं के ग़ज़लकार - जहीर कुरेशी 104 - 106
डॉ. अशफ़ाक़ इब्राहिम सिकलगर
23. डॉ. गिरीराजशरण अग्रवाल : एक सजग-सशक्त गजलकार 107 - 110
डॉ. पंजाबी ममता नानकचंद
24. ग़ज़लकार जहीर कुरेशी की ग़ज़लों का कथ्य 111 - 114
डॉ. अशोक शामराव मराठे
25. सामाजिक व्यवस्था की परतों को खोलती ग़ज़लें 115 - 118
(डॉ. कुँअर बेचैन को ग़ज़लों के विशेष संदर्भ में)
डॉ. महेंद्र जयपालसिंह रघुवंशी
26. डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल की ग़ज़लों में महानगर और
शहरीकरण की बिसंगतियों का चित्रण 119 - 122
के. डी. वागुल
27. समकालीन ग़ज़लों में सामाजिक भावबोध 123 - 126
डॉ. देवकीनंदन महाजन
28. सामाजिक भावबोध से सरोबार जहीर कुरेशी की ग़ज़लें 127 - 130
डॉ. कान्ता एम. भाला राठी
29. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी ग़ज़लों में सामाजिकता के संदर्भ 131 - 136
डॉ. शशिकांत सोनवणे `सावन`
30. हिंदी गज़ल और दुष्यंत कुमार 137 - 139
डॉ. एस. आर. सांगोळे
31. कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में आम आदमी की संवेदना 140 - 142
डॉ. वसंत माळी
32. चंद्रसेन विराट की ग़ज़लों में समसामयिक बोध 143 - 146
डॉ. विजयप्रकाश ओमप्रकाश शर्मा
33. समकालीन हिंदी ग़ज़लों में सांप्रदायिकता 147- 149
डॉ. सुनिता नारायण कावळे
34. ज्ञानप्रकाश विवेक की ग़ज़लों का आर्थिक परिदृश्य 150 - 154
डॉ. मनोज नामदेव पाटील
35. समकालीन हिंदी ग़ज़लों में आम आदमी 155 - 160
डॉ. प्रीति सुरेंद्रकुमार सोनी
36. समाज सापेक्ष चिन्ता में शब्दों की चेतना : अदम गोंडवी 161 - 165
डॉ. पूनम त्रिवेदी

31. कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में आम आदमी की संवेदना

डॉ. बसंत माळी
श्री. आसारामजी भांडवलदार महाविद्यालय, देवगांव रंगारी,
तहसिल - कन्नड, जि. औरंगाबाद.

हिंदी काव्य में ग़ज़ल बहुत लोकप्रिय विधा रही है। ग़ज़ल का इतिहास प्राचीन है। आदिकाल के कवि अमीर खुसरों से यह परंपरा शुरू है। ग़ज़ल के विकास में अनेक ग़ज़लकारों का बड़ा योगदान रहा है। इसमें दुष्यंतकुमार, शमशेर, त्रिलोचन, चंद्रसेन 'विराट', डॉ. कुँअर बेचैन, गोपालदास सक्सेना 'नीरज', रामावतार त्यागी, जहीर कुरेशी आदि प्रमुख ग़ज़लकारों ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से समाज प्राय: सभी समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है।

हिंदी की ग़ज़ल परंपरा में दुष्यंतकुमार के बाद ग़ज़ल को समृद्ध बनाने का काम ग़ज़लकार कुँअर बेचैन ने किया। कुँअर बेचैन ग़ज़ल लिखनेवालों में ताजे और सजग रचनाकारों में से है। उन्होंने आधुनिक ग़ज़ल को समकालीन जामा पहनाते हुए आम आदमी के दैनिक जीवन से जोड़ा है। यही कारण है कि वे नीरज के बाद मंच पर सराहे जानेवाले कवियों में अग्रगण्य है। उन्होंने गीतों में भी इसी परंपरा को कायम रखा है। वे न केवल पढ़े और सुने जाते है वरन कैसेटों की दुनिया में भी खूब लोकप्रिय है।

कुँअर बेचैन का जन्म 1942 को उमरी नामक ग्राम, उत्तरप्रदेश में हुआ। इनका मूल नाम कुँअर बहादुर सक्सेना है। आपका बेचैन उपनाम है। इनके अब तक ग्यारह ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित हो चुके है। इनमें 'शामियाने कॉंच में', 'महावर इन्तजारों का', 'रस्सियाँ पानी की', 'पत्थर की बाँसुरी', 'दीवारों पर दस्तक', 'नाव बनता हुआ कागज', 'आग पर कंदील', 'आँधियों में पेड़', 'आठ सुरों की बाँसुरी', 'आँगन की अलगनी', 'तो सुबह हो' आदि है।

कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में दर्द के वैयक्तिक एवं सामाजिक दोनों स्वरूपों का सशक्त चित्रण है। इनकी ग़ज़लों में आधुनिक समाज में व्याप्त असमानता, अपराध, शोषण, कुंठा एवं संत्रास से ग्रस्त आम आदमी की पीड़ा दिखाई देती है। कुँअर बेचैन ने अपने 'शामियाने काँच के', नामक ग़ज़ल संग्रह में आम आदमी की त्रासदी का यथार्थ चित्रण किया है। रोटी मनुष्य के जीवन में कितनी महत्वपूर्ण होती है। पेट की आग किस तरह से होती है। रोटी के लिए उसे कितना संघर्ष करना पड़ता है। कुँअर बेचैन लिखते है....

"जहाँ इंसान की औकात से दौलत बड़ी होगी।
महल तनकर खडे होंगे, झुकी हर झोंपडी होगी।
जरा सोचो कि मुँह तक रोटियाँ क्यों नहीं आ पाई।
तुम्हारी ही कलाई में कहीं कुछ गड़बड़ी होगी।
समय की अंतड़ी से खून टपकेगा नदी बनकर।
नुकीली भूख जिस दिन कमान तनकर खड़ी होगी।"[1]

कुँअर बेचैन ने अपनी ग़ज़लों में रोटी, कपड़ा और मकान। मनुष्य के जीवन की तीन प्राथमिक आवश्यकताओं का सजीव वर्णन किया है। सूर्य के निकलते रहने एवं नदी के बहते रहने के समान भूख भी एक शाश्वत सत्य है। जीवन की जिजीविषा पेट के प्रसंग से जुड़ी हुई है। भूख से बिलबिलाते हुए मनुष्य को क्या चाहिए? रोटी। रोटी के चक्कर में मनुष्य अहर्निशा व्यस्त रहता है।"[2] कवि कहते है....

"यह हमको नचाता है इशारों पे रात-दिन
यारो हमारा पेट मदारी की तरह है।"[3]

कुँअर बेचैन अपनी ग़ज़लों में भूखे लोगों की संवेदना को रेखांकित करते है। वे लिखते है कि आप लोग मेरी बात का बुरा मत मानना कि भूख तो भूख होती है। भूख में पीड़ा और वेदना होती है। भूख पर जुल्फों के सुगन्ध का असर नहीं होता।

"आप मेरी बात का देखो बुरा मत मानना
भूख में होता नहीं है, जुल्फ के खमका असर।"[4]

मनुष्य संसार में सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। वह अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकता है। वह अमीर हो, या गरीब उसे भूख लगती है। परंतु आज सबकी किस्मत में रोटी नहीं है। कुँअर बेचैन इस संदर्भ में लिखते है कि, "इस संसार में कई प्रकार की खुशबु है। मगर तमाम खुशबुओं में भूखे को सिकती हुई रोटी की खुशबु हजारों खुशबुओं में सर्वश्रेष्ठ है।" कुँअर बेचैन जीवन में रोटी की महत्ता को प्रतिपादित करना चाहते है।

"हजारों खुशबुएँ दुनिया में है, पर उससे कमतर है,
जो भूखे को मिली सिकती हुई रोटी से आती है।"[5]

कुँवर बेचैन ने लिखा है, मुहब्बत में बहाए जानेवाले आँसू और हृदय विदारक आहों को कथ्य बनाने के बजाय पेट की उस आग को कथ्य बनाया गया है जो वर्तमान अर्थव्यवस्था में रोटी के लिए जूझते हुए सही इन्सान को सिर से लेकर पैर तक जलाती जा रही है। उस समय जिस व्यवस्था के शामियाने तने है उनमें यह सामर्थ्य नहीं की गर्मी और लू में झुलसते हुए इन्सान को आग हुई प्रखर सूर्य किरणों से बचा सके। यह तो शीशे के ऐसे शामियाने है जिनसे होकर आनेवाली सूर्य-किरणें और भी अधिक तेज होकर निकलती है और भी जलाती है। शामियाने हारे-थके आदमी की शरण है। मगर शरण ही जब छल करने लगे तो किससे कहा जाए।"[6]

डॉ. मधु खराटे भी आम आदमी के संबंध में लिखते है, "आम आदमी की जिन्दगी से सम्बद्ध अनेक सामाजिक बिंब-प्रतिबिंब हिंदी गजलों में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते है। वर्तमान युग में आम आदमी अनेकानेक यातनाओं एवं मुसीबतों से गुजर रहा है। उसकी तकलीफों एवं पीडाओं को हिंदी गजलकारों ने अपनी गजलों के माध्यम से मार्मिक अभिव्यक्ति प्रदान की है। वह किन स्थितियों से गुजर रहा है। वह किन बातों से परेशान है। वह अभाव और गरीबी से किस तरह परेशान है उसका विविध स्तर पर किस तरह शोषण किया जा रहा है, व्यवस्था के प्रति वह किस तरह नाराज है आदि तमाम बातों का चित्रण हिंदी गजलों में परिलक्षित होता है।"[7]

ज़हीर कुरैशी ने आम आदमी की पीडा का सशक्त वर्णन किया है। आम आदमी अपने जीवन में अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है। आम आदमी के लिए देश में कई योजनाएँ बनती है। किन्तु इन सभी योजनाओं से आम आदमी कोसों दूर है। देश की समस्त व्यवस्था भ्रष्ट हो चुकी है। आम आदमी का हर जगह आर्थिक शोषण हो रहा है। कभी-कभी आम आदमी आर्थिक सहायता की प्रतीक्षा में अपना दम तोड देता है।

"उसे मरने से पहले थी जरूरत,
मरण के बाद, लाखों दान आया।"

आम आदमी का जीवन अश्रुमय होता है। सभी प्रकार के अभावों से संघर्ष करता हुआ वह हताश-निराश भी हो जाता है। आर्थिक-सामाजिक शोषण को सहते हुए उसका मन इतना टूट जाता है कि आँखों में आँसू छा जाते है। किन्तु वह उनको गिरने नहीं देता बल्कि ओठों पर मुस्कान बिखेरता है।

"आँसूओं की धार को बंदी बना लेते है लोग।
ये करिश्मा है कि फिर भी मुस्कुरा लेते है लोग"[8]

कुँवर बेचैन ने आम आदमी की पीडा को भी अपनी गजल का कथ्य बनाया है। आज वर्तमान व्यवस्था में वह आदमी रोटी के लिए संघर्ष कर रहा है। उसे भूख की आग सिर से लेकर पैर तक जलाती जा रही है। आज इस समय व्यवस्था के जो शामियाने तने है उसमें ये सामर्थ्य नहीं है कि गर्मी और लू में झुलसते हुए आदमी को आग बरसाती हुई प्रखर सूर्य किरणों से बचा सके। ये शामियाने काँच के है जिसमें आनेवाली किरणे और अधिक तेज होकर निकलती है और जलाती है। आम आदमी जिसकी शरण में जाता है किन्तु शरण ही जब छलने लगे तो किससे कहा जाए।"[9] कवि कुँवर बेचैन के शब्दों में....

"साधकर फूलों-से चेहरों पर निशाने काँच के
बो गए अनगिन खरोंचें दोस्ताने काँच के
यह भरम होकर कि यूँ जुड जाएँगी यादें तेरी
जोडते रहते है हम टुकडे पुराने काँच के।"[10]

कुँअर बेचैन आम आदमी की स्वार्थ की भावना को उजागर करते है। कवि कहते है कि आदमी अपने स्वार्थ के लिए विषैला बन गया है। वह केंचुल के समान है। स्वार्थी लोगों का स्वार्थ उजागर होनेपर वे उसे साँप की केंचुल की तरह त्याग देते है।

"हो न हो वो आदमी की शक्ल में एक साँप था,
वर्ना मुझको छोड क्यों जाता वो केंचुल की तरह।"[11]

कुँअर बेचैन की ग़ज़ले सामाजिक संवेदना के अंतर्गत आम आदमी के साथ विशेष रूप से जुडी है। उन्होंने समाज की प्राय: सभी समस्याओं को प्रस्तुत किया है। कवि कहते है कि आम आदमी के दमन का सिलसिला हमेशा जारी रहता है। कवि अपनी ग़ज़लों में कहते है-

"अब आग के लिबास को ज्यादा न दाबिए
सुलगी हुई कपास को ज्यादा न दाबिए
मुमकिन है खून आपके दामन पे जा लगे
जख्मों के और पास को ज्यादा न दाबिए
पीने लगे न खून भी आँसू के साथ-साथ
यों आदमी की प्यास को ज्यादा न दाबिए।"[12]

निष्कर्ष :

कुँअर बेचैन की ग़ज़लों का अध्ययन करने के बाद निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि, बेचैन की ग़ज़लों में आम आदमी की पीडा, संवेदना प्रखर रूप में विद्यमान है। बेचैन की ग़ज़ले संवेदना एवं शिल्प की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। हिंदी संसार ग़ज़ल के विकास में योगदान देने के कारण कुँअर बेचैन को हमेशा स्मरण करेगा।

संदर्भ :

1. शामियाने काँच के, कुँअर बेचैन, पृ. 4
2. कुँअर बेचैन की ग़ज़लें : संवेदना एवं शिल्प, डॉ. अभय खैरनार, पृ. 86
3. शामियाने काँच के, कुँअर बेचैन, पृ. 81
4. नाव बनता हुआ कागज, कुँअर बेचैन, पृ. 33
5. तो सुबह हो, कुँअर बेचैन, पृ. 88
6. शामियाने काँच के, कुँअर बेचैन, भूमिका से पृ. 6-7
7. दुष्यंतोत्तर हिंदी ग़ज़ल, डॉ. मधु खराटे, पृ. 12-13
8. दुष्यंतोत्तर हिंदी ग़ज़ल, डॉ. मधु खराटे, पृ. 13
9. कुँअर बेचैन की ग़ज़लें : संवेदना एवं शिल्प, डॉ. अभय खैरनार, पृ. 88
10. शामियाने काँच के, कुँअर बेचैन, पृ. 49
11. महावर इन्तज़ारों का, कुँअर बेचैन, पृ. 94
12. शामियाने काँच के, कुँअर बेचैन, पृ. 100

3-2-2

July-2016

3.2.2

Challenges on Rural Development in India

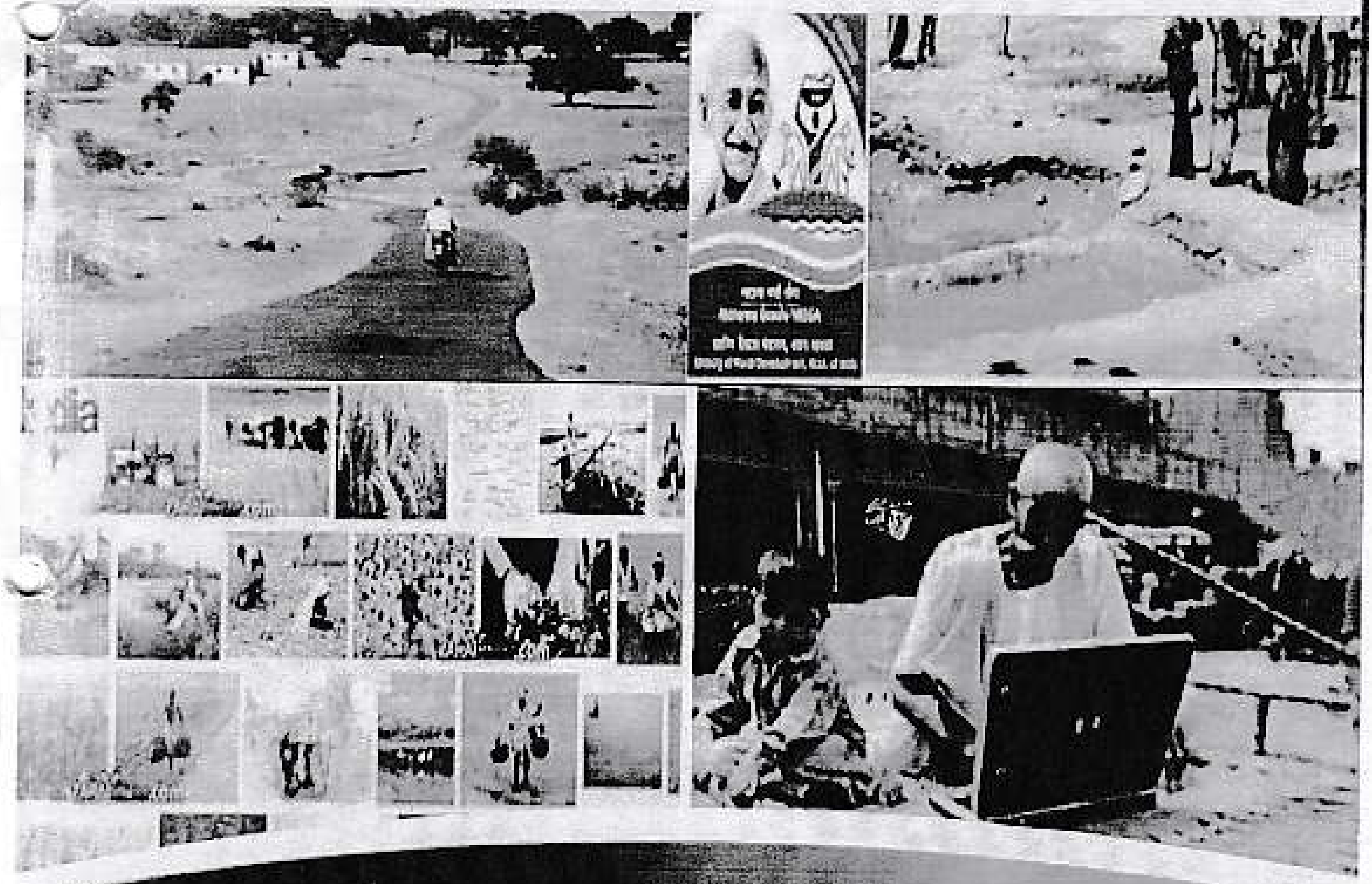

ISBN : 978-93-5158-576-3

INDEX

Sr. No.	Topic of Research Paper	Page No.
1	Integrated and Holistic Approach- away to Sustainable Rural Development in India *Dr. V.B. Khandare ,Mr. Balasahe bAsaram Sarate*	1
2	Sustainable Rural Development *Dr. Adik B. R.*	9
3	Challenges of Water Management in India *Dr. R. G. Rasal,*	14
4	Rural Development and Indian Poverty *Dr. Rajendra Y. Shinde*	20
5	Ill Health: An Important Challenge before Rural Development in India *Mr. Madhav Shinde*	28
6	GANDHIAN APPROACH TO RURAL DEVELOPMENT *Prof. Kolhe R.G.*	35
7	Importance of Literacy in Implementing Rural Development Programs *Prof.Dr. Kailas N. Bavale ,Mrs. Vijeta Vinod Chaudhary*	38
8	Sustainable Rural Development Through Entrepreneurship by Floriculture. *Savita R Gonte*	42
9	Sustainable Rural Development: Challenges and Opportunities *Gopal Dhavade*	47
10	Role of Panchayati Raj in Sustainable Rural Development *Prof. Sadiq Bagwan*	51
11	Study of Rural Credit System and its impact on rural indebtedness *Dr. K K Pant, Dr. B N Harisha, Dr. Jagtap B S*	52

44	ग्रामीण विकासात कृषी क्षेत्राची भूमिका *डॉ.विश्वास र. कदम*	233
45	दारिद्र्य निर्मुलन व ग्रामीण रोजगार हमी योजना एक सिंहावलोकन *प्रा. डॉ. मदन मार्कंडे — प्रा. डॉ. अशोक कोरडे*	243
46	ग्रामीण विकासामध्ये महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार हमी योजनेची (मनरेगा) भूमिका *निलेश विष्णू कोळक डॉ.संभाजी भाऊराव काळे*	251
47	आर्थिक सुधारणांच्या कालखंडातील महाराष्ट्रातील जिरायती शेतीच्या परिवर्तनाचा सहसंबंधात्मक अभ्यास : विशेष संदर्भ . जिल्हा अहमदनगर *प्रा. डी. एस. तबुले*	257
48	जलव्यवस्थापनाचे आव्हान व पुढाकार *डॉ. ज्ञानदेव शिंदे*	265
49	ग्रामीण शेतमजूर स्त्रीयांचे आर्थिक सबलीकरण आणि मनरेगाचे फलश्रुती*प्रा. जी. के. सानप, डॉ. आर.जी. रसाळ*	270
50	सक्षम ग्रामविकास पाया – नेवासा पॅटर्न जलसंधारण उपक्रम –2013 एक अभ्यास . *डॉ.फलके पी.एच*	276
51	भारतातील शेती क्षेत्रापुढील आव्हान *प्रा.डॉ. शिवाजी पाते, प्रा.डॉ. विकास सावंत*	281
52	केंद्र व राज्य शासनाच्या कृषी योजनांची अंमलबजावणी व्यष्टी अध्ययन निमगाव केतकी *ता. इंदापूर जि. पुणे. प्रा.डॉ. गजानन कदम*	286
53	अहमदनगर जिल्हातील ग्रामीण विकासात पायरेन्स संस्थेची भूमिका *अनुराधा रघुनाथ बोरे, प्रा. गवांडे जी.बी.*	291
54	फुलशेती: नाशिक जिल्हातील ग्रामीण विकासाला वरदान *डॉ. आर.के. दातीर, काकडे मनिषा*	298

ISBN No. 978-93-5158-576-3

Integrated and Holistic Approach- away to Sustainable Rural Development in India

Dr. V.B. Khandare
Guide and Associate Professor & Head
Department of Economics
Smt. A.B. College, Deogaon (R)
Dist – Aurangabad (Maharashtra)

Balasaheb Asaram Sarate
Ph.D. Student in Economics
Dr. BA M.U. Aurangabad

Introduction

Mahatma Gandhi has given the very appropriate model of sustainable rural development in India. However, since independence the suitable policy framework is not established to implement this model. The economists and economic institutions also not insisted for the same. Consequently, the rural development could not become a reality in India. Therefore, considering the contemporary difficulties and reluctance, India needs to establish an Integrated and Holistic Approach for sustainable rural development. This is a model of the holistic thinking originated from socio-cultural knowledge base of India. It advocates the theory of Interdependent and correlated coexistence of Indian society as a whole with the natural discipline of ecology and environment.

Objectives

1. To understand the concept and necessity of Rural Development in India.
2. To study the concept and aspects of "Sustainable Rural Development."
3. To describe theGandhianApproach of rural development.
4. To explore the relevance and correlation between Gadhian Approachand Sustainable Rural Development.
5. To put forth the theory of Integrated & Holistic Approach for Sustainable Rural Development .in India.

Definition of the Terms

INTEGRATED :Unifying, correlating and coordinating coexistence of human life with other animals, beasts, birds, living species, trees, forests and the ecological environment as one unit.

HOLISTIC : Inclusive of all the factors and elements within the territory. It is the principle of extending the relationship to the whole sphere of the universe.

Methodology

ISBN No: 978-93-5158-576-3

This researchis mainly based on secondary sources of data. It is originated from the personal experience and observations of the researcher. In addition, the required data is sought from the news papers, periodicals, research papers, authentic reports, and books which are published by various authors.

Scope and Limitations

This research is limited to the study of rural development and Sustainable rural development in India. As it is based on the secondary data, the limitations of the truth and objectivity of original sources may prevail in this research also.

Definition of Rural Development

The essence of rural development is not in providing but in promoting the rural sector. The rural population should know how to sustain itself financially and gain economic independence. Therefore, stress of rural development should be on self reliance. Rural sector suffers from inadequate infrastructural facilities and technological advancements. The rural area also lacks for safe drinking water, primary health and road transport. The rural population suffers from indigence, ignorance and illiteracy. There traditional outlook towards development has been preventing them from taking full advantage of the incentives offered by the Government." (Satyasundaram, 2009, p. 3).The term of rural development includes changing attitude of rural people towards development, promotion of leadership at grass root level, providing for the basic needs, development of both the farming and non-farming activities, improving infrastructural facilities in rural area, ensuring a tension free and encouraging social life etc. (Satyasandaram, 2009, p. 5).

Katar Singh (2014) has defined the rural development as " the overall development of rural areas with a view to improve the quality of life rural people. It is a comprehensive and multidimensional concept and encompasses the development of agriculture and allied activities; village and cottage industries; crafts; socio-economic infrastructure; community services & facilities and above all the human resource in rural areas. Rural development can be conceptualized as a process, a phenomenon, a strategy and a discipline. As a process it implies the engagement of individuals, communities and nations in pursuit of their pre-decided goals over a period of time. As a phenomenon it is the end result of interactions between various physical, technological, economic, socio-cultural and economic factors. As a strategy it is designed to improve the economic and social well-being of a certain group of people in the rural sector. As a discipline it is multidisciplinary in nature representing an

ISBN No: 978-93-5158-576-3

intersection of agricultural, ocial, behavioural, engineering and management sciences." (Katar Singh, 2014, p.3)The present Rural Development policy is based on the compartmentalized thinking and there is no coordination among the institutions which are meant for the implementation of the policy. The true picture of the present rural development is shown as under.

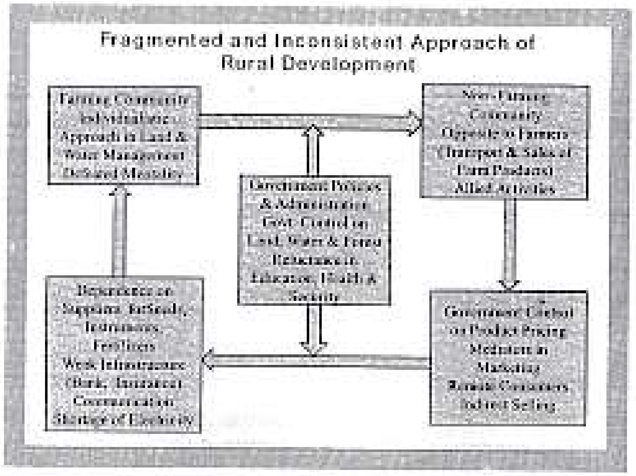

Figure – 1 : Nature of Present Policy of Rural Development

Consequences of the Present Policy

1. Neglect of agriculture as the prime moving force of the economy and concentration on the industries and services sector.
2. Indiscriminate consumption of the natural resources without making any provisions for their regeneration.
3. All the institutions which are established for rural development are operating with their individualistic and separate role which lost the collective effect.
4. Clash of interests among various groups and public institutions all over the country. The political representatives, administration, educational institutions, opinion makers, media etc. are working with their styles and attitudes. No one cares about the others.
5. There is clear split between rural and urban areas. The situation is of rural versus urban instead of rural and urban. The academicians and public leaders usually quote that the real Bharat is different than the India in the cities.

ISBN No: 978-93-5158-576-3

6. All the economic policies are dominated by the interests of industries and serviceswhich are all settled in the urban areas of the country.

7. The nation is severely facing the situation of social unrest, unemployment, poverty and inequalityas the present model of rural development itself is meant for providing any solutions to these problems.

Sustainable Rural Development

According to the World Commission on Environment and Development (WCED, 1987), " Sustainable development meets the needs of the present generation without compromising the ability of future generations to meet their own needs." This definition underscores the need for society to ensure inter-generational equity, in the sense, that the present generation does not consume so much as to foreclose the option of the future generations to enjoy at least the present level of consumption and well-being. (Katar Singh, 2014, p.2)This concept of sustainable development is also applicable for the development of rural i.e. agricultural as well non-agricultural sector. Thus, sustainable rural development is " a process leading to sustainable use of all natural and manmade resources and sustainable improvement in the quality of life of rural people with protection of all other living animals, birds, beasts, creatures, bacteria as well as the preservation of Land, trees, plants, forests, water, minerals etc." The sustainable development does not prevent from the utilization of the natural resources; but it necessitates and insists the need based and optimum use of them with some systemic arrangements of regeneration of such resources wherever it is possible.

Gandhian Model of Rural Development

Mahatma Gandhi was the true advocate of the sustainable rural development. His model was evolved through Indian school of thought and style of living. He wrote in Harijan (4 April 1936), " India is to be found not in its few cities but in its 7,00,000 villages. But we town dwellers have believed that India is to be found in its towns and the villages were created to minister to our needs."(Katar Singh, 2014, p.5). He further wrote (Harijan, 29 August 1936), " I would say if the villages perishes India would perish too. It will be no more India. Her own mission in the world will get lost... Rural development is, therefore, an absolute and urgent necessity in India now and will continue to be so in future. It is *sine qua non* of development of India."Again he added (0) as "We have to make a choice between India of the villages that are ancient as itself and India of the cities which are a creation of foreign domination. Today the

ISBN No: 978-93-5158-576-3

cities dominate and drain the villages so that they are crumbling to ruin."(Vyas, 1996, p.30).

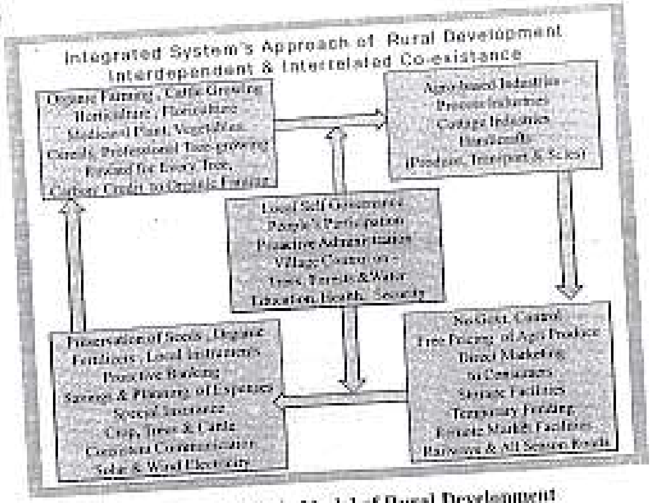

Figure – 2 : Integrated and Holistic Model of Rural Development

Characteristics of the Integrated and Holistic Approach

1. This approach is based on the thinking and conviction of interdependent, coordinated and correlated co-existence of all human beings, animals, birds, beasts, creatures, trees, plants, species, forests, water, minerals etc. These all factors and entities are the inevitable part of the same universe. Their existence is also equally essential for the sustainable survival and fulfilled life of human beings.
2. Agriculture is the real culture of India. Therefore, the progress, policies and development should happen around the agriculture which includes natural resource, forests, water, fisheries, animal husbandry, horticulture, floriculture, sericulture, medicinal plants. Thus, the agriculture and its allied activities are important for producing foods, raw materials and generation of natural resources as well as for preventing climate change and global warming.
3. Satisfaction of all the basic needs like food, drinking water, clothing, residence, sanitary arrangements, education, health, security etc.

4. Encouragement for acquiring knowledge, learning new skills, creating new knowledge, arts, research and so on for the advancement of the society, nation and mankind.
5. Women empowerment and equal and justifiable roles to the competent women for their progress and protection.
6. Rural and urban are just the names of geographical territories. They are not actually two separate entities or units of the nations or society. These terms are based on some bias theories and principles of discrimination. In fact this rural and urban split of society is consequence of the conventional model and policy of growth and development.The both geographical are not permanently separated from each other. Today's rural part may become urban tomorrow. Therefore, the principle of interdependent and correlated coexistence should be adapted for the happiness and fulfillment of the human life itself.

Respect to the physical labour with suitable and productive employment to all hands.

1. Essential and required education to all with compromising with the quality.
2. Skills development and remunerative opportunities to apply the skills.
3. Establishment of a sustainable and egalitarian societywith equitable distribution of the available assets and productive resources.There should be freedom from exploitation and the guarantee of equality of status and dignity with equal opportunities and justifiable progress.

In the words of Mahatma Gandhi (Harijan, 26 July 1942), " VillageSwaraj is a complete republic, independent of its neighbours for its own vital wants, and yet interdependent for many others in which dependence is necessity. Thus everyvillage's firs concern will be to grow its own food crops and cotton for its cloth. It should have a reserve for its cattle, recreation and play ground for adults and children. Then if there is more land available, it will grow useful money crops, thus excluding Ganja, tobacco, opium, and the like. The village will maintain a village theater, school and public hall. It will have its own waterworks ensuring clean water supply. Education will be compulsory up to the final basic course. As far as possible every activity will be conducted on cooperative basis. There will be no castes such as we have today with their-graded untouchability. The Government of the village will be conducted by the Panchayat of five persons annually selected by the adult villagers, male and female, possessing minimum prescribed qualifications." (Vyas, 1996, p.31, 32).In the concept of Village Swaraj Mahatma Gandhi included the principles like supremacy of man

over machine, full employment, compulsory body labour for all, equality, Trusteeship, decentralization, swadeshi, self-sufficiency, cooperation, satyagraha, panchatraj, nattalim etc. The approach and thinking of Mahatma Gandhi was holistic, integrated and sustainable.

Conclusions

1. The present model of rural development is failed to achieve its objectives as it is not based on the Integrated and Holistic Approach.
2. Mahatma Gandhi has already described the importance of villages, rural development. He also presented the suitable model of rural development. However, the policy makers and the administrative authorities showed a very serious reluctance to the Gandhian model.
3. Rural development is not the activity or process of economic development. It is the transformation of the thinking, faiths, beliefs, traditions, customs, and styles of living and social relationships of the people at large.
4. This type of transformation is possible only through an Integrated and holistic system over a long period. This system should be based on the socio-cultural knowledge base, it should respect the faiths, beliefs, customs, traditions of the people and it should be all inclusive.
5. The process should follow the principle of "people's plan for people's good" in order to enhance people's participation. The system has to be adopted, as the own system, by the common people to get the results.

Recommendations

India has to follow the Indian model of development. The socio-cultural genius of India is originally based on Integration and Inclusiveness. Any foreign model or fragmented approach would not be suitable and successful in India. Therefore, the Government, political representatives, opinion makers and administrative machinery should recognize the relevance of Integrated and Holistic Approach for sustainable rural development in India.

References :-

1. Gandhi M.K. (Compiled by H.M.Vyas 1996), Village swaraj, Navajivan Publishing House, Ahmedabad (India).
2. Gandhi M.K. (2009), Hind Swaraj or Indian Home Rule, Gandhi HindusthaniSahityaSabha, [illegible] Delhi.

3. Katar Singh (2014), Rural Development – Principles, Policies and Management, Sage Publications India Pvt. Ltd., New Delhi.
4. SatyaSundaram (2009), Rural Development, Himalaya Publishing House Pvt. Ltd., Mumbai.
5. MondalSagar, Ray G.L. (2011), Entrepreneurship and Rural Development, Kalyani Publishers, Ludhiana (India).
6. Towards Faster and more Inclusive Growth, An Approach to the 11th Five Year Plan 2007 – 2012 (December 2006), Planning Commission, Government of India, New Delhi.
7. Faster, Sustainable and More Inclusive Growth - An Approach to the 12th Five Year Plan - 2012-17, (October 2011), Planning Commission, Government of India,New Delhi.

****

Sustainable Rural Development

Dr. Adik B. R.
Associate Professor
C. D. Jain College of Commerce,
Shrirampur

Introduction:

Economic development, which aimed at increasing the production of goods and services to meet the needs of a rising population, puts greater pressure on the environment. In the initial stages of development, the demand for environmental resources was less than supply. Now the world is faced with increased demand for environmental resources but their supply is limited due to overuse and misuse. Sustainable development aims at promoting the kind of development that minimizes environmental problems and meets the needs of the present generation without compromising the ability of the future generation to meet their own needs.

Sustainable Development:

Sustainable Development is the development that will allow all future generations to have a potential average quality of life that is at least as high as that which is being enjoyed by the current generation. The concept of sustainable development was emphasized by the United Nations Conference on Environment and Development (UNCED), which defined it as: 'Development that meets the need of the present generation without compromising the ability of the future generation to meet their own needs.'

It contains within it two key concepts:

- The concept of 'needs', in particular the essential needs of the world's poor, to which overriding priority should be given; and
- The idea of limitations imposed by the state of technology and social organization on the environment's ability to meet present and future needs.

To achieve sustainable development, the following needs to be done

1. Limiting the human population to a level within the carrying capacity of the environment. The carrying capacity of the environment is like a 'plimsoll line' of the ship which is its load limit mark. In the absence of the plimsoll line for the economy, human scale grows beyond the carrying capacity of the earth and deviates from sustainable development

2. Technological progress should be input efficient and not input consuming

मध्ययुगीन इतिहास चिकित्सा

डॉ. विनोद बोरसे
डॉ.शेख एजाज
प्रदीप श. म्हैसेकर

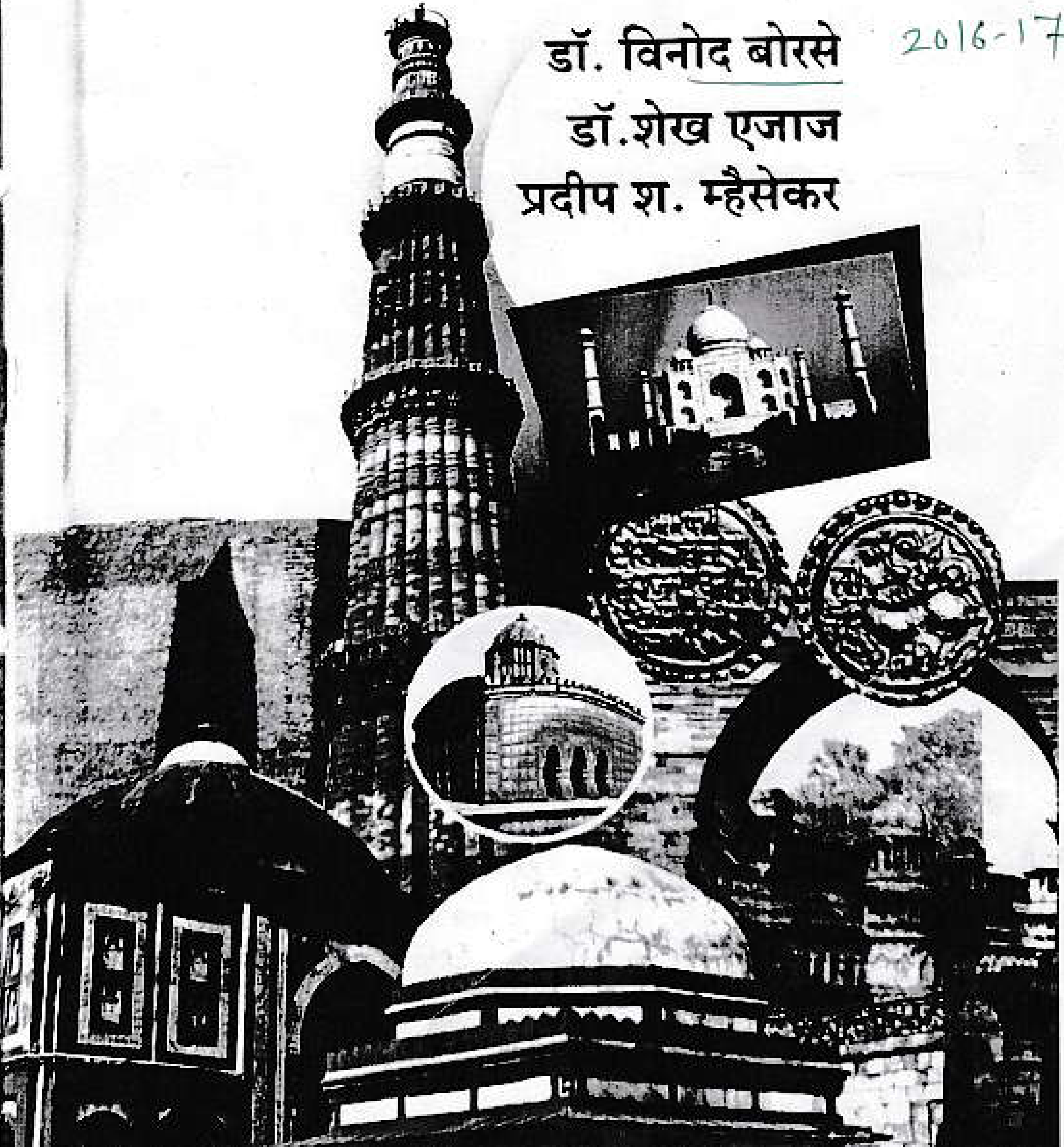

मध्ययुगीन इतिहास चिकित्सा

डॉ. विनोद बोरसे,
डॉ. एजाज शेख,
ॲड. प्रदीप म्हैसेकर

प्रकाशक
चिन्मय प्रकाशन,
सवनेकर बिल्डिंग,
जिजामाता कॉलनी, पैठणगेट,
औरंगाबाद. मो. ९८२२८७५२१९

अक्षरजुळवणी
श्री. ज्ञानेश्वर के. सुस्ते
वेदिका टाईपसेटर्स, औरंगाबाद.

© लेखकाधीन
१४ नोव्हेंबर २०१६
मुद्रक
ऑकार प्रिंटर्स,
औरंगाबाद.
मुखपृष्ठ
सरदार, औरंगाबाद.
₹ १२०/-

ISBN No. = 978 - 93 - 84593 - 51 - 3

2016-17

6

श्री. आसारामजी भांडवलदार कला वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय देवगांव (र.) ता. कन्नड जि. औरंगाबाद
कार्यालय

VOL. 3
SPECIAL ISSUE 1
MARCH 2017

ISSN: 2454-5503
Impact factor : 3.012 (IIJIF)

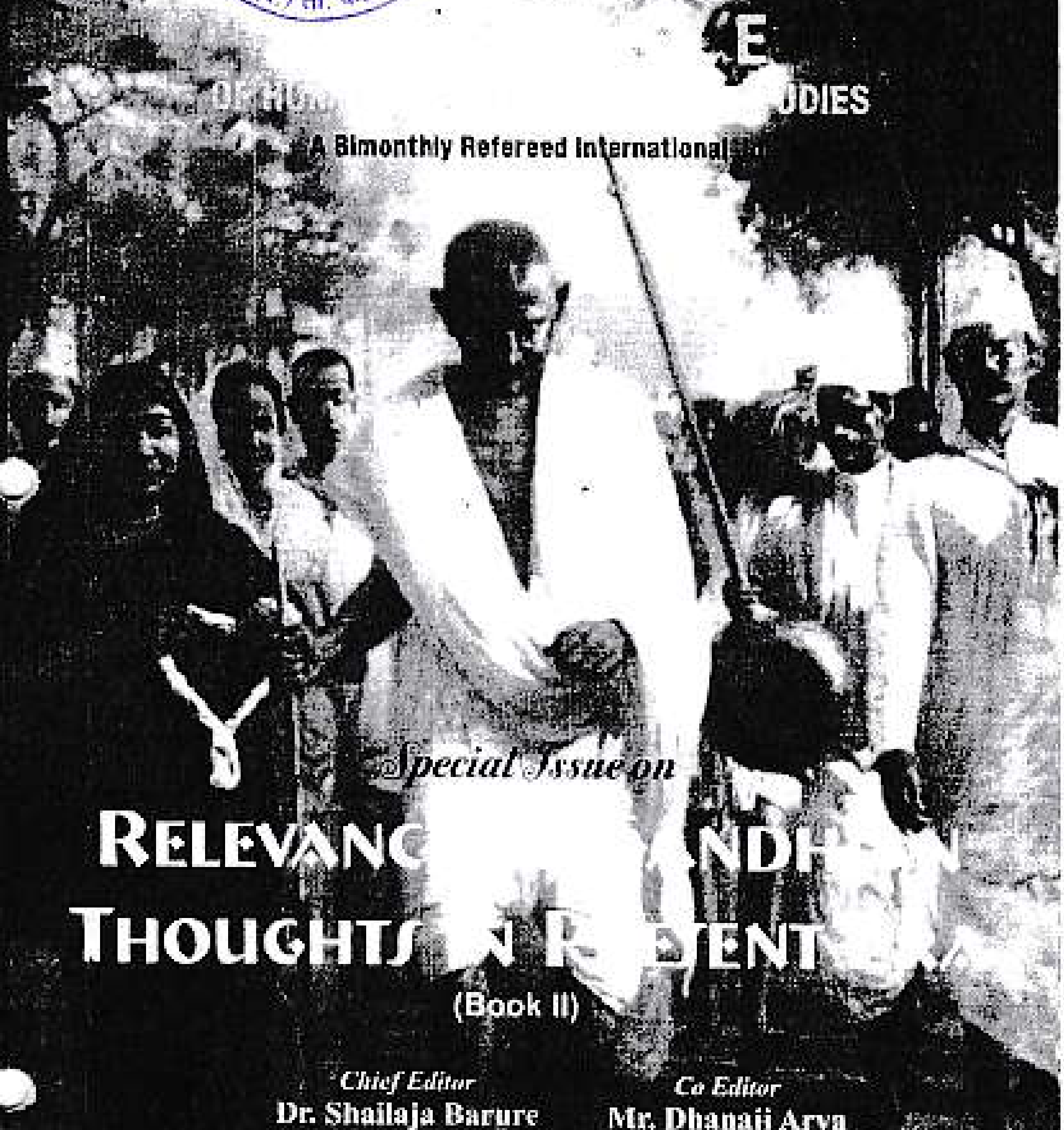

A Bimonthly Refereed International

Special Issue on

RELEVANCE OF GANDHIAN THOUGHTS IN PRESENT ERA

(Book II)

Chief Editor
Dr. Shailaja Barure

Co Editor
Mr. Dhanaji Arya

BY

GANDHIAN STUDIES CENTRE,
SHRI YOGESHWARI EDUCATION SOCIETY'S
SWAMI RAMANAND TEERTH MAHAVIDYALAYA,
AMBAJOGAI, DIST. BEED - 431517

Principal
Shri Asaramji Bhandwaldar Arts, Commerce & Science
College Deogaon R. Tq. Kannad Dist. Aurangabad-431115

SHRI YOGESHWARI EDUCATION SOCIETY'S

SWAMI RAMANAND TEERTH MAHAVIDYALAYA, AMBAJOGAI

(NAAC REACCRIDITED 'B' GRADE)

ONE DAY INTERDICIPLINARY
NATIONAL SEMINAR ON

RELEVANCE OF GANDHIAN THOUGHTS IN PRESENT ERA

(24 MARCH 2017)

PART-II

CHIEF ORGANIZER

Dr. Pravin Bhosle

I/c Principal,
Swami Ramanand Teerth Mahavidyalaya
Ambajogai Dist. Beed

CHIEF EDITOR

Dr. Shailaja Barure

Director, Gandhian Studies Centre,
Dept. of Political Science,
Swami Ramanand Teerth Mahavidyalaya

CO EDITOR

Mr. Dhanaji Arya

Head Dept. of English
Swami Ramanand Teerth Mahavidyalaya

ORGANIZED BY

**GANDHIAN STUDIES CENTRE,
SWAMI RAMANAND TEERTH MAHAVIDYALAYA,
AMBAJOGAI, DIST. BEED 431517**

SPONSORED BY

**UNIVERSITY GRANTS COMMISSION,
NEW DELHI**

ार केला. सद्यस्थितीत भारतात
णावर आधारित हिंदुत्व'. यातील
त करून विचारमंथन करणे हा
्वागत.

i. सुरेश खुरसाळे यांनी महात्मा
शाहीचा आपल्या सर्वांचा' या व
राष्ट्रीय चर्चासत्राचे आयोजन व
न केले आणि प्रोत्साहन दिले.
ारी अध्यक्ष मा. ॲड. एस.टी.
s सल्लागार मा. ॲड. व्ही.के.
ास्थेच्या सर्व पदाधिकारी यांनी ही

ारी प्राचार्य डॉ. प्रविण भोसले,
ान महाविद्यालयाचे प्राचार्य रमण
तत्वज्ञान आणि प्रासंगिकता या
न:पूर्वक आभार. संपादन समिती
डोंगरगावकर, प्रा. रमेश सोनटक्के,
बरदोडे, महाविद्यालयातील सर्व
ांबद्दल धन्यवाद !

ुखपृष्ठ चित्रकार, तांत्रिक सहकार्य
धन्यवाद.

शैलजा बरुरे
मुख्य संपादिका

CONTENTS

1. Gandhian Ethics in R.K. Narayan's -The Vendor of Sweets / Dhanaji Wamanrao Arya / 12
2. Premanand Gajvi's Gandhi-Ambedkar: A Dramatic Presentation of Struggle for the Leadership / Dr R T Bedre / 17
3. Mahatma Gandhi's Contribution to Hindu Philosophy / Dr. Mahananda C. Dalvi / 30
4. Gandhian Model for Rural Reconstruction: Relevance in Present Context / Hanmant S. Nayane / 35
5. A Review on Mahatma Gandhi's Practice of Tolerance/ Dr. Shep B.K. / 42
6. Mahatma Gandhi's Views on National Integration / Dr. Syed Wajeed I. Quadri / 46
7. Mahatma Gandhi as a Social Reformer: A Critical Study / Ramesh K. Lahoti / 50
8. Gandhian Philosphy in Waiting for Mahatma / Ms. Barure Ahilya Bharatrao / 55
9. The Charkha National Economic Wheel of India: Gandhian Thoughts Regarding Khadi / Dr.Gaikwad V.B. / 60
10. Mahatma Gandhiji: A Literary and Spiritual Mentor / Chavan Sudhakar Devendra / 64
11. Reflection of Gandhian Principles in Dina Mehta's And Some Take a Lover / Dr.Dhaware Rahul P. / 69
12. Mahatma Gandhi : An Apostle of Truth & Ahimsa / Nandkishor M. Moghekar / 74
13. Mahatma Gandhi Views on Islam: as an Instrument of Social Change / Mr.Anwar K.Shaikh / 78
14. Mahatma Gandhi as a Social Reformer / Madhuri Rameshrao Dupkewar / 81
15. Mahatma Gandhi and His Quest for Self-Realization: An Overview/ Mantha Padmabandhavi Prakashrao / 86
16. Mahatma Gandhi's View on True Friendship / Shrinivas S. Gadhe / 90
17. Gandhiji's View on Rural Reconstruction / Nandkumar Kuklare / 95
18. Gandhiji's Experiments in the Field of Education / Dr.Raut Sunil Raosaheb / 102
19. GandhianUtopia:Hiware Bazar / Ghuge S.S. / / 108
20. Gandhi's Views on Education / Mr. Prashant R. Shinde / 112

of right and truth". (The Autobiography of an Unknown India P.450) . Just as the hero goes opportunities to the villain Gandhiji out of his pride, gives close to his friend inspite of the warnings . later on, he has realized his mistake, just as the tragic hero comes to know about everything in the end.

References

1. Gandhi M.K. The story of My Experiments with Truth Trams. From Gujarath by M Desai. Ahmedabad: Navajivan Publishing House, 1991.
2. Chaudhuri, Nirad. The Autobiography of an Unknown Indian. London : Macmillan Co,ltd., 1951.
3. Nandal ,B.R. Mahatma Ganhdi . A Biography. London .1975
4. Gandhi, M.K. Collected works of Mahatma Gandhi. Vol-47 , Delhi : Publication Divisions,1971 .
5. Prabhu ,R.K. and Rao U.R.The Mind of Mahatma Gandhi. Ahmedabad : Navajivan Publiching House, 1997.
6. www.freeindia.org
7. www.mkgandhi.org
8. www.m.wikipedia.org

❑❑❑

17.

Gandhiji's View on Rural Reconstruction

Prof. Nandkumar Kuklare
Head Dept. of Sociology,
Shri Asaramji Bhandwaldar College,
DevgaonTq. Kannad Dist. Aurangabad

Introduction:

Mahatma Gandhi as a visionary of India, had a very clear perception of its villages and made an emphatic assertion that "India lives in her seven and half lakhs of villages. He further believed that India will have to live in villages, not in towns, in huts not in palaces. He held this conviction by saying that."If village perishes, India will perish. He found that the progress of the country lies in the development of majority of its rural villages; develop rural economy, industry and rural skills. Gandhiji found the only way of bringing hope of good living to the rural people is by making the village the central place in the economic programme rural development as outlined by Gandhji contained self-sufficiency, inter-dependence for other wants and development of Village Industries. He wanted to bring about rural reconstruction with sound scientific and spiritual values. Through his 18-point Constructive programme, Gandhiji successfully implemented his rural reconstruction activities in Sevagram Centre near Wardha in 1935.

Gandhiji's ideal village belongs to the pre-British period, when Indian villages were the small republics undisturbed by the periodical visitations of barbarous hordes this republican character of the villages was destroyed by the British rule. Therefore, in Gandhian plan of rural reconstruction, the ancient republican village without any kind of exploitation served as a model unit. Gandhiji aimed at the attainment of Village Swaraj and said, "My idea of Village Swaraj is that it is a complete republic, independent of its neighbors for its own vital wants and get inter-dependent for many others in which dependence is a necessity. Thus every villages' first concern will be to grow its own food crop and cotton for its cloth. It could have a reserve for its cattle, recreation and playground for adults and children.

Then if there is more land available, will grow useful money crops, thus excluding ganga, tobacco, opium and the like. The village will maintain a village theatre, school and public hall. It will have its own water works ensuring clean water supply.

Gandhiji fully understood the consequence of western type of industrialization in India. He was conscious of the fact that far industrialization would destroy the Indian society by eliminating our decentralized rural industries and further leads to improvement. The once self-sufficient and self-containedrural villages have been drained progressively. He wanted to reverse this trendand bring about a rural reconstruction based on sound scientific and spiritualvalues. He said,my deal village will contain intelligent human beings. They willnot live in dirt and darkness as animals. Men and women will befree and able to hold their own against anyone in the world.There will be neither plague nor cholera nor small pox, none willbe idle, no one will wallow in luxury. Everyone will have tocontribute his quota of manual labour. It is possible toenvisage railways, post and telegraphs and the like." Gandhian strategy of rural reconstruction was based on village swaraj andswadeshi movement. The basic principle of village swaraj as outlined byGandhiji are trusteeship, swadeshi, full employment, bread labour, self-sufficiency, decentralization, equality, NaiTalim. Thus the idea of idealvillage of Gandhian dream was a comprehensive one, encompassing theeconomic, social, political and educational dimensions.Gandhiji gave emphasis on truth and non-violence in every aspect of human lifeand said, the swaraj of my opinion will come only when all us arefirmly persuaded that our swaraj has got to be won, worked and maintainedthrough truth and ahimsa alone.Gandhian holistic ideas such as Trusteeship, Swadeshi, Self-sufficiency,Bread Labour, and Village Swaraj are briefly described as short.

Gandhiji insisted on the self-sufficiency of Indian villages. Self-sufficiencywas advocated by him as a basic principle of life because dependence brings in exploitation which is the essence of violence. The poor is exploited by the rich, the villageby the city and the undeveloped country by the developed ones due tolack of Self-sufficiency"He suggested that villages should be self-sufficient i.e. they should produce theirown food, clothing and other articles needed for meeting their basicneeds.

He insisted on the promotion of village or cottage industries and handicrafts because they can provide employment, necessary to meet the basicneeds of the villagers and also facilitate village self-sufficiency, Gandhiji said that it was not the British rule but the modern civilizationnourished by them rule, which was the real cause of economic, distress,poverty and unemployment. He further said, "if the British rule were replacedtomorrow by the Indian rule based on modern methods, India would be nobetter"". Against this, he envisaged Inha's salvation in the revival of its ancientcivilization which prescribes for man the path of duty and observance of morality"

Gandhiji's self-sufficient and non-violent village society could only be built on the basis of co-operation and not on conflict. According to him as far aspossible, every activity in the village will be conducted on co-operative basis. Even in the field of agriculture, Gandhiji recommended co-operative farming which would save labour, capital, tools and provide employment to all adultVillagers and increase production also. He said, "we must attempt to prevent further fragmentation of land and encourage people to take to co-operative farming". He noted that when dependence becomes necessary in order to help society to maintain good order it is no longer dependence but it becomes cooperation He also favored spinner's co-operatives and co-operative cattle farmingfor promoting the national interest.

Gandhhi used the term 'Swaraj" with a definite meaning and significance self-rule and self-restraint. He defined swaraj in terms of individual and nation. Swaraj of people means the sum total of the self-rule of the individuals. In terms of national swaraj, it is the sum total of all activities which go up to build an ideal state based on moral force. The people of such state are conscious of their moral strength in its collectivity. Gandhiji tried to identify the concept of swaraj state with the Ramraj, the ideal state of Shri Rama." While propagating his Swaraj vision, he wanted to create a non-violent, non-exploitative and non-competitive social order. He opined: Life will not be a pyramid with the apex sustained by the bonom. But it will be an oceanic circle whose Centre will be the individual, always ready to perish for the circle of villages till at last the whole becomes one life composed of individuals, never aggressive in their arrogance, but ever humble, sharing themajority of the oceanic circle of

which they are integral units. Therefore, the outermost circumstance will not yield power to crush the inner circle but will give strength to all within and will derive its own strength from it. The basic theme of Gandhiji's economic theory was village self-sufficiency or Gram Swaraj. It meant that every village should be self-sufficient in two basic requirements - food and clothing. Every member of the family will play the charka and spin yarn. The village weaver will play the loom and produce the cloth necessary for the village. Similarly, the village should produce its own rice, vegetables etc. Food and clothing will not have to be imported into the village from outside. Necessarily, it meant a particular lifestyle the lifestyle of plain living and high".

The Ramraj or the Enlightened Anarchy of Gndhiji's dream was to be realized in three stages. In the initial stage, the goal was Swaraj to achieve independence for India. In the second stage, the objective was to bring about a predominantly non-violent state through the evolution of Village Republics, GramaSwaraj In the final stage the purpose was to achieve Ramraj, the

Kingdom of God on this Earth which would be the totally non-violent and purely democratic stateless society. Swaraj, GramaSwaraj and Ramraj are thus the three significant milestones in the process of achievement of the ideal social order of Gandhiji's vision. Since the ultimate ideal of Ramraj is difficult to realise, Gandhiji said in its absence the only realisable alternative and immediate ideal was that of Gram Swaraj.

Swadeshi is the moral principle underlying a decentralized self-sufficient economic structure. According to Gandhiji, "Swadesh is that spirit in us which restrict us to the use and service of our immediate surroundings to the exclusion of the more remote" In economic terms, a strict adherence to Swadeshi doctrine paves the way to decentralized self-sufficient economy. The buyers and sellers having a concern for each other, jollity work for the development of their local areas using local resources. Gandhijiemphasised, "every village of India will almost be a self-supportingand self-contained unit exchanging

only such necessary commoditiesto other villages where they are not locally producible".

The spirit of Swadeshi guiding man's economic behavior leads to natural love and preference for local products and an attitude of service to the immediate neighbors. The consumers, for their requirements must buy form the local producers and thus support the local farmers, artisans such as weavers, carpenters, cobblers, potters etc. Adherence to the principle of Swadesh leads to a natural economic order and harmony'.

The decentralized economic units would thus facilitate the best possible use of local raw materials, talents and manpower, promote occupational equilibrium, ecological balance and co-operative living. The village would be able to produce whatever is required, with the help of local resources and would be intended with whatever has been produced in closer surroundings.Gandhiji was profoundly moved by the poverty and miserable conditionsof the masses due to the centralization of the economic power in the hands of the capitalist class He enunciated the theory of trusteeship in order to bring about therequired change In a non-violent way.

Gandhiji started his rural reconstruction activities in Sevagram to implement his idea of Constructive programme which In eluded Items such as the use of Khadi , promotion of Village in dustiers, Basic and Adult Education, Rural Sanitation, upliftment of the Backward Classes, the welfare of Women, Education in Health and Hygiene, Prohibition and propagation of the Mother Tongue. He incorporated all these activities under his 18-point constructive programme and consider it as the truthful and non-violent way of winning 'poornaswaraj'. Constructive programme is not a fragmented approach. It is an attempt to develop society at the grassroots level with the resources that are available locally. He said, Thirty four years of continuous experience and experiment in truth and non-violence have convinced me that non-violence cannot be sustained unless it is linked to conscious body labour and finds expression in our daily contact with our neighbours. This is the constructive programme. It is not an end, it is an indispensable means and therefore is almost convertible with the end. The power of non-

violent resistance can only come from honest working of the constructive programme.

According to Gandhiji village economy cannot be completed without the essential village industries such as hand-grinding, hand pounding, soap-making, paper-making, match-making, tanning, oil-pressing etc. The village industries give employment to millions of people and provide an outlet for the creative skill and resourcefulness of the people. Large scale industries will eliminate the spinning wheel and the handloom, and through the large-scale industries, the wealth will be concentrated in the hands of a few. On the contrary, the village industries will lead to distribution of national income among the millions of people in thousands of villages. Under Village Industries Scheme, the individuals are to engage themselves in home industries in their homes and cottages. While the productionis to be carried out on individually, the sharing of raw materials and marketing of finished goods are to be caned out collectively on a corporate basis. The all Indian village industries Association can guide such co-operative societies which are to be affiliated to or recognized by it. It should encourage and expand the existing village industries and revive certain dying or dead Village industries wherever it is possible and desirable. It should prescribe the minimum living wages for the workers engaged in the village industries."

The deal village envisaged by Gandhiji could be constructed on the basis of the principles of public hygiene and sanitation. The houses which are to be built with locally available material will have sufficient light and ventilation. Each house or a cottage shall have a courtyard to grow vegetables for domestic consumption and to house cattle. The village streets and lanes will be kept clean. Each village shall have its own waterworks to ensure clean water supply. The constructive workers shall make the villages models of cleanliness by teaching the villageto maintain cleanliness in and around the village, including Gandhiji's Idea was not confined only to the removal of garbage from the lanes and streets of the villages but also to put the same to the productive use. If the garbage's are scientifically converted into manure, the villages can not only make use of productive manure to grow more food but also keep the villages clean from dust, dirt and bad smell.

Conclusion:

Gandhiji wanted to rebuild India from the lowest level with the poorest and theweakest. So he gave a call to the people to go back to villages for villagereconstruction. He had visualized self-reliant villages, free from exploitation andfear, as an important part of the decentralized system. According to him, life willnot be a pyramid with the apex sustained by the bottom. But it will be an oceaniccircle whose center will be the individual always ready to perish for the village,the latter ready to perish for the circle of villages, till at last the whole becomesone life composed of individuals, never aggressive in their arrogance but everhumble, sharing the majesty of the oceanic circle of which they are integralunits.Now is the time to listen to Gandhiji's voice carefully, which says, "We areinheritors of a rural civilization. The vastness of our country, the vastness of thepopulation, the situation and the climate of the country have, in my opinion,destined it for a rural civilization to uproot it and substitute for it an urbancivilization seems to me an impossibility.

References:

- ➢ Gandhi, M.K., (1952), Rebuilding Our Villages, Navajivan publication, Ahamedabad.
- ➢ Shah, S.M., (1977), Rural Development, Abhinav Publication, Planning and Reforms, New Delhi.
- ➢ Shashi Prabha Sharma, (1992) *Gandhian Holistic Economics*, Concept: Publishing Co., New Delhi.
- ➢ Panda B.P, (Ed.), (1991), *Gandhiji and Economic Development*, Radiant Publishers, New Delhi.
- ➢ MaheshwariShriram, (1995), Rural Development in India: A Public Policy Approach, SagePublications, New Delhi.

❏❏❏

2016-17

7

Rajashri Shahu Education Society,

Yeshwantrao Chavan College of Arts, Commerce & Science,

Sillod, Dist: Aurangabad

• UGC SPONSORED •

Two Day National Conference

Social Responsibility in Disaster Management

• SOUVENIR •

: Organised by :

Department of Sociology

• Editor •

Dr. Ashok A. Pandit **Mr. Gangadhar N. More**

Principal
Shri Asaramji Bhandwaldar Arts, Commerce & Science College Deogaon R. Tq. Kannad Dist. Aurangabad-431115

INDEX

Particulars	Page No.
1. Disaster Management as Social Responsibility of Military: Indian Perspective- Sudhir Kumar	1
2. Environmental challenges: South Asian Nations zeal for sustainable development- Nillu Khosala	10
3. Corporate Social Responsibility in Disaster Management: Initiatives and Possibilities- Rahul A. Hajare	27
4. Manmade Disasters Management -- Social Work Perspective- P. M. Shahapurkar	39
5. "Role of Governmental / Non Governmental Organization in Disaster Management in India"- Nita Rameshwar Kalaskar	46
6. Man-made Disaster as a Challenge- Prof. Sandeep Gore,	56
7. "COMPARATIVE STUDY OF TROPICAL CYCLONES ORIGINATING IN ARABIAN SEA AND BAY OF BENGAL" - Mr.Usare, B.R.	66
8. Constraints in Disaster Management in India- Dr. Vaidya R. J.	70
9. Role of Women in disaster Management- Dr. Sondge T.P.1 Dr. Mote D.U.2	74
10. The Case study of effect of floods on Mumbai's people in The Maharashtra in 2005- DR. DASHRATH JADHAV	79
11. Man Made Disaster and its Effect on Environment: A Study of Indra Sinha's Animals People- Dr. Rupali P. Paludkar	87
12. DISASTER MANAGEMENT: AN INDIAN OUTLook - Dr. Kalpana Deokar	93
13. Social Responsibility of Media In Disaster Management - Prof. Adamane Bhausaheb Bankat	101
14. Drought in Maharashtra: Causes, Consequences and Remedies - Dr.Pandurang N. Dupke,	107
15. Community Participation in Disaster Mitigation - Prof. Nandkumar Kuklare	111
16. 'Drought in Marathwada Region Causes and Remedies' - Kale R.B., Mokasare G. T.,	118
17. Scope Of Disaster Management- BalasahebLaxmanrao Kale	125
18. New Trends In Disaster Management- GajananSubhanraoLomte	130
19. Social Media and Disaster Management- Gunwant Ramesh Sarode	134
20. Revolution In Disaster Management - Selukar Pravinkumar Dhondiba	139
21. IMPACT OF ETHICS AND DISASTER MANAGEMENT Vikas Limbaji Kadam	144
22. Man Made Disaster as a Problem - More G. N.	149
23. Drought in Maharashtra (Marathwada) Causes, Consequences and Remedies- . Smt. S. V. Jawale	156
24. Modes Of Citizen Media - Dr. Suhas D. Pathak	160
25. Emergency management, journalism and mass social responsibility - DR. Rahul Vijay ranalakara	165

are affected. It brings hardship to water dependent enterprises such as commercial fishing, marines, river outfitters and guides, landscapers, golf courses and water theme parks.

Remedies on Drought: - Some important remedies on drought are as follows

1. To educate the people how to use and storage of the water.
2. To stop the tradition methods of irrigation and use the new methods of irrigation like drip, sprinkler irrigation etc.
3. To control the domestic use of water and to do the rainwater harvesting from all the roofs.
4. To percolate wastage water in the soil.

In short worldwide availability of water on the earth is huge. It covers about ¾ the surface area of the earth but out of this huge water source the percentage of the freshwater is very less. Due to this freshwater shortage is one of the most dangerous risks for society. Water is our basic needs, there are no alternatives. Water scarcity is a global issue. More than two billion people worldwide live in regions facing water scarcity and in India tackles to the problem of water scarcity and the situation is worse.

References:-

1. T.S. Chauhan, Disaster Management, Mark Publishers, Jaipur, India, 2012.
2. Behere and Bhise, Farmers Suicide: Across Culture, Indian Journal of Psychiatry, October/ December 2009.
3. P.R. Trivedi, K.N. Sudarshan, Forest Management, Discovery Publishing House, New Delhi, 1996.
4. Giridhardas Anand, Water Source. India too Weights a Return to Ancient Practices, International Herald Tribune, 20 August 2005.
5. Internet.

****

Community Participation in Disaster Mitigation

Prof. Nandkumar Kuklare
Assi. Prof. Dept. Of Sociology
S. A. B. College, Devgaon R.

Introduction:

The emergence area of disaster mitigation is becoming an integral aspect of development planning, policy formulation and implementation, traditionally disaster management consisted primarily of reactive mechanisms However, the past few years witnessed a gradual shift towards a more proactive mitigation-based approach as it was being proved time and again that reactive mechanism yielded only temporary results, at a very high cost. In this context, an exploration to the concept of sustainable development inevitably ensures the disaster mitigation. Sustainable development encompasses the tree dimensions such as economic efficiency, social equity and environmental protection, all three which contribute to and are affected by natural disasters.

There is an increasing recognition of the fact that relief, rehabilitation and other disaster mitigation action should be coupled with interventions aimed at development. Only by overcoming poverty, developing infrastructure, including awareness and spreading education can we reduce vulnerability. In this respect, all development programmers that are committed to sustainability are relevant to disaster mitigation and prevention. Therefore, in order to reduce the vulnerability, various emerging, geographical, technologies, remote sensing, GIS and GPS and infrastructures, that is human and physical ets. To be utilized property so that maximum benefits can be extracted from them and vulnerability can be minimized. Mitigation seeks to reduce risk that is vulnerability to damage or losses. The reason to focus on mitigating disaster impacts include rising economic and social costs of disasters, existence of technical know-how utilizing emerging areas of science to

reduce disaster impacts and costs, and the fact that mitigation is an integral part of sustainable development.

Pre-disaster mitigation help ensure faster recovery of a community from the economic and other impacts of disaster. Potential mitigation measures should be evaluated for cost benefit and should be consistent with the desires and priorities of the affected community, both those who will pay and those who will be benefited. Mitigation measures should utilize surrounding natural and cultural resources of the community. An effective community-based on partnership involving the community based mitigation programmer is based on partnership involving the government the private sector and the community.

Natural hazards are extreme events and disasters are potential risks to these events with burgeoning population pressure, urban industrial growth deforestation and cultivation of marginal lands the human induced hazards have also increased. In recent years natural hazards have increased maul folds lives have been lost and property destruction has taken place. Poverty, population growth and environmental degradation are the main causes of vulnerability in natural disaster. Therefore understanding concerts of hazards disaster vulnerability, risk and mitigation is essential for disaster management. Disaster management priorities very between developed and developing countries.

Among the top ten countries in terms of average annual loss of lives due to natural disaster are developing countries, India is amongst those nations is the most vulnerable to natural hazards. Due to its geographical position, climate and geological setting, India has been experiencing natural disasters every year. They could be either man-made or naturally occurring in our environment. Therefore, this can be classified into in two broad types. 1) Natural hazards including earthquake, drought, avalanches. 2) Man-made hazards including war, armed conflict, technological failures, oil spillage, factory expansion, fires, gas leakages, transport collisions ets.

Many destructive phenomena are interrelated and may be complex, for example a natural event such as an earthquake

may result in secondary hazards such as landside and fires. In the present context, the recent occurrence such as Tsunami can also be grouped as a secondary hazard resulting from under sea earthquake. Alternatively a prolonged flood may leave of epidemics. The complex nature of many disasters can also go beyond seconder's effects. In some case, the interaction of different hazards and process of change may cause a major disaster. An example of this can be seen in many western and always turn into famine. However when complained with failed market systems and socio- economic issues, drought can easily become a famine, which in turn compounds the negative effects of these other factors.

The term disaster owes its origin the French words 'disaster, which is a combination of two words 'des' meaning bad and 'aster' meaning star. Thus the term 'disaster' refers to 'bad or evil star'. In earlier day's disaster were considered to be an outcome or outburst of some unfavourable star.

A disaster may be defined as "a serious description of the functioning of society, causing widespread human material and environmental losses which exceeds the ability of the effected society to cope using its own resources."

Disasters pose a serious threat to the normal file as well as the process of development and strike with sudden violence, tearing bodies, destroying and structures and throwing apart families. Natural disasters, which are sudden and powerful, damage national economy and course hardship to large section of the society. Thus the impacts of disasters are multidimensional affecting it in all aspect domestic, social, economic and environmental etc. A disaster is a product of hazards such as earthquake, flood or windstorm coinciding with a vulnerable situation, which might include communities, cities or village. There are two main compositions in this definition hazard and vulnerability. Without vulnerability or hazards there is no disaster.

The primary aims are to reduce the risk of death and injury to the population. Secondary aim includes reducing damage and economic losses inflicted on the community as a whole. The objectives are likely to include encouragement for people to protect themselves as far as possible. Some disasters can be avoided. This can be done through removal of hazards from the potential area. In

realistic terms, however not all disasters can be totally prevented. Then the key is to mitigate the damage.

One of the most important long-term sustainable aspects of disaster mitigation is the development of skills and technical capacitating in the country. Professional development and pool of expertise in disaster mitigation techniques will allow longer-term development is a multidimensional and multi- disciplinary approach. It includes the efforts to make people aware about different types of disasters and their consequences media can play a significant role in this direction. Preparedness is the most important component of disaster management. After the identification of vulnerability of any region any particular type of natural or even man-made risks, the best way to avert these impending disasters is to prepare the community disaster is order to mitigate the ill impacts.

Long-term community preparedness programmes have proved very successful in reducing deaths from hazards, like earthquakes and volcanic eruption, for which reliable short-term forecasts are not routinely available. Within individual countries, the degree of preparedness usually depends on the arrangements which have disaster made for civil defence.

For a successful operation of any disaster plan, public understanding and cooperation are vital elements. Most of the people are not prepared to handle the consequences of a damaging event. Simple preparedness at domestic level such as a battery-operated radio, a working torch and a first aid box will help a family during any emergency.

Good educational programmes are a key element in ensuring that widespread public support is available for hazards mitigation, as well as facilitating the transfer of disaster experience from one community to another. Ill- conceived awareness exercises may create panic and other counter-productive attitudes, so it is important that such programmes are well based in terms of social feasibility and an understanding of the probable economic consequences of the mitigation measures recommended to the public. Recent experience suggests that carefully prepared advice need to be distributed, both widely and often, to the public through the media and other channels. All preparedness advice should come from an authoritative government agency and should be locally endorsed by well-known local officials and public figures. Each

measure should be accompanied with a brief explanation which justifies the recommended action and details on how it can best be implemented.

India has been traditionally vulnerable to natural disasters an accent of its unique geo-climatic conditions, floods, drought, cyclones, earthquake and landsides are regular phenomena in India. The multi hazard scenario depicted in the vulnerability atlas of India shows that out of the total geographical area of 32,87263sq. kmabout 60% of landmass is prone to earthquakes of various intensities over 40 million hectares is prone to floods about 8% of the total area is prone to cyclones and 68% of the area is susceptible to drought during 2000-2010 on an average of about 4344 people lost their lives, about 30 million people were affected by various disasters every year.

Over the past two decades, there has been an increase in disaster occurrence costing human and economic losses. This is due to the ever increasing vulnerabilities of people to natural disaster. The need is felt to reduce disasters of people to natural disaster risks by improving capabilities of people and ensuring preparedness, mitigation and response planning processes at various levels. The objective is to look at the entire cycle of disaster management in reducing risk and linking in to development at planning process. In the past disaster viewedis a isolated events, responded to by the government and various agencies without taking into account the social and economic causes and long-term implications of these events. In short, disasters were considered as emergencies.

Disaster mitigation plans need to be implemented to enable communities to be resilient to hazards while ensuring that development efforts do not increase the risk to these hazards. Village level disaster mitigation plan is therefore emerging as an important tool for disaster management. Communities can foster better understanding and knowledge of the causes of disasters. They are further consulted in developing coping strategies according to local environment, socio-economic conditions and level of indigenous technology. This involves programmes related to education, public awareness and professional training to face the challenges during disasters. In recent years, private sectors are being involved to prepare the plan. An important highlight of the programme is to develop gender sensitive public awareness

programmes. It also includes the increased capacity and sectorial synergies for sustainable management of forest and water resources. The development of community participation through village assembly gives everyone an opportunity to freely discuss, decide and implement disaster preparedness plan. This process also made them reflect on the problems of others in their community and help each other in mitigating them. This helps in improving overall quality of life of the village communities. However, the success of such initiative is limited to region where local level village governments are functioning well. This needs to de disseminated in other regions of India.

Conclusion:

The relevance of the community-based disaster management approach is also increasing in the light of radically changing patterns of disaster occurrence and loss. While occasional large catastrophies associated with earthquake, volcanic eruptions and cyclones continue to occur, it has been documented that rapid increase in disaster occurrence and loss is due to the exponential increase in the occurrence of small to medium scale disaster associated with socio natural hazards such as landside, food, drought and fire.

A broad consensus has evolved in favor of community based disaster management approaches because it is at the community level that physical, social and economic risk can be adequately evaluated and managed. This new approach emphasis's activities that strengthen community's capacities to cope with hazards, and more broadly, to improve their quality of life-including livelihood security. However, it is important to note that communities alone cannot implement community-based disaster management. It will take concerted efforts at different levels and across different sectors to improve our understanding of the linkages and to devise effective mechanisms for disaster risk reduction. The communities themselves need to first be aware of the importance of disaster reduction. It is them necessary to go beyond awareness into concrete practice through Information, Education or Extension, Communication. Finally community based disaster reduction depends on a favorable political environment that promotes and supports this participation process.

Community participation and community ownership in disaster risk reduction is one of the key focus and minimizing the

loss. The Government of India's focus on Community-Based Disaster Preparedness (CBDP) approach promotes community involvement and strengthening of their capacities for vulnerability reduction through decentralized planning process. This document deals with the concept, component and some of the best practices in India.

In the context of these patterns of disaster occurrence and loss, the Community-Based Disaster Mitigation approach offers the viable alternative for managing reducing risk in developing Countries.

References:

- Anukapur (2011), Disaster In India: Studies of Grim Reality, Rwat Publication New Delhi.
- National Center for Disaster Management (2001), Manual on NaturalCenter for Disaster Management, Indian Institute of Public Administration, New Delhi.
- Narayan B. (2002), Disaster Management, A. P. H. Publishing Corporation, New Delhi.
- Singh R. B. (1994), Space Technology For Disaster Moniroring and Mitigation in India, INCEDE University of Tokyo.
- Sigh R. B. (ed.) (2000) Disaster Management, Rawt Publication, New Delhi.
- Singh R. B. (ed.) (2013), Natural Hazards & Disaster Management, Rawat Publication, New Delhi.
- Siddhartha K. (2001), Atmosphere, Weather and Climate, Kishalaya Publisher Pvt. Ltd. New Delh.
- Wenger D. E. (1978), Community Response to Disaster: Function and Structural Alternatives, Sage Publishers, Delhi.

2016-17

5

राजर्षि शाहू महाराज :

सामाजिक सुधारणा व सद्यःस्थिती

(समाजशास्त्र)

: संपादक :

प्रा.आर.डी.राठोड

: मुख्य संपादक :

प्राचार्य, डॉ.आर.के.इप्पर

Principal
...ji Bhandwaldar Arts, Commerce & Science
College Deogaon R. Tq. Kannad Dist. Aurangabad-431115

राजर्षि शाहू महाराज : सामाजिक सुधारणा व सद्य:स्थिती

(समाजशास्त्र)

-: संपादक :-

प्रा. आर. डी. राठोड

समाजशास्त्र विभाग प्रमुख

वैद्यनाथ कॉलेज, परळी वैजनाथ,

जि.बीड (महाराष्ट्र)

-: मुख्य संपादक :-

प्राचार्य, डॉ. आर. के. इप्पर

वैद्यनाथ कॉलेज, परळी वैजनाथ,

जि.बीड (महाराष्ट्र)

अरुणा प्रकाशन, लातूर

ISBN 978-93-5240-092-8

५१. राजर्षी शाहू महाराज आणि त्यांचे कार्य
प्रा. सिताराम के. मोगल १५८

५२. छत्रपती शाहू महाराजांचे सामाजिक विचार
मोकासरे गणेश तुकाराम १६०

५३. अंधश्रध्दा निर्मुलनात राजर्षी शाहू महाराजांचे योगदान : एक समाजशास्त्रीय अभ्यास
प्रा. मुंडे रामकिशन हरीदास १६३

५४. प्रजाहितदक्ष प्रशासक राजर्षी शाहू महाराज
प्रा.डॉ.सोमवंशी मुक्ता गोविंदराव १६६

५५. राजर्षी शाहू महाराजांचे लोकाभिमुख प्रशासन
डॉ. वितेश भारत निकते १७०

५६. छत्रपती शाहू महाराजांचे सामाजिक सुधारणा विषयक कार्याचा अभ्यास
प्रा. चाने एच.व्ही. १७३

५७. बहुजनांचा कैवारी : राजर्षी शाहू महाराज
प्रा. पांडूरंग भिवाजी गोरे १७७

५८. राजर्षी शाहू महाराज यांचे दलितविषयक कार्य
डिगोळे सपना ज्ञानोबा १८०

५९. राजर्षी शाहूंचे सामाजिक विचार आणि कार्य
गुसिंगे चरणसिंग हारसिंग १८३

६०. राजर्षी शाहू महाराजांचे जलनिती विषयक धोरण
प्रा. नंदकुमार कुकलारे १८४

61. Great Contribution of shri Chhatrapati Shahu Maharaj to Indian Caste Reservation Systems
Dr. Dashrath Jadhav १९०

62. Feminism Approach of Rajarshi Shahu Maharaj
Prof. C.D.Kamble १९४

63. Shahu Maharaj A Democratic King
Nita Rameshwar Kalaskar १९७

६४. महान समाजसुधारक राजर्षि शाहू महाराज व सद्यस्थिति
प्रा.डॉ.वीरश्री वशिष्ठजी आर्य १९९

६५. स्त्री जीवनातील समस्या निर्मुलनात छ.शाहू महाराजांचे विचार व कार्याचे समाजशास्त्रीय अध्ययन
डॉ. भगवान डोंगरे २०३

६६. राजश्री छत्रपती शाहू महाराजांचे स्त्री विषयक विचार
डॉ.महानंदा चं.दळवी २०७

६७. राजर्षी शाहू महाराजांचे स्त्री विषयक विचार व सद्यस्थिती
डॉ. रेणुका सुनिल वडवणे (भावसार) २१०

६८. राजर्षी छत्रपती शाहू महाराजांचे महिला संदर्भातील कायदे
प्रा. डॉ. टेंगसे एस.ए. २१४

६९. राजर्षी शाहू महाराजांचे स्त्रीविषयक विचार
डॉ. उल्का देशमुख २१७

७०. महिला सबलीकरणात शाहू महाराजांचे योगदान
प्रा.सोमवंशी अल्का बाबाराव २२०

७१. राजर्षी शाहू महाराजांचे स्त्रीविषयक विचार
प्रा. बळीराम पवार २२३

७२. राजर्षी शाहू आणि महिला सक्षमीकरण
प्रा. गजानन चित्तेवाड २२६

७३. स्त्री सबलीकरणात शाहू महाराजांचे योगदान
प्रा.श्रीमती सुनिता जगन्नाथ कुकडे २२९

७४. छत्रपती शाहू महाराजांचे स्त्री शिक्षण विषयक धोरण
डॉ. काळे बाळासाहेब मुंजाभाऊ २३३

७५. राजर्षी शाहू महाराजांचे स्त्री विषयक विचार
प्रा. वाघा. ए. एस, प्रा. डॉ. कांबळे व्ही. एम. २३६

७६. राजर्षी शाहू महाराजांचे स्त्री संरक्षणविषयक कायदे : एक अभ्यास
प्रा.शिवकुमार उस्तुर्गे २४०

ISBN 978-93-5240-092-8

६०. राजर्षी शाहू महाराजांचे जलनिती विषयक धोरण

प्रा. नंदकुमार कुकलारे
समाजशास्त्र विभागप्रमुख,
श्री आसारामजी भांडवलदार महाविद्यालय,
देवगाव (रंगारी) ता. कन्नड जि. औरंगाबाद.

प्रस्तावना:

स्वातंत्र्य प्राप्ती नंतर आपल्या भारत सरकारने शेती व उद्योगधंदे या क्षेत्रात आधुनिकीकरणाचा स्विकार करून नवनवीन प्रकल्प हाती घेतले. परंतु कोल्हापूर संस्थानात आधुनिकिकरणाची ही प्रक्रिया शाहू महाराजांनी आपल्या कारकिर्दीत पुर्वीच सुरू केली होती. युरोपात शेती शास्त्रीय पध्दतीने करून अन्नधान्याचे उत्पादन आपल्यापेक्षा अनेक पटीने अधिक घेतले जाते. हे त्यांनी प्रत्यक्ष पाहिले होते. तेव्हा आपल्या शेतक-यांतही शेतीतील आधुनिक ज्ञानाचा प्रसार झाला पाहिजे या हेतूने महाराजांनी अनेक उपक्रम हाती घेतले. देशातील आर्थिक प्रगतीची प्रक्रिया म्हणजे शेती, उद्योग व सेवा यांच्या विकासाची प्रक्रिया होय. भारतातील नागरीकांचे राहणीमान जास्तीत जास्त उंचवण्याचा प्रयत्न करणे. त्याच वेळी देशातील आर्थिक विषमता कमी करणे, हे प्रत्येक देशाच्या आर्थिक प्रयत्ना मागील उद्दिष्ट राहिले आहे. विसाव्या शतकामध्ये जवळ जवळ सर्वच देशांनी कल्याणकारी राज्याचे ध्येय स्विकारले आहे. विकासाच्या प्रक्रियेमध्ये केवळ वास्तव स्वरूपातील गुंतवणुकीकडे लक्ष देणे महत्वाचे आहे. तसेच देशातील सर्व व्यवहार सामान्य माणूस केंद्रबिंदू ठरवून विविध पध्दतीने कल्याणकारी कार्य केल्याचे दिसून येते. भारतासारख्या विकसनशील शेतीप्रधान देशात तेही स्वातंत्र्या पूर्वीच्या काळात सर्व परिस्थिती प्रतिकूल आसतांना हे सर्व एकत्रीतपणे विचारात घेउन सर्व आघाड्यावरून एका पाठोपाठ प्रयत्न चालू ठेवणे अवघड होते. पण असे प्रयत्न त्या काळाच्या काही मोजक्या संस्थानामधून झालेले आपल्याला दिसून येतात. त्यामध्ये राजर्षी शाहू महाराजांच्या कोल्हापूर संस्थानाचा समावेश होतो .

उदिष्टे :

राजर्षी शाहू महाराजांच्या जलनितीचा अभ्यास करणे.
राजर्षी शाहू महाराजांच्या जलविषयक कार्याचा आढावा घेणे.
राजर्षी शाहू महाराजांनी समाज विकासासाठी केलेल्या कार्याचा अभ्यास करणे .

संशोधन पध्दती :

प्रस्तुत शोध निबंध "राजर्षी शाहू महाराजांचे जलनिती विषयक धोरण" हा विषय तात्विक व सैध्दांतिक स्वरूपाचा असल्याने अभ्यासासाठी दुय्यम तथ्य सामुग्रीव्दारे तथ्य संकलन करून विश्लेषण केलेले आहे. यामध्ये शाहू महाराजांचे आर्थिक, औद्योगिक वृत्ती व जलनिती

ISBN 978-93-5240-092-8

इत्यादी विषयावरील संदर्भ ग्रंथ, पुस्तके, अप्रकाशित शोधप्रबंध, मासिके , नियतकालीके, अहवाल, इ . साधने व वेबसाईट आदि सामुग्रीचा वापर केलेला आहे .

राजर्षी शाहू महाराजांच्या संपूर्ण राज्याचा विस्तार आताच्या कोल्हापूर जिल्ह्यापेक्षा मोठा होता. कोल्हापूर संस्थान आणि शाहू महाराजांची जहागिरी मिळूण एकूण क्षेत्र ३२१७ चौरस मैल होते. राज्याची लोकसंख्या नऊलाखाच्या जवळपास होती आणि शेती हाच मुख्य व्यवसाय असल्याने संपूर्ण समाजजीवन शेतीवर अवलंबून होते. महाराष्ट्रातल्या इतर भागाप्रमाणे कोल्हापूर संस्थानातही राजर्षींच्या वतळी दुस्काळ पडत होता. सन १८९६-९७, १८९९-१९००, सन १९०१-०२, १९०५-०६ आणि १९१८-१९१९ असा पाच वेळा भीषण दुष्काळ पडला होता. राजर्षी शाहू महाराजांनी कारभाराला सुरूवात केली होती. तेव्हा संस्थानावर दुष्काळ सदृष्यस्थिती होती. १८९६ मध्ये फार मोठ्या प्रमाणावर कोल्हापूर संस्थानावर दुष्काळ पडला होता. दुष्काळाची चाहूल लागताच महाराजांनी प्रथम रयतेची पाहणी व विचारपूस केली. नोव्हेंबर १८९६ मध्ये महाराजांनी गडहिंग्लज, रायबाग, कटकोळ या भागांना फारसा लवाजमा न घेता भेटी दिल्या. या प्रदेशात अखेरचा पाऊस न झाल्याने लोकांची स्थिती बरीच हलाखीची झालेली होती. प्रत्यक्ष शेतावर जाऊन घोड्यावरून प्रसंगी पायीसुध्दा जाऊन महाराजांनी लोकांची दु:खे जाणुन घेतली पिकांचे किलपत नुकसान झाले आहे. त्यांना कशा प्रकारची मदत केली पाहिजे हा हेतू मनात ठेवूनच ते दुष्काळी दौ-यावर निघाले होते. दुष्काळात लोकांना संकटाला तोंड देण्याचे मनोधैर्य वाढावे व संकटाचा गैरफायदा घेणा-यांना वचक बसावा हा हेतू या दौ-यामागे होता. राज्यकर्ता या नात्याने दुस्काळाच्या कालखंडात प्रजेला अन्नधान्यांचा व त्यांच्या गुराढोरांना गवत चा-यांचा पुरवठा करून त्यांना मृत्यूच्या तडाख्यातून वाचविण्याचे कार्य महाराजांनी केले होते. परंतु एवढ्यावर त्यांचे समाधान होत नव्हते; तर दुस्काळासारख्या संकटावर कायमची मात करण्यासाठी मुलभूत उपाययोजना करण्याचे त्यांनी ठरविले .

शाहू महाराजांनी कोल्हापूर संस्थानातील शेतीला कायमचा पाणी पुरवठा व्हावा म्हणून पाणी पुरवठ्याच्या लहान मोठ्या योजना जोरदार पणे राबविण्यास १९०१ पासून सुरूवात केलेली दिसून येते. १९०५-०६ या कालावधीत संस्थानात ११,७०० इतकी विहिरींची संख्या होती. १९२०-२१ या वर्षात १२,८०० इतकी झाली. जुन्या विहिरीची दुरुस्ती व नव्या विहीरींची खूदाई यासाठी दरबारामार्फत तगाईच्या रूपाने कर्ज पुरवठा करण्यात आला. शिरोळ, चडगाव, रायबाग, रुकडी, शहापूर इत्यादी ठिकाणी २० हून अधिक लहान मोठे तलाव बांधण्यात आले. भेडसगाव , कटकोळ, अतिग्रे इत्यादी ठिकाणी असणा-या तलावांची दुरुस्ती करण्यात आली . सरकारी आणि खाजगी विहीरीतील गाळ काढण्यात आला. १९१५-१६ च्या अहवालावरून असे दिसते की, नदया पासून ३९,७६३ एकर, विहिरी पासून ३९,८४५ एकर आणि तलावापसून २३२ एकर असे एकूण ७९,८४० एकराला पाणी पुरवठा होत होता . करवीर संस्थानात काही शेतकरी आपल्या शेतात असणा-या विहिरींच्या पाण्यावर थोडी फार बागायती शेती करीत होते . तर ज्यांच्या शेतात विहिरी नव्हत्या ते शेतकरी नदीचे पाणी छोटे छोटे मातीचे बंधारे बांधून पाणी आडवीत होते आणि ते पाणी मोटेचे पाच सहा टप्पे करून शेतीला देत होते. या मोटेच्या

ISBN 978-93-5240-092-8

पध्दतीने शेतीला पाणी पुरवठा करणे अधिक कष्टाचे आणि कठीण होते. संस्थानात पंचगंगा, वारणा, दुधगंगा, वेदगंगा, तुळसी, कुंभी, कासारी, भोगावती व हिरणकेशी या लहान मोठ्या नद्यांचे पाणी प्रचंड प्रमाणात वाया जात होते .

राजर्षी शाहू महाराज १९०२ च्या सुमारास इंग्लंडला जाऊन आले होते. व त्यांनी ब्रिटीश लोक ज्या पध्दतीने तेथील साधन संपत्तीचा उपयोग करून घेतात त्याच पध्दतीने आपणही येथील साधन संपत्तीचा वापर केला पाहिजे. असा विचार त्यांच्या मनात निर्माण झाला. आपल्याकडे एवढी जलसंपत्ती उपलब्ध असतांना आपण तिचा वापर चांगल्या प्रकारे करु शकत नाही याचे दुःख होते. त्यावर ते सतत विचार करत. दुष्काळाची तीव्रता कमी करण्यासाठी महाराजांनी पाणी पुरवठा करण्यासाठी लहान तलाव, विहिरी, जुन्या तलावाची दुरुस्ती केली होती. पण असे विखूरलेले अलग अलग प्रयत्न करीत असतांना दिनांक ०३ फेब्रुवारी १९०२ रोजी एक जाहीरनामा प्रसिध्द केला. त्यामध्ये कोल्हापूर संस्थानासाठी सार्वत्रिक पाटबंधारे धोरण जाहीर करण्यात आले. संस्थानच्या सार्वजनिक बांधकाम खात्यामध्ये पाटबंधारे विभाग वेगळा करण्यात आला. शंकर सिताराम गुप्ते यांना इरीगेशन ऑफीसर म्हणून नेमण्यात आले. संस्थानमधे अस्तित्वात असलेल्या पाटबंधा-याच्या सोयीची प्रत्येक गावानुसार तपशिलवार पाहणी करण्याची जबाबदारी त्यांच्यावर सोपविण्यात आली संस्थानात असलेली सरकारी तलाव व खाजगी विहिरी याचा शेतीला पाणीपुरवठा होण्याच्या दृष्टीने प्रत्येक तालुक्यात गाववार तक्ता करण्यास सांगण्यात आले. या शिवाय ज्यापासून सरकारला थोडे उत्पन्न येऊन जनतेस फायदा मिळण्याजोगा असेल अशा तलावाबद्दल पाटबंधारे प्रकल्पाची यादी तयार करुन वेगळा अहवाल सादर करण्यास सांगण्यात आले. संस्थानातील इरीगेशन सर्व्हे करून शक्य असलेल्या पाटबंधा-यांच्या योजना बाबत अहवाल सादर करण्यास सांगण्यात आले. पाणी पुरवठ्याच्या सोई वाढवण्याच्या दृष्टिने काही योजना सूचविण्यात आल्या. १९०६-०७ च्या अहवाला नुसार या बाबतीत दोन तलावाची पाहणी करण्याची जबाबदारी मि. मित्तर यांच्यावर सोपविण्यात आली त्यासाठी त्याची खास नेमणूक करण्यात आली. पहिली योजना म्हणजे फेजीवडे जवळील भोगावती नदीवर धरण बांधणे आणि दुसरी योजना म्हणजे भूदरगड फरळे नजीक दुध गंगेवर धरण बांधणे होय. त्यानुसार दोन मोठे तलाव बांधण्याच्या दृष्टिने पाहणी करण्यात आली. दोन्ही योजना विचारात घेऊन महाराजांनी १९०७ च्या सुरूवातीला भोगावती नदीवर कोल्हापूरच्या पश्चिमेला ३० मैलवर फेजिवडे येथे धरण बांधण्याचा निर्णय घेतला हा निर्णय कोल्हापूर जिल्ह्यातील शेतीचा कायापालट करणारा ठरला. महाराष्ट्रातील हरीत क्रांतीचा प्रारंभ सुरु करणारा ठरला.

कोल्हापूरच्या पश्चिमेला ६० मैलावर सहयाद्रीच्या घाटात भोगावती नदी उगम पावते. डोंगराळ भागातून नागमोडी वळणे घेत कोल्हापूर जवळ येते. तेथून तिचा सपाट भागात प्रवास सुरु होतो. पावसाळ्यात पश्चिमेकडील अरबी समुद्रावरून पाण्याने भरलेले विपुल ढग व वारे वारे सतत येत असल्याने येथे पाऊस भरपूर म्हणजे सरासरी २०० इंचा पेक्षा जास्त पडतो एखादा दिवस सोडला तर पावसाळ्यात जवळजवळ रोजच पाऊस पडतो. भोगावती आणि

ISBN 978-93-5240-092-8

तिच्यासह सहयाद्रीच्या पश्चिम घाटात उगम पावणा-या प्रमुख पंधरा नद्या पुर्वेकडच्या उच्च प्रतिच्या जमिनी असलेल्या सपाट भागातून वाहतात या भौगोलीक परिस्थितीचा विचार करून शाहू महाराजांनी सहयाद्रीच्या पूर्व डोंगराळ प्रदेशात भोगावती नदीवर धरण बांधण्याचा निर्णय घेतला आणि मुळच्या चाळीस फुट उंचीच्या धरणाचे बांधकाम सुरु करण्यात आले.

राधानगरी धरणाबाबतचा निर्णय घेतल्यानंतर या प्रकल्पामध्ये महाराज इतके गुंतून गेले होते की, त्यांनी वेळोवेळी जे उद्‌गार काढले त्यावरून दिसून येते. एका पत्रात महाराजांनी म्हटले आहे ँMy lifess work will have been done when I complete the project छ अशाप्रकारे हे धरण पूर्ण बांधून यशस्वी करण्याच्या तळमळीने ते एकदा म्हणाले होते की, "या धरणातील पाणी तर आम्हास पुरेनासे झाले तर भोगावती नदीवर दुधगंगेला आणखी एक छोटासा बंधारा बांधण्याचा माझा विचार आहे" त्या काळात धरण बांधण्याचा एखादा निर्णय घेतल्या नंतर त्या बाबतीत जे जे प्रयत्न करता येण्याजोगे होते ते सर्व त्यांनी केले. आणि त्यासाठी आपली सत्ता, साधन सामुग्री ब्रिटीशांशी असणारे चांगले संबंध याचा पुरेपूर वापर आपल्या संस्थानाच्या भल्यासाठी करून घेतला. धरणाच्या बांधकामासाठी भरपूर पैसा, साधन सामुग्री, तांत्रिक सल्ला इत्यादीची आवश्यकता होती. वेळोवेळी महाराजांनी मुंबई राज्याचे त्यावेळचे गव्हर्नर, गव्हर्नरचे सल्लागार मंडळ, मुंबई राज्याचे सार्वजनिक बांधकाम खाते, त्यातील इंजिनिअर्स अशा अनेकांचा सल्ला घेतला. त्यांच्याशी विचार विनिमय केला. काही वेळेला त्या नुसार आपल्या निर्णयात बदलही केला. मुंबई राज्याच्या गव्हर्नरांनी प्रकल्पाला भेट द्यावी, यासाठी त्यांनी सतत प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष प्रयत्न केले . मुंबई सरकारच्या मदती शिवाय प्रकल्प पुर्ण होणे अवघड आहे. याची जाणीव महाराजांनी गव्हर्नरला करून दिली आणि मुंबईच्या गव्हर्नरानी राधानगरी धरण बांधकाम करण्यासाठी सर्वतोपरी मदत देण्याचे आश्वासन दिले. धरणाची योजना, बांधकाम चांगले व्हावे, चुका टाळल्या जाव्यात यासाठी गव्हर्नरांनी मुंबई सरकारचे मुख्य इंजिनिअर आणि सरकारच्या सार्वजनिक बांधकाम खात्याचे सेक्रेटरी मि. हिल यांना महाराजांनी पाठविले धरणासाठी साधन सामुग्री खरेदी करण्यासाठी महाराजांनी आपला मुंबईतील मुक्काम वाढवला महाराजांनी नाशिक येथील काही मोठ्या पाटबंधा-यांच्या कामाला भेट दिली व तेथील काम पाहून आपल्या राधानगरी धरणासाठी या पाहणीचा उपयोग केला.

धरणाचे बांधकाम सुरु झाल्यापासून अनेक अडचणींना तोंड दयावे लागले. सुरुवातीला चांगले गुत्तेदार मिळाले नाही. योजना आर्थिक दृष्टया लाभदायक होईल का? नाही हा ही प्रश्न निर्माण झाला आणि तो सोडविण्यासाठी महाराजांना खुप त्रासही झाला. करवीर व आळते तालुक्यातील सुपीक जमीन लागेपर्यंत डोंगराळ भागातून कित्येक मैलापर्यंत कालवा काढल्याने ती बाब फायदेशीर होणार का? नाही हाही प्रश्न होता. नदीतील पाण्याचा ओघ वळवून कोल्हापूर संस्थानच्या हदीत नसलेल्या प्रदेशातून कालवा काढणे हा दुसरा मार्ग होता. जानेवारी १९११ मध्ये महाराजांनी सर जॉर्ज क्लार्क यांना पत्र लिहीले होते. त्यात त्यांनी लिहीले होते की, "आमच्या योजनेसाठी दोन कालवे आम्हांस हवे होते, परंतु माझा विचार आता बदलला असुन भोगावती व दुधगंगेच्या काठावरील दोन भिन्न दरीतून मला हे दोन्ही कालवे काढावयाचे आहेत

ISBN 978-93-5240-092-8

ह्या बंधा-यातील पाणी जर आम्हास कमी पडले तर दूधगंगेवर आणखी एक छोटासा बंधारा बांधण्याचा माझा विचार आहे."

सुरुवातीला धरणात साठविलेले पाणी कालवे काढून त्यातून शेतीला पुरवावे अशी योजना होती. परंतु दोन डोंगरामधील दरीतून नदी वाहत असल्याने धरण बांधलेल्या भागात उंच डोंगराचे फुगीर उतार नदीच्या पात्रापर्यंत येतात. अशा ठिकाणी बाजूचे डोंगर कापून अथवा बोगदे काढून कालवे किंवा जलसिंचनासाठी पाट काढणे व्यावहारीक दृष्टया न परवडणारे व अशक्यप्राय ठरते. डोंगराळ भागातून सपाट मैदानावर नदी आल्यावरच कालवे, पाट व इतर जलसिंचन करता येईल. सुरुवातीला धरणातून नदीमध्ये वाहणारे पाणी दरवेळी कच्चा बंधारा घालून पाणी साठवून शेतीसाठी, उसासाठी वापरले जायचे. पाणी दरवेळी सोडतांना बंधा-याची झीज व्हायची. माती काही प्रमाणात वाहून जायची पाणी गळून जाऊ नये. याकडेही लक्ष दयावे लागत असे. लक्षी तलावात पाणी दरवेळी भरपूर साठत असे भोगावती व पंचगंगा नदयामधून ते पुरेसे उपलब्ध होत असे.

निष्कर्ष :

राधानगरी धरणामुळे उपलब्ध झालेले प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष फायदे विचारात घेतले तर त्यामुळे कोल्हापूर जिल्हा व त्यातील ग्रामीण भाग यामध्ये सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक सांस्कृतिक व राजकीय यासर्वा मुळे विशेष स्वरूपाचे मुलभूत बदल घडून आलेले आहेत. शेतीला होणा-या पाणी पुरवठयामुळे ऊस लागवडीला, उत्पादन वाढीला चालना मिळाली. त्यामुळे गुळाचे उत्पादन, साखर कारखान्यांची संख्या वाढू लागली. गुळ व साखरेचे उत्पादन तर वाढले त्याच बरोबर साखर कारखानदारांच्या इतर कार्यामुळे शिक्षण, क्रिडा, मनोरंजन अशा स्वरूपाच्या सोयी वाढल्या. व्यापार उद्योग व दळणवळणात वाढ झाली. अन्नधान्य वाढण्यास मदत झाली, ग्रामीण भागात व शेतक-यांच्या हातात पैसा खेळू लागला. शेतीतील गुंतवणूक, शेती संशोधन वाढू लागले. शेतीतील बदल, विज निर्मिती यामुळे घरगुती उद्योग, कुटीर उद्योग व लघू उद्योग तसेच शेतीवर आधारीत उद्योगाचा विकास होत गेला. पशुपालन, कुक्कुटपालन, दुग्धव्यवसाय यांनाही चालना मिळाली. कोल्हापूर, इचलकरंजी शहरांना पाणी उपलब्ध झाले. बंधारे बांधून पाणी साठवल्याने मत्स्यव्यवसाय वाढण्यास पोषक वातावरण निर्माण झाले. बंधारे बांधल्यावर त्यावरील रस्त्यामुळे जिल्हयातील दळणवळणाची साधने वाढण्यास मदत झाली. बंधारे पुल यामुळे एका बंधा-याकडून दुस-या बंधा-याकडे पाण्यातून मर्यादीत पण स्वस्त वाहतूक उपलब्ध झाली. या सर्वामुळे रोजगाराच्या संधी वाढल्या आहेत.

राजर्षी शाहू महाराजांनी द्रस्टेपणाने केलेल्या महान कार्य जिदीने सुरू करून पुढे नेले. त्याची फळे कोल्हापूर जिल्हयाला व तेथील प्रजेला वर्षानुवर्षे मिळत आहे. भोगावती नदीचे पाणी वर्षानुवर्ष राधानगरी धरणात वाहात आहे. भोयतालच्या प्रदेशाला संपन्न बनवत आहे. स्वातंत्र्य पूर्व काळात बांधले गेलेले गड, किल्ले, प्राचीन वास्तु व मोठी धरणे ही विकासाची नांदी आहेत. महाराजांनी सिंचन विषयक प्रकल्पाचा पाया रचला आणि कोल्हापूर जिल्हयाला हरीत क्रांतीचे, सहकाराचे फायदे मिळवून दिले. राधानगरी धरण व एकुणच राजर्षी शाहू महाराजांचे

ISBN 978-93-5240-092-8

कार्य आजच्या समाजा समोर आदर्शच आहे.

राधानगरी धरण व त्याखाली १३ कोल्हापूर पध्दतीचे बंधारे यांच्यामुळे १७,४१० हेक्टर उसाचे क्षेत्र आणि ९,४५० हेक्टर रब्बी पीकाचे क्षेत्र असे एकूण २६,८६० हेक्टर सिंचन क्षमता आहे. राधानगरी प्रकल्पामुळे करवीर, राधानगरी, हातकंगले, शिरोळ, पन्हाळा या तालुक्यातील प्रत्यक्ष भिजणा-या गावांची संख्या १३३ आहे. भोगावती नदीवर तारळे, शिरगाव हळदी, कोंगे, खडक, आणि पंचगंगा नदीवर राजाराम, सुर्वे, इचलकरंजी, तेरवाड, शिरोळ, रुकडी असे कोल्हापूर पध्दतीचे बंधारे आहे. भोगावती नदीवर ८३, पंचगंगा नदीवर १४१ उपसासिंचन योजना आहे.

राजर्षी शाहू महाराजांनी द्रस्टेपणाने केलेल्या महान कार्य जिदीने सुरू करून पुढे नेले. त्याची फळे कोल्हापूर जिल्हयाला व तेथील प्रजेला वर्षानुवर्षे मिळत आहे. भोगावती नदीचे पाणी वर्षानुवर्ष राधानगरी धरणात वाहात आहे. भोवतालच्या प्रदेशाला संपन्न बनवत आहे. स्वातंत्र्य पुर्व काळात बांधले गेलेले गड, किल्ले, प्राचीन वास्तु व मोठी धरणे ही विकासाची नांदी आहेत. महाराजांनी सिंचन विषयक प्रकल्पाचा पाया रचला आणि कोल्हापूर जिल्हयाला हरीत क्रांतीचे, सहकाराचे फायदे मिळवून दिले. राधानगरी धरण व एकुणच राजर्षी शाहू महाराजांचे कार्य आजच्या समाजा समोर आदर्शच आहे.

संदर्भ :

१. डॉ. पवार जयसिंगराव (संपा.) २००७), राजर्षी शाहू स्मारक ग्रंथ, महाराष्ट्र इतिहास प्रबोधीनी, कोल्हापूर.
२. डॉ. मोरे दी.मा. (संपा.) २०१०), सिंचन साधना, महाराष्ट्र सिंचन सहयोग, औरंगाबाद.
३. डॉ. ढमढेरे एस. व्ही. २००९), महाराष्ट्रातील जलसंपदा, डायमंड पब्लिकेशन्स, पुणे.
४. जाधव भगवानराव २००१), राजर्षी शाहू महाराजांची भाषणे, लोकवाङ्मय गृह, मुंबई.
५. साळुंखे पी. बी. (संपा.) राजर्षी शाहू गौरव ग्रंथ.
६. सौ. कुलकर्णी मीना श्री शाहू छत्रपतींचे अर्थकारण

***

Rajashri Shahu Education Society,

Yeshwantrao Chavan College of Arts, Commerce & Science,

Sillod, Dist: Aurangabad

• UGC SPONSORED •

Two Day National Conference

Social Responsibility in Disaster Management

• SOUVENIR •

: Organised by :

Department of Sociology

• Editor •

Dr. Ashok A. Pandit Mr. Gangadhar N. More

Social Responsibility in Disaster Management

© PRINCIPAL
Yeshwantrao Chavan College of Arts, Commerce & Science
Sillod, Dist: Aurangabad

ISBN : 978819239486-2

Publisher
Shambhavi Printers & Publishers
Aurangabad

Printers
Vishal Enterprises
56, Town Center, Aurangabad.
Phone: 0240-2480428

Publication Date : 25 Nov. 2016
Price: 450/- Rs.

Disclaimer: The Authors are solvely, responsible for the contents of the papers compliled in this volume. The Editors or Publishers do not take responsibility for the same in any manner.

Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University,

Aurangabad - 431 004 Maharashtra (India)
Re-accredited by NAAC with 'A' Grade in 2013

Professor B.A. Chopade
Vice-Chancellor

Ref. No. VC/2016-17/

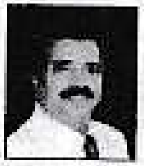

MESSAGE

I am very happy to learn that the Department of Sociology of the Yeshwantrao Chavan College of Arts, Commerce and Science, Sillod, Tq. Sillod, Dist: Aurangabad is hosting a national conference on "Social Responsibility in Disaster Management" on 25-26 November, 2016.

I really appreciate the theme of the conference and also pleased to know that college is bringing out a Souvenir in the National Conference, containing various articles and materials making people aware of the social responsibility in disaster management.

I have no doubt that the suggestions made by the speakers will prove lucrative for the government and society in general. I wish the conference great success.

Professor B. A. Chopade
Vice-Chancellor

encouraged us further for this enterprise. Vice-Principal Dr. B. R. Sonawane for his inspiration, Therefore I am also greatly thankful to him.

Apart from these, I owe my appreciation to Dr. Rahul Palodkar (Secretary, R.S.E.S.S.), Dr. Smt. Rupali Palodkar (Member, R.S.E.S.S.) and other members of our management, joint organizing secretary Smt. I. C. Salunke, as well as my colleagues from teaching and non teaching Staff.

I must acknowledge Mr. Arvikar of Shambhavi publication for his neat and fine printing as well as his prompt services.

I am hopefully looking forward that this book will prove useful to students, research scholars and policy makers as well.

Thank You.

INDEX

	Particulars	Page No.
1.	Disaster Management as Social Responsibility of Military: Indian Perspective- Sudhir Kumar	1
2.	Environmental challenges: South Asian Nations zeal for sustainable development- Nillu Khosala	10
3.	Corporate Social Responsibility in Disaster Management: Initiatives and Possibilities- Rahul A. Hajare	27
4.	Manmade Disasters Management – Social Work Perspective- P. M. Shahapurkar	39
5.	"Role of Governmental / Non Governmental Organization in Disaster Management in India"- Nita Rameshwar Kalaskar	48
6.	Man-made Disaster as a Challenge- Prof. Sandeep Gore,	56
7.	"COMPARATIVE STUDY OF TROPICAL CYCLONES ORIGINATING IN ARABIAN SEA AND BAY OF BENGAL." - Mr.Usare, B.R.	66
8.	Constraints in Disaster Management in India- Dr. Vaidya R. J.	70
9.	Role of Women in disaster Management- Dr. Sondge T.P.1 Dr. Mote D.U.2	74
10.	The Case study of effect of floods on Mumbai's people in The Maharashtra in 2005- DR. DASHRATH JADHAV	79
11.	Man Made Disaster and its Effect on Environment: A Study of Indra Sinha's Animals People- Dr. Rupali P. Palodkar	87
12.	DISASTER MANAGEMENT: AN INDIAN OUTLook - Dr. Kalpana Deokar	93
13.	Social Responsibility of Media In Disaster Management - Prof. Adamane Bhausaheb Bankat	101
14.	Drought in Maharashtra: Causes, Consequences and Remedies - Dr.Pandurang N. Dapke,	107
15.	Community Participation in Disaster Mitigation - Prof. Nandkumar Kuklare	111
16.	'Drought in Marathwada Region Causes and Remedies' - Kale R.B., Mokasare G. T.,	118
17.	Scope Of Disaster Management- BalasahebLaxmanrao Kale	125
18.	New Trends In Disaster Management- GajananSubhanraoLomte	130
19.	Social Media and Disaster Management- Gunwant Ramesh Sarode	134
20.	Revolution In Disaster Management - Selukar Pravinkumar Dhondiba	139
21.	IMPACT OF ETHICS AND DISASTER MANAGEMENT Vikas Limbaji Kadam	144
22.	Man Made Disaster as a Problem - More G. N.	149
23.	Drought in Maharashtra (Marathwada) Causes, Consequences and Remedies- . Smt. S. V. Jawale	156
24.	Modes Of Citizen Media - Dr. Suhas D. Pathak	160
25.	Emergency management, journalism and mass social responsibility - DR. Rahul Vijay ranalakara	165

२६. आपत्ती व्यवस्थापनात स्वयंसेवी संस्थांचा सहभाग : डॉ. विकास वि. शेवाळे	171
२७. मनवनिर्मित आपत्ती : औद्योगिकीकरण, आपत्ती आणि अधोगती : प्रा.एस.डी. हिवाळे	177
२८. "दुष्काळ" आपत्तीचे व्यवस्थापन: चिंतन आणि उपाय : प्रा.डॉ. भगवान डोंगरे	185
२९. निर्वनीकरण : परिणाम व आपत्ती व्यवस्थापन : प्रा. एकनाथ ज्ञानदेव खरात	192
३०. औरंगाबाद शहरातील फटाका बाजार जळीत प्रकरण आणि : आपत्ती व्यवस्थापन एक व्यष्टी अध्ययन : डॉ.मिसाळ हनुमंत	198
३१. भूकंप आणि सामाजिक व्यवस्थापन : डॉ. विठ्ठल भिमराव मातकर	204
३२. "महाराष्ट्रातील विकासात्मक योजना आणि सामाजिक, आर्थिक विकास": डॉ. कालिदास मारुती भांगे	210
३३. मराठवाड्यातील दहशतवादाचा समाजशास्त्रीय अभ्यास : डॉ.सुनंदा मद्रशेटे	215
३४. नैसर्गिक आपत्ती: सामाजिक परिणाम, जबाबदारी आणि व्यवस्थापन : प्रा.डॉ. फुलचंद सलामपुरे	219
३५. "नैसर्गिक आपत्ती : घटनोत्तर मानसशास्त्रीय परिणाम आणि मानसिक पुनर्वसन" डॉ.निलिमा रामचंद्र लोटके	224
३६. रस्ते अपघात या मानवनिर्मित आपत्तीचा समाजशास्त्रीय अभ्यास : प्रा. अनिल गाडेकर	228
३७. महाराष्ट्रातील दुष्काळ : कारणे, परिणाम व उपाययोजना : डॉ.एस. कांबळे	233
३८. मानव निर्मित आपत्ती : एक आव्हान : प्रा. पुरुषोत्तम बारलू रामटेके	243
३९. ओला दुष्काळजन्य आपत्तीच्या परिणामांचे समाजशास्त्रीय दृष्टिकोनातून चिकित्सात्मक अध्ययन (औरंगाबाद जिल्ह्याच्या विशेष संदर्भात) : डॉ. प्रमिला हरीदास मुजाडे	247
४०. सामाजिक दृष्टीकोनातून आपत्ती व्यवस्थापन : चित्रा बापुराव चांदुरकर प्रा.डॉ.बी.एन.कवळे	254
४१. हवा प्रदुषणाचा सामाजिक जीवनावर होणारा परिणाम : एक समाजशास्त्रीय अभ्यास प्रा.यु.व्ही.वायळे, प्रा.डॉ.एस.व्ही.पाटील	259
४२. आपत्ती व्यवस्थापन आणि लोकसहभाग : डॉ. अंजली जयराम भुसारे,	264
४३. भुकंप आणि त्याचे आपत्ती व्यवस्थापन : एक सामाजिक बांधिलकी : प्रा. शालिनी वन्सीधरराव कुलकर्णी	268
४४. मानव निर्मित आपत्ती एक सामाजिक समस्या : प्रा. पोपळघट राजू शेषराव	274
४५. दुष्काळ : एक नैसर्गिक आपत्ती : प्रा. डॉ. विद्या मोहनलाल पटवारी प्रा. डॉ. दादासाहेब उत्तमराव मोटे	280
४६. आपत्ती व्यवस्थापन ही काळाची गरज : डॉ. वानाखेडे जी. एन.	284
४७. मानवनिर्मित आपत्ती दहशतवाद : एक समाजशास्त्रीय अभ्यास : मुंडे रामकिशन हरीदास	288
४८. आपत्ती व्यवस्थापनाची आवश्यकता आणि वास्तविकता: एक चिकित्सक अभ्यास भगवान सुरेश मनाळ	295
४९. जैव विविधतेचे संवर्धन व त्यावरील उपाय : प्रा.नेपराज रा. शिंदे	301
५०. भारतातील धोक्यात आलेल्या जैव प्रजाती : प्रा.डी.डी. शिंदे	304
५१. दुष्काळ आणि आपत्ती व्यवस्थापन : प्रा.पी.एल.मिसाळ डॉ.डी.बी.खरात	309
५२. "आपत्ती आणि आपत्ती व्यवस्थापन" : डॉ. बी.एल. म्हस्के	314
५३. पूर एक नैसर्गिक आपत्ती आणि व्यवस्थापन : डॉ. सुधीर येवले	320
५४. मानव आणि प्राणी संघर्ष : प्रा.डॉ.दिनकर उंबरकर	322
५५. "आपत्ती व्यवस्थापनात शासकीय व अशासकीय संस्थांची भूमिका" राजपूत विलास भरतसिंग	325
५६. "ग्रामीण भागातीलआपत्ती व्यवस्थापन आणि तरुणांचा सहभाग" (विशेष संदर्भ : फुलंब्री तालुका)- डॉ.मंजुषा मोतीराम नळगीरकर	333
५७. महाराष्ट्रातील दुष्काळ स्थितीचे आशय विश्लेषण : जयसिंग पी. सिंगल	347
५८. "जागतिकीकरणाच्या कृत्रिम आपत्तीत भारतीय शेतकरी" : बसंत भा. राठोड.	354
५९. समाजातील आरोग्याला अरिष्ट असणाऱ्या तंबाखूच्या दुष्परिणामांविषयी सावधानता : एक अभ्यास पाटील प्रविण वामनराव	357
६०. "भारतातील अवर्षण आपत्तीचा : एक चिकित्सक अभ्यास : मुंजाळ पांडुरंग श्रीरंगराव"	365
६१. महाराष्ट्रातील आपत्ती व्यवस्थापन : समस्या आणि उपाय शुभांगी विजयराज मोहोड दुष्काळग्रस्त महाराष्ट्र : कारणे, परिणाम आणि उपाय गजानन किसन जुमडे	369
६२. आपत्ती व्यवस्थापनातील लोकजागृती : संशोधक विद्यार्थिनी वर्षा शेषराव गाडवे	383
६३. "आपत्ती व्यवस्थापन एक सामाजिक जबाबदारी, एक अभ्यास"(औरंगाबाद शहर) : गिरिजा रा. ठाकुर	386
६४. महाराष्ट्रातील दुष्काळ कारणे, परिणाम व उपाय : डॉ.पुरुषोत्तम मनगटे	389
६५. मानवनिर्मित आपत्तींचे व्यवस्थापन एक सामाजिक जबाबदारी : प्रा.डॉ.चंद्रप्रकाश मलवाडे	396
६६. आपत्ती व्यवस्थापन : एक सामाजिक जबाबदारी : प्रा.श्रीमती सांडुके आय.सी	402

"महाराष्ट्रातील विकासात्मक योजना आणि सामाजिक, आर्थिक विकास"

डॉ. कालिदास मारुती भांगे
श्री आसारामजी भांडवलदार महाविद्यालय, देवगांव रंगारी

प्रास्ताविक :

कोणत्याही राष्ट्राचा / देशाचा विकास घडवून आणावयाचा असल्यास त्या देशातील जनतेवर तो लादला जाऊ शकत नाही किंवा तसा प्रयत्नही करून विकास साधता येत नाही. याबाबत पाश्चात्य देशातील औद्योगिकरण, शहरीकरण, त्या प्रदेशातील अंतर्गत गरजांतून स्वच्छेने आंतरिक प्रक्रिया म्हणून निर्माण झालेल्या आहेत. त्या कोणी बाहेरून लादलेल्या नाहीत आणि तसे शक्यही होत नाही. भांडवलाची निर्मिती, उद्योगधंद्यातील भांडवलदारांचा वर्ग, संशोधक, शास्त्रज्ञ, त्यांची परंपरा, लोकसंख्या, शहरी आणि ग्रामीण भागातील तिचे प्रमाण, राज्यसंस्था आणि त्यामागचा राजकीय तंत्रज्ञानाचा वारसा या सर्व बाबींचा पाश्चात्य देश आणि पूर्वकडील अविकसित देश यात मोठा फरक असल्याचे दिसते. त्यामुळे आर्थिक विकास किंवा आधुनिकता, पाश्चात्य राष्ट्रात निर्माण झाली. त्याचा परिणाम किंवा त्यांच्या प्रमाणे विकास आपल्याकडे होईलच असे नाही. तर तो आंतरिक इच्छाशक्ती बहुतांशी लोकांची असणे गरजेचे आहे. त्याचबरोबर त्या त्या देशाच्या सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितीच्या पार्श्वभूमीचा विचार करावा लागेल.

विकासाकडे सैद्धांतिक भूमिकेतून पाहताना तो एका मुलगामी सामाजिक परिवर्तनाचा भाग आहे आणि ते परिवर्तन घडवून आणण्यासाठी एका व्यापक सर्वांगीण नियोजनाची आवश्यकता आहे. आर्थिक विषमता, शिक्षण, औद्योगिक विकास आणि विकासाभिमुख नेतृत्व इत्यादी क्षेत्रांमध्ये तर एखाद्या सुनियोजित कार्यक्रमाची आवश्यकता तीव्रपणे असते. अशा कार्यक्रमाचा विचार करत असताना व्यक्तीच्या मानसिक प्रक्रियांचा ही आपल्याला मग अपरिहार्यपणे कळावे लागते. कारण आर्थिक विकास हे जर एक विशिष्ट परिवर्तन असेल तर त्या मागचे चैतन्य, आकांक्षा, मानसिक प्रेरणा, समाजाला कशा निर्माण करावयाच्या हा प्रश्न लागलीच उपस्थित होतो. आपले शिक्षण अगदी अद्ययावत आणि अत्याधुनिक असले पाहिजे. आपले नेतृत्व परिवर्तनाला सामोरे जाणारे असले पाहिजे. आपल्या आर्थिक नियोजनामागे समतेची आस असली पाहिजे, आपल्या दैनंदिन व्यवहारात आपण काही नव्या सवयी आणि चालीरीती स्वीकारल्या पाहिजेत आणि या प्रकारच्या विधाने करताना आपल्या मनात काही नव्या प्रेरणा, काही नवे हेतू काही नवीन कल्पना, विचार, ध्येयवाद अपेक्षित असतो. म्हणून प्रस्तुत शोध निबंधात "महाराष्ट्रातील विकासात्मक योजना आणि सामाजिक, आर्थिक विकास" यामध्ये संशोधन करताना पुढील उद्देश समोर ठेवण्यात आलेले आहेत.

संशोधनाचे उद्देश :

१. महाराष्ट्रातील काही ठळक विकास योजनांचा आढावा घेणे.
२. विकास योजनांची आखणी आणि अमलबजावणीचे स्वरूप पाहणे.
३. विकासात्मक योजनांची कार्य पद्धती शोधणे.

प्रस्तुत शोध निबंधामध्ये वरील उद्देशाशिवाय काही गृहीतके समोर ठेऊन संशोधनामध्ये दुय्यम सामग्रीचा (तथ्यांच्या) आधारे संशोधन करण्यात आलेले आहे. प्रस्तुत संशोधनाची गृहीतके पुढील प्रमाणे आहेत.

गृहीतके :

१. ग्रामीण समाज समोर ठेऊन विविध विकास योजना आखण्यात आलेल्या आहेत.
२. आखलेल्या विकास योजनांची अमलबजावणी योग्य पद्धतीने होत आहे.
३. विकासात्मक योजनांमुळे ग्रामीण क्षेत्राचा विकास होत आहे.

प्रस्तुत संशोधन करत असताना प्रामुख्याने जवाहर रोजगार हमी योजना, स्वर्ण जयंती ग्राम स्वयंरोजगार योजना आणि एकात्मिक बालविकास कार्यक्रम योजनांचे उद्देश, कार्यपद्धती, अमलबजावणी आणि त्यांचे परिणाम याविषयी अध्ययन करण्यात येणार आहे. त्या अगोदर विकास म्हणजे काय? विकासात्मक समस्या सोडविण्यासाठीच्या पद्धती इत्यादींचा आपण अभ्यास करणार आहोत.

प्रामुख्याने इंग्लंडमध्ये १६८८ मध्ये झालेली संविधान क्रांती आणि १७८९ मध्ये संयुक्त राज्य अमेरिकेत लिखित संविधानाचा स्वीकार हा विकासाचा प्रारंभ मानला जातो. परंतु त्याकडे कायद्याला व्यवस्था स्थापनेची शक्ती मानले जात होते. त्याचा मुख्य उद्देश शांती आणि व्यवस्था तयार करणे असा होता. जीवन आणि संपत्तीचा मालकी हक्क व्यक्ती आणि मानवी कल्याणाच्या विकासासाठी मूलभूत मानला जात होता. त्याचे संरक्षण करणे कायद्याचे प्रधान (मुख्य) कार्य समजले जात होते. संविधान समाजातील आर्थिक संरचनेची व्यवस्था करण्याचे कार्य करत होती. याविषयी बेंथम आणि मिल या विचारवंताबरोबरच अनेक विचारवंतांचे मत होते की, जर राज्याने व्यक्तीच्या व्यक्तिगत बाबतीत हस्तक्षेप केला नाही तर स्वातंत्र्य अबाधित राहील. अन्यथा नाही १८ व्या आणि १९ व्या शतकातील भांडवलदार वर्ग मात्र संपत्ती कमावणे, विकणे या बाबतीत अधिकाधिक स्वातंत्र्य मिळविण्यासाठी प्रयत्न करत होता. तत्कालीन परिस्थितीला अनुसरून जॉन स्टुअर्ट मिल स्पष्टपणे म्हणतात की, "व्यवहारामध्ये सामान्यांना सामावून घेतले पाहिजे, जेव्हा कोणत्याही मोठ्या विकासासाठी काम करणे आवश्यक आहे. तेंही नितीचे उल्लंघन एक वाईट बाब आहे."

समाजाचे एका विशिष्ट आणि निश्चित दिशेला परिवर्तन करणे हा विचार किंवा मूल्य हे त्या मानाने अलीकडेच विसाव्या शतकातील आहे. त्यापूर्वी पश्चिमेतील किंवा पूर्वेकडील राष्ट्रे, मानवी संस्कृती ही धर्म आणि अध्यात्म यांनी निर्णायकपणे प्रभावीत झाली होती. त्यामुळे धर्माधिष्ठित पारलौकिक हे समाजाचे अंतीम आणि सनातन मूल्य ठरले

गेले. शुद्ध आणि उदात्त होता. असे रुसो आणि लॉक या विचारवंतांनी सोळाव्या व सतराव्या शतकात आपल्या करारांचे सिद्धांत यात प्रतिपादन केलेले आहे.

मानवी विद्येचे ग्रीक प्रेरणेमुळे पुनरूज्जीवन (Renaissance) आणि धर्माचे पुनरुत्थान (Refinimation) झाले. त्या आधीच एक स्वरूपाचे प्रबोधन (Enlightenment) या खंडात सुरू झाले होते. या सगळ्यांमध्ये माणूस केंद्रभागी आहे. हे क्रांतीकारक सूत्र होते. मानवाच्या विकाससंदर्भातील विश्वास, जगातील प्रमुख चार क्रांत्यांमुळे झाला. औद्योगिक क्रांतीने माणसाच्या हाती तंत्रज्ञानाची किल्ली देऊन दारिद्र्याशी चोखळल्या गेलेल्या समाजापुढे भौतिक सुखाचे आणि समृद्धीचे अपूर्व विश्व उभे केले. ते मानवी जीवनावर प्रभाव टाकणारी महत्त्वपूर्ण क्रांती घडली. ती फ्रेंच राज्यक्रांती होय. त्यामुळे स्वातंत्र्य, समता आणि बंधुभाव ही तत्त्वे देऊन माणसाच्या मुक्तीच्या संकल्पना विशाल केल्या गेल्या. अमेरिकन स्वातंत्र्य युद्धाने शुद्ध लोकशाही आणि उदारमतवादाच्या प्रेरणा मिळवून देणारी ही तिसरी क्रांती होय. तर चौथी क्रांती विसाव्या शतकातील होती. ती १९१७ ची सोव्हिएत क्रांती होय. या अनुषंगाने आजपर्यंत विश्वाची मीमांसा तत्त्वज्ञांनी केलेला आहे. असे असले तरी आजच्या स्थितीमध्ये जगातील एक ही देश असा नाही की, टोकाचे श्रीमंत आणि टोकाचे दारिद्र्य आढळत नाहीत. म्हणून या दुसऱ्या टोकाच्या घटकाला प्रवाहात आणण्यासाठी प्रत्येक देशामध्ये शाश्वत विकासाचा कार्यक्रम राबवण्याचा प्रयत्न केलेले दिसून येतात. त्याचाच भाग म्हणून भारतात राष्ट्रीय व राज्यस्तरावरूनही विविध योजनांची आखणी केल्या जाते. त्याची अमलबजावणी होते. मात्र दारिद्र्यरेषेखालील लोकांचा आकडा वाढतच आहे. तो नियंत्रणात आणून स्वातंत्र्योत्तर देशातील विकासाची फळे सर्व समाज घटकांपर्यंत जोपर्यंत पोहचत नाहीत तोपर्यंत देशाचा विकास झाला असे म्हणणे संयुक्तीक वाटणार नाही.

स्वातंत्र्योत्तर काळात देशाचा सर्वांगीण विकास व्हावा या उद्देशाने केंद्र आणि राज्य सरकारमार्फत विविध विकास योजना तयार करण्यात आल्या. त्यांची अमलबजावणीही झाली. लाखो रुपये खर्ची झाले. विकास योजनेतून ग्रामीण भागाचा सर्वांगीण विकास करता येऊ शकतो हे लक्षात येते. परंतु ज्या योजनेच्या मूळ स्वरूपामध्ये व तिच्या कार्यप्रणालीप्रमाणे किंवा उद्दिष्टांप्रमाणे अमलबजावणी झाली तर निश्चित विकास साध्य होतो. परंतु जर त्या योजनेच्या अमलबजावणी वेळी राजकीय प्रभाव पडला किंवा विकास योजनांमध्ये राजकारण आले तर त्याचा सकारात्मक व नकारात्मक अशा दोन्ही बाजूंनी परिणाम होऊ शकतो. महाराष्ट्रातील विकासावर अशा विविध योजनांचा कशा प्रकारे प्रभाव पडला आणि देशाच्या विकासात हातभार लावला हे पाहण्यासाठी काही ठळक योजनांच्या या ठिकाणी अभ्यास करण्याचे योजिलेले आहे.

ठळक योजना :

१. जवाहर रोजगार हमी योजना
२. जवाहर ग्राम समृद्धी योजना
३. स्वर्ण जयंत ग्राम स्वयंरोजगार योजना

४. जिल्हा परिषद कृषी विभागामार्फत राबविण्यात येणाऱ्या विकास योजना
५. राज्य पुरस्कृत फलोत्पादन विकास योजना.
६. रोजगार हमीशी निगडित फळबाग योजना.
७. एकात्मिक बालविकास कार्यक्रम.
८. यशवंत ग्रामसमृद्धी योजना

स्वातंत्र्योत्तर कालखंडात देशाची आर्थिक प्रगती मोठ्या प्रमाणात झालेली दिसून येते. तरीही दारिद्र्य रेषेखालील जीवन जगणाऱ्यांची संख्या (आकडेवारी) कमी न होता वाढतच आहे. असा विरोधाभास कशामुळे आहे हे अर्थतज्ज्ञांनाही न उलगडणारे कोडे आहे. ग्रामीण भागातील बेरोजगारी आणि अपूर्ण रोजगार हे दारिद्र्यास कारणीभूत आहेत. आजच्या स्थितीला ग्रामीण भागात नव्यानेच समस्या निर्माण झालेली आहे ती म्हणजे एकीकडे बेकारी मोठ्या प्रमाणात असून दुसरीकडे मजूर मिळत नाही. त्यामुळे कृषी व्यवसाय समस्या निर्माण होताना आढळून येतात. म्हणूनच सहाव्या पंचवार्षिक योजनेमध्ये दारिद्र्य निर्मूलनासाठी रोजगाराच्या संधी उपलब्ध करून देण्यासाठी आणि गरीब लोकांमध्ये राष्ट्रीय उत्पन्नाची वाटणी आणि उपभोग वाढविण्याकरिता अनेक उपक्रम हाती घेण्यात आले. त्याअंतर्गत रोजगार उपलब्ध करण्यासाठी ग्रामीण भागात राष्ट्रीय ग्रामीण योजना ऑक्टोबर १९८० मध्ये सुरु करण्यात आली. तसे दारिद्र्य निर्मूलनासाठी सुरू असलेल्या सर्व योजना बंद करून सर्वार्थाने परिपूर्ण अशी स्वर्णजयंती ग्रामस्वयंरोजगार योजना या नावाने १ एप्रिल १९९९ पासून देश पातळीवर एकाचवेळी ही योजना सुरू करण्यात आली.

एकात्मिक बालविकास योजना ही समाजातील दुर्बल घटकांसाठी असून तिचा लाभ प्रामुख्याने आदिवासी, नवबौद्ध, अल्पभूधारक, शेतमजूर, भूमिहीन व दारिद्र्यरेषेखालील असलेल्या कुटुंबातील शून्य ते सहा वर्षे वयोगटातील बालकांना पोषक आहार देणे व लसीकरण करून बालमृत्यूचे प्रमाण कमी करणे, तसेच त्यांचा आरोग्यविषयक दर्जा वाढविणे, मुलांचा मानसिक, शारीरिक व सामाजिक विकास व घडून आणणे तसेच तीन ते सहा वर्षे वयोगटातील बालकांना अनौपचारिक पूर्व प्राथमिक शिक्षण देणे, गर्भवती स्तनदा मातांना पूरक आहार व आरोग्यविषयक सेवा व शिक्षण देणे, बालविकास कार्यक्रमांतर्गत विविध खात्यांशी समन्वय साधणे या बरोबरच अनेक उदात्त हेतू समोर ठेऊन योजनांची आखणी केलेली दिसून येते.

साधारणपणे वरील तिन्ही योजना या ग्रामीण भागातील जनतेचे जीवनमान, आर्थिक, आरोग्य, शिक्षण, सामाजिक, राहणीमान, खानपान इत्यादी संदर्भात जीवनस्तर उंचावण्याच्या हेतूनेच आखण्यात आलेल्या आहेत. त्यामध्ये ग्रामीण भागातील बेरोजगार आणि अर्धरोजगार असलेल्या पुरुषांना अधिकाधिक रोजगार मिळवून देऊन त्यांच्यासाठी फायदेशीर होईल याची काळजी घेणे, सार्वजनिक मालमत्तेतून उत्पादन क्षमता निर्माण करणे ज्याचा थेट उपयोग व दीर्घ काळापर्यंत गरीब जनतेस होईल. ग्रामीण भागातील आर्थिक परिस्थिती सुधारेल आणि ग्रामीण भागाचा विकास झाल्यास तेथील दारिद्र्य रेषेखालील लोकांचा विकास एका निश्चित टप्प्यात हात राहील. त्यामुळे राहणीमानाचा

दर्जा उंचावेल. आरोग्य सुधारून चांगलक परिणाम दिसून येतील अशी अपेक्षा होती. त्यामुळे प्रत्येक तालुक्यातील तीस टक्के कुटुंबांना दारिद्र्यरेषेच्यावर आणण्याचा प्रयत्न करण्यात आलेला दिसून येतो.

महाराष्ट्राच्या ग्रामीण भागातील स्थितीचा मोठ्या प्रमाणात विकास होऊन मूलभूत गरजांची पूर्तता होताना दिस असली तरीही अनेक ठिकाणी तिची कमतरता आहे असे दिसून येत. वरील तिन्ही योजनांची कार्यप्रणाली वेगवेगळी असली तरी हेतू मात्र समान असल्याचेच दिसून येतात. त्यामध्ये ग्रामीण भागातील लोकांच्या हाताला काम देणे, त्यांचा आर्थिक स्तर व स्वयंरोजगार निर्माण करणे. आरोग्यविषयक दर्जा सुधारणे आणि दारिद्र्यरेषेच्यावर आणणे अशा हेतूने ग्रामीण भागात विकासात्मक योजना महाराष्ट्र शासनाने वेळोवेळी त्यांच्या कार्यप्रणालीतील काही उणीवा दूर करून नव्याने अमलात आणण्याचा प्रयत्न केलेला दिसून येतो. एकात्मिक बालविकास कार्यक्रम योजनेअंतर्गत जन्मदर कमी करणे, समाजात व कुटुंबात मुलींना अस्तित्व प्राप्त व्हावे, आर्थिक मदतीमुळे शिक्षण व रोजगार मिळावा, विवाह वय मर्यादेत वाढ व्हावी, मुली शिक्षणाकडे वळून शाळेत जाण्याबाबत सुधारणा व्हावी, मुलींकडे बघण्याचा दृष्टिकोन बदलावा यासाठी या योजने अंतर्गत पोट योजनांचे नियोजन करून ही योजना प्रभावीपणे अमलात येताना दिसत आहे. त्याचबरोबर तीचे दृश्य परिणामही दिसून येत आहेत. राज्याच्या काही भागात प्रभावीपणे त्यांची अमलबजावणी झालेली दिसून येते. तर काही भागात त्याची म्हणावी तशी अमलबजावणी झालेली दिसून येत नाही. त्याला त्या भागातील लोकप्रतिनिधी, प्रशासकीय अधिकारी, प्रशासन आणि जनता (ज्यांच्यासाठी) या योजना आहेत त्यांचा या योजनांकडे बघण्याचा दृष्टिकोन या कारणांमुळे ग्रामीण भागाचा अपेक्षित विकास होऊ शकलेला नाही असेच दिसून येते.

संदर्भ ग्रंथ :

१. डॉ. आघाव दत्तात्रय - ग्रामीण विकास आणि योजना.

२. डॉ. कालिदास भांगे व प्रा. चांगदेव मुंडे - विकासाचे समाजशास्त्र.

३. डॉ. ए. आर. देसाई - रुरल सोशियोलॉजी इन इंडिया.

४. डॉ. शिवलाल सिंह - विकास का समाजशास्त्र.

५. डॉ. राव राममेहरसिंह - विकास का समाजशास्त्र.

मराठवाड्यातील दहशतवादाचा समाजशास्त्रीय अभ्यास

डॉ.सुनंदा भद्रशेटे

महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर

प्रस्तावना :

अचानक आलेले संकट किंवा अरिष्ट आपत्ती किंवा मोठा अपघात उदा.पूर, भूकंप, ज्वालामुखी, उद्रेक, आग, वादळ वारा, वीज कोसळणे, बॉम्बस्फोट, युद्ध, रोगराई, वायुगळती, अवर्षण, जलप्रलय इत्यादी आपत्ती होय. आपत्ती ही विनाशकारी घटना आहे. सार्वजनिक जीवित व वित्तहानी त्यामुळे होत असते. आपत्ती ही निसर्गनिर्मित किंवा मानवनिर्मित असू शकते. नैसर्गिक आपत्तीचे व्यवस्थापन तात्काळ शक्य नसते. परंतु मानवनिर्मित आपत्तीचे संकट कमी करता येते. आपत्तीची सूचना, माहिती मिळाली तर जीवित हानी कमी होऊ शकते. मानवनिर्मित आपत्तीमध्ये हेतूकारक आणि अनाकलनीय आपत्ती यांचा समावेशक होतो. हेतूकारक आपत्तीमध्ये आग, मानवी बॉंब, औषध भेसळ, विषप्रयोग, टाळेबंदी, संप, घातपात आणि दहशतवादाचा समावेश होतो. दहशतवादाने भारतीय समाजच ग्रासलेला नाही तर संपूर्ण जग या समस्येने ग्रासलेले आहे. भारतात नेहमीच दहशतवादी कारवाया होत असतात. दहशतवादी देशाचे मुख्य आर्थिक केंद्र असलेल्या शहरांना मोठ्या प्रमाणात नुकसान पोहोचविण्याचे काम करत असतात जेणे करून त्या देशातली अर्थव्यवस्था कोलमडून टाकणे असा त्यांचा उद्देश असतो. भारतातील सीमाभागात तर नेहमीच दहशतवाद्यांची घुसखोरी व भारतीय सैन्यांबरोबर चकमक होतच असते. दहशतवादाला खतपाणी घालणाऱ्या राष्ट्रांना देखील त्यामुळे नुकसान होत असतेच परंतु तरीदेखील सभ्यतेचा बुरखा पांघरून अशी राष्ट्रे दहशतवादाला प्रोत्साहन देत असतात. पूर्वी ही समस्या देशातील ठराविक शहरांमध्ये होती. परंतु आज त्याचे क्षेत्र विस्तारत असलेले दिसते. देशातील मागास भागात दहशतवादी आपले हातपाय पसरत आहेत जसे महाराष्ट्रातील मराठवाडा ह्या भागात नेहमीच वारंवार दुष्काळाची स्थिती असते. मागील काही वर्षात येथेही दहशतवादाची लागण झालेली दिसून येते. त्याचे वाईट परिणाम म्हणजे दुष्काळात तेरावा महिना म्हणून दहशतवादाची लागण झालेली दिसून येते. प्रस्तुत संशोधनात मराठवाड्यातील दहशतवादाचा अभ्यास करण्यात आला आहे. त्याचे स्वरूप व त्याची कारणे, परिणाम यांचा शोध घेण्याचा प्रयत्न प्रस्तुत संशोधनात करण्यात आला आहे.

तथ्य संकलन :

प्रस्तुत विषयाच्या संशोधनाकरिता द्वितीयक स्त्रोतातील वर्तमानपत्रे, मासिके, संदर्भग्रंथ, इंटरनेट इ. चा वापर करण्यात आला आहे.

उद्देश :

2016-17 9

Rajarshi Shahu Arts, Commerce and Science College Pathri

Tq. Phulambri, Dist. Aurangabad (MS) India – 431111.
Website: www.rsacscollege.com

Presents

One Day National Level Conference on

ROLE OF PSYCHOLOGY IN SPORTS

28th January 2017.

Organized by

Department of Physical Education and Psychology

Chief Organizer

Dr. S. B. Jadhav
Principal
Mobile No. 9422744277, 8275946581

Convener

Dr. R. R. Jadhav
Director,
Dept. of Physical Education
Cell : 9890803494

Dr. Y. B. Gaberao
Head,
Dept. of Psychology,
Cell : 8275271093

Co-Convener

Dr. R. K. Jadhav
Asst. Prof. Dept. of Psychology
Cell : 8551921766

Dr. A. S. Thale
Asst. Prof. Dept. of Psychology
Cell : 9421681787

Dist. Aurangabad (MS), India has wide scopes in different horizons. Your active participation in the conference will make grand success of the conference.

About College

Mitra Sadhana Shikshan Prasarak Mandal is an educational trust in Phulambri Tehsil. Hon'ble Dwarkadas Y. Pathrikar, Ex-President of Zilla Parishad, Aurangabad laid the solid foundation stone of this college which is established in 2001. Aim of the college is to provide qualitative education to the economically and educationally backward students in this famine prone area. The College is affiliated to Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University Aurangabad (MS). The College has rens Arts, Commerce and Science disciplines with 18 subjects at Under Graduate level. Our college is center of knowledge in Phulambri Tehsil and it is situated in village Pathri near Aurangabad (32 km). Ajanta Caves (50 Km), Ellora Caves (30 Km), Daulatabad Fort (30 Km) and Rajur Ganpati Temple(50 Km) away from College.

About the Department

Physical Education and Psychology department was established in 2001. This department offers undergraduate courses. Physical Education and Psychology departments having competent faculty members. All faculty members are well experienced, highly qualified and actively engaged in research work. Department of Physical Education and Psychology department provides quality education to the rural student and organized various activities to enhance the knowledge and skill of the student in different field.

- To promote happiness and positive attitude
- Physical activity and its contribution to life-long health related fitness
- Social and personal development
- To develop self awareness, confidence and leadership
- To develop health related fitness
- To maintain and enhance health related fitness through vigorous physical activity that helps to promote healthy lifestyle

Theme

ROLE OF PSYCHOLOGY IN SPORTS

Sub-Themes

- Physical Activity and Mental Health
- Physical Activity and Holistic Personality Development
- Sports Psychology
- Effect of Exercise on Psychological Factors
- Relation between Sports and Psychology
- Psychological effect of Yoga, Pranayama and
- Meditation
- New Era in Sports Psychology
- Sports and Culture
- Importance of Yoga and Diet in Modern Lifestyle Imagery in Sports Psychology

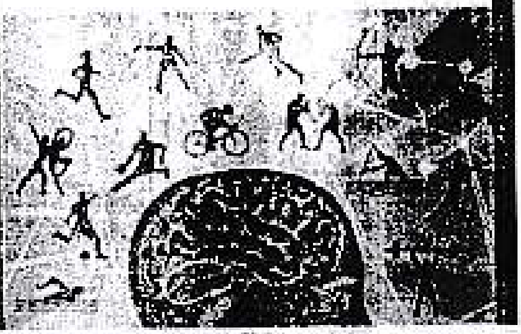

Submission Information

Format for Research Paper : Full length paper word - limit 2000 - 2500.
Medium : English – Font : Times New Roman, Font size : 12 pts.
Marathi / Hindi - Font : Kruti Dev 10, 50, 55 / Shivaji 10, Font size : 14 pts.
Format For the Paper : M.S. Word - 2003/2007.

Registration Fees

Participants	Fees	Spot Regd.
Faculty / Delegate	₹800/-	₹1000/-
Research Scholar	₹500/-	₹600/-
PG / UG Students	₹300/-	₹400/-

All Research Papers (Marathi, Hindi, English) will be published in Special Issue Online International Journal with good Impact factor and ISSN number.

Last Date : 15th January 2017

PAYMENT MODE

Registration fees and paper along with Cash / Account / Cheque / Demand Draft Drawn in favour of **"Principal, Rajarshi Shahu Arts, Commerce and Science College Pathri"** payable at **Wadod Bazar.**

Account Name : **"Principal, Rajarshi Shahu Arts,**

Patron

Hon'ble Shri. Dwarkadas Yashwantrao Pathrikar
(President, Mitra Sadhana Shikshan Prasark Mandal Pathri)

Hon'ble Shri. Rajendra Eknathrao Pathrikar
(Vice-President, Mitra Sadhana Shikshan Prasark Mandal Pathri)

Hon'ble Mrs. Ushatai Dwarkadas Pathrikar
(Secretary, Mitra Sadhana Shikshan Prasark Mandal Pathri)

Hon'ble Shri. Varun Dwarkadas Pathrikar
(Joint Secretary, Mitra Sadhana Shikshan Prasark Mandal Pathri)

National Advisory Committee

Dr. Smt. Kalpana Zarikar (Aurangabad, MS.)
Dr. Kashinath Mhaske (Amravati, MS.)
Dr. Rajesh Kumar (Hyderabad, AP.)
Dr. Ram Mohan Singh (Pondechery)
Dr. Mahendrakumar Singh (Bilaspur, JK.)
Dr. Mahendra Kumar (Ranchi, JK.)
Dr. Susanta Sarkar (Kolkata, WB.)
Dr. Santosh Kumar (Nainital, UK.)
Dr. Pradip Deshmukh (Nanded, MS.)
Dr. Vikas Prajapati (Ahemdabad, GJ.)
Dr. Birendra Zanzaria
Dr. H. J. Narke (Aurangabad, MS.)
Dr. Javeed Quadri (Jalna, MS.)
Prof. Ravi Gunthe (Jodhpur, RJ.)
Dr. Javed Ahemad (Azamgad, UP)
Dr. Uma Rani (Tirupati, AP)
Dr. Shivkumar Chengti (Gulbarga, KR.)
Dr. Anjali Ray (Kolkata, WB.)
Dr. C. P. Khokhar (Haridwar, UP.)
Dr. Anis Ahemad (Darbhanga, BH.)
Prof. Vibha Sharma (Delhi)
Prof. Dinesh Nagarprasad

State Advisory Committee

Dr. Bhagwat Katare
Dr. Pradeep Dube
Dr. S. S. Shaikh
Dr. Appasaheb Hunde
Dr. Dyanand Bhakt
Dr. Dhananjay Ballal
Dr. Pandharinath Rokde
Dr. M. A. Bari
Dr. Pralhad Godbole
Dr. Dayanand Kamble
Dr. Govind Kadam
Dr. Makrand Joshi
Dr. Vishal Deshpande
Dr. Shatrunjay Kote
Dr. Shekhar Shirsath
Dr. Rangnath Mhaske
Dr. Hanraj Dongare
Dr. Manish Pagare
Dr. Ansar Shaikh
Dr. Minakshi Mulaya
Dr. Yusuf Pathan
Dr. Madhavrao Ingle
Dr. Sachin Deshmukh
Dr. Manoj Reddy
Dr. Suhas Yadav
Dr. Bhujang Davkar
Dr. Vasant Zende
Dr. Manisha Waghmare
Dr. Madhukar Wakle
Dr. Satyajit Pagare
Dr. Uday Dongare
Dr. Sandip Jagtap
Dr. Santosh Vangujare
Dr. Manoj Vyawhare
Prof. M. D. Kanade
Dr. Aparna Ashtputre
Dr. M. K. Tajane
Dr. S. M. Raypure
Dr. Ravi Shinde
Dr. R. B. Sirsath
Dr. Bharat Memrut
Dr. Vilas Padhye
Dr. U. S. Gaikwad
Dr. Mahendra Patil
Dr. Anil Wagh
Dr. Subhash Sherkar
Dr. M. K. Rakhunde
Dr. M. G. Shinde
Dr. Shafiq Pathan
Dr. Amit Raut
Dr. Sunendha Jadhav
Dr. Sachin Jadhav
Dr. Abhimanyu Dhormare
Dr. Awin Akolkar
Dr. Vilas Mahajan
Dr. Shailesh Banswal
Mr. Prabodhan Kalam
Dr. Satish Surye
Dr. Anil Pawar
Dr. Arun Dainkar
Dr. Suhas Joshi
Dr. Mayuri Dondge
Dr. Sudhir Pawar
Dr. Shivaji Talware
Dr. Tukaram More
Dr. Vishnu Paghal
Dr. P. Dummer
Dr. Rakesh Ramraje

Hemantej Phulambri

Reg No.17/1984 Date.17/02/1984 M.A.H/17/1984 A.G.D.F.1060
Mitra Sadhana Shikshan Prasarak Mandal's

RAJARSHI SHAHU ARTS, COMMERCE & SCIENCE COLLEGE

PATHRI, TQ. PHULAMBRI, DIST. AURANGABAD (MS)
Phone No.0240-2632386, 2632415, Fax No.0240-2632386
Email: - rajrshishahu@gmail.com

National Conference on "Role of Psychology in Sports"

Dr. S. B. Jadhav
(Principal)
Chief Organizer

Dr. R. R. Jadhav
Head, Dept. Of Sports
Convener

Ref. No.: RSACSCP/2016-17

DATE: 12/01/2017

Acceptance Letter

Dear Author(s)

Dr. Hansraj K. Dongre

I am very glad to inform you that your Abstract/Paper/Article entitled "ROLE OF SPORTS PSYCHOLOGY **IN MOMENTUM OF SPORTS PERFORMANCE**" is Accepted for presentation in **National Conference on "Role of Psychology in Sports"** to be held at Rajarshi Shahu Arts, Commerce and Science college Pathri, Tq. Phulambri, Dist. Aurangabad-431111, Maharashtra, India **on 28th January 2017.**

The registration form and fees should be sent by Demand Draft (DD) in favour of **"The Principal, Rajarshi Shahu Arts, commerce and Science college, Pathri"** payable at Wadod Bazar to **Bank of Maharashtra account No. 60267012471**, IFSC Code : MAHB0000697 and MICR Code : 431014058 and **OR directly deposit fees to above and the same account and send the scan copy of fees paid receipt** on or before **15th January 2017.**

Registration form is attached in prescribed format.

Thank you very much in advance for your cooperation.

Dr. R. R. Jadhav
Convener
Mobile No: 9890803494
Email ID: ramdasrjadhav@gmail.com

Role of Sports Psychology in Momentum of Sports Performance

Dr. Hansraj Kudanlal Dongre
Director and Head
Department of Physical Education & Sports
Shri Asaramji Bhanwaldar Arts, Commerce & Science College, Deogaon Rangari Tq. Kannad
District Aurangabad

Abstract :

It's often talked about but poorly understood. Lee Crust looks at the evidence for 'psychological momentum' and whether it can contribute to a winning performance in professional sport there are numerous examples of teams or individuals that just seem to be 'on a roll'. In basketball, commentators talk about the 'hot hand' to describe a player who just can't seem to miss and makes several consecutive shots. Baseball has the equivalent 'hot streak' where batters hit one home run after another and examples of this phenomenon can also be found in team sports such as football. When a team or individual has 'momentum', the most unlikely of reversals appears possible. However, momentum is one of the most overused terms to explain success or failure in sport despite being rather poorly understood (1). The purpose of this article is to discuss the concept of psychological momentum and examine the evidence for its existence.

Introduction:

Understanding Momentum

Momentum is considered a cornerstone of physics and has been defined as the ability of an object to continue moving because of its mass and velocity (2). Now think of a snowball rolling down a mountain side – what starts as a small, slow moving object, can easily become a forceful fast moving large object that could do some real damage to anything in its way. In sport, psychological momentum has been defined as 'a bi-directional concept, affecting either the probability of winning or the probability of losing as a function of the outcome of the preceding event' (3). Psychological momentum has also been defined in relation to perceptions of moving towards a goal (4). It is important to note that psychological momentum can be either positive (where almost everything seems to go right) or negative (where nearly everything seems to go wrong). In a rowing regatta, a crew that has erased a four length deficit would likely be experiencing positive momentum, while the crew that has lost the lead would be experiencing

negative momentum. Although research has been rather intermittent, sport psychologists have spent nearly three decades examining both perceptions of psychological momentum and links to performance and outcomes. Overall, the concept appears to divide opinion, with some researchers dismissing the phenomena as a mere performance label (5) or *cognitive* illusion that is nothing more than the expected ups and downs that occur in sport (6). Indeed, when statistically examined by computing shooting records or evaluation of individual performance trials in basketball, there doesn't seem to be any hard evidence of a 'hot hand' or 'hot streaks' (6, 7). In fact, one study showed a slight trend suggesting a successful shot was more likely after a previous failure (7). However, such objective approaches do not really fit with the concept of momentum as a subjective experience because they fail to examine the perceptions or thoughts of participants. The concept of momentum appears ingrained in sporting culture and research evidence clearly shows that athletes' perceptions of momentum do exist, and shift in response to gaining or losing ground in competition (1). Momentum sequences can be very brief or even roll over from one match to the next. There is also evidence to suggest that changing perceptions of momentum are linked to changes in athletes' thoughts and feelings, which could influence performance (8). However, it should be noted that very few studies have found hard evidence to link changes in perceptions of psychological momentum with changes in performance and outcomes.

Models of Momentum

In attempting to describe and explain how momentum influences individuals, sport psychologists have proposed a number of alternative models. The antecedents-consequences model suggested that the extent to which psychological momentum influences performance is dependent on personal (eg motivation, anxiety levels) and situational factors (eg crowd behaviour and task difficulty)(4). Furthermore, it was suggested that experiencing psychological momentum was likely to lead to increased arousal, benefiting tasks requiring higher levels of arousal. The antecedents-consequences model also suggested perceptions of *control* were an important feature. However, this model did not fully consider the role of emotions or arousal on momentum. Perhaps the most significant advance in understanding psychological momentum came with the multidimensional model of momentum in sports (9). This model comprises a number of critical elements that determine the development of momentum (see figure 1). These elements form a 'momentum chain', which has allowed researchers to test the predictions of the model.

Figure 1 : Multidimensional Model of Momentum in Sports

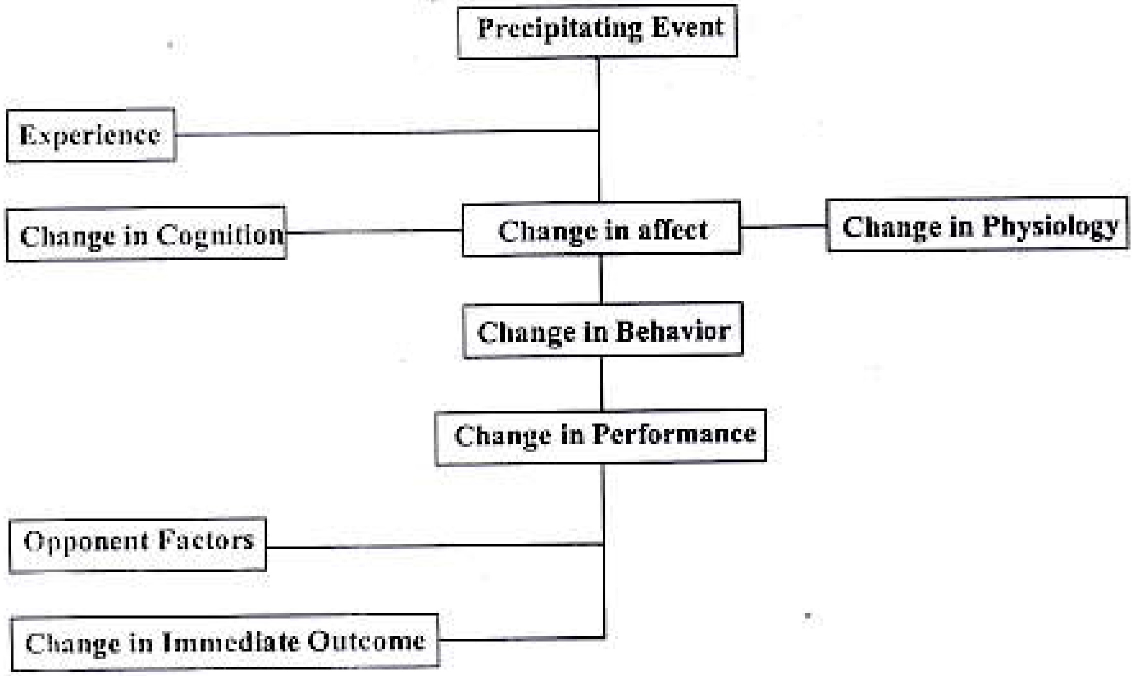

First, a precipitating event or 'momentum starter' is perceived and interpreted by the individual, causing changes in cognitive (ie self-efficacy, motivation), affective (ie positive or negative feelings) and physiological (ie arousal) factors. Such intrapersonal changes are then predicted to influence behavior such as activity level, pace etc and as a consequence, changes in performance and immediate outcome are expected. There are two other important elements to the model: namely experience and opponent factors. Previous experiences are proposed to influence how precipitating events are perceived. For example, it is suggested that experienced athletes are better able to initiate, maintain and interrupt momentum sequences due to their accumulated sports-related knowledge. Finally, in head-to-head contests, the model considers the role of opponent factors in sport. The theory is that the extent to which performance and outcome variables are influenced is not only down to the degree to which a player or team experiences positive momentum, but whether the opponent experiences negative momentum as a result of a precipitating event or series of events.

Momentum Evidence

While it is important to acknowledge that research into psychological momentum has produced mixed results, one supportive study is particularly impressive, especially given the controlled nature of the investigation. A Canadian research team reasoned that previous

Figure 1 : Multidimensional Model of Momentum in Sports

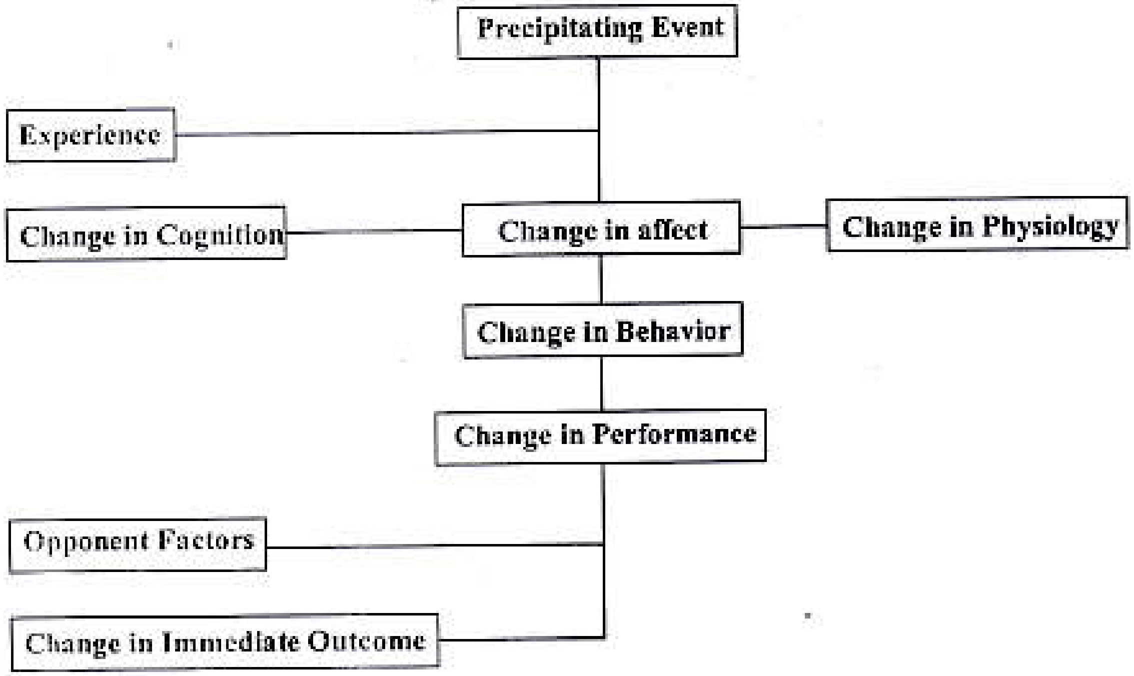

First, a precipitating event or 'momentum starter' is perceived and interpreted by the individual, causing changes in cognitive (ie self-efficacy, motivation), affective (ie positive or negative feelings) and physiological (ie arousal) factors. Such intrapersonal changes are then predicted to influence behavior such as activity level, pace etc and as a consequence, changes in performance and immediate outcome are expected. There are two other important elements to the model: namely experience and opponent factors. Previous experiences are proposed to influence how precipitating events are perceived. For example, it is suggested that experienced athletes are better able to initiate, maintain and interrupt momentum sequences due to their accumulated sports-related knowledge. Finally, in head-to-head contests, the model considers the role of opponent factors in sport. The theory is that the extent to which performance and outcome variables are influenced is not only down to the degree to which a player or team experiences positive momentum, but whether the opponent experiences negative momentum as a result of a precipitating event or series of events.

Momentum Evidence

While it is important to acknowledge that research into psychological momentum has produced mixed results, one supportive study is particularly impressive, especially given the controlled nature of the investigation. A Canadian research team reasoned that previous

inconsistent findings were likely due to the use of methods and tasks requiring low arousal that were not conducive to testing the concept (10). These scientists used a 12-minute laboratory-based bogus cycle race to test for perceptions of momentum and performance changes. Participants believed they were racing against an opponent with a similar VO2max to their own, situated in an adjacent room. During the race, 20 participants viewed a computer screen showing which rider had the lead, and the amount of time left. However, the participants were actually viewing a pre-recorded race representing (1) a no-momentum condition where competitors were tied throughout the race, or (2) a momentum condition where the participant fell significantly behind before coming back to tie the race. Participants retrospectively reported perceptions of momentum for four time periods during the race. Results revealed that participants in the momentum condition reported significant decreases and then increases in perceptions of momentum in response to losing and then regaining the lead. Participants in the no momentum condition reported no significant changes in perceived momentum over the course of the race. Thus perceptions of momentum did change as a result of either losing or gaining ground in the race. In relation to performance measures, participants in the no-momentum condition did not show any significant variation in performance across the time periods. In contrast, participants in the momentum condition were found to pedal faster when they lost the lead, and generated even greater power output when they regained the lead. The fact that negative momentum actually resulted in increased performance is interesting and went against predictions. However, participants fell behind over a relatively short period of time and quickly made up the ground, with the authors speculating that a loss of momentum over a longer period would likely have resulted in an expected drop in performance. It is possible that falling behind acted as a form of motivation to encourage greater effort. Another study used a basketball-shooting task to test the predictions of the multidimensional model of momentum (8). Over 100 university students completed the task and reported their perceptions of momentum, self-efficacy, affect and arousal. For instance, a measure of persistence was included that related to the participants' willingness to continue shooting (when scores were deducted for missing). Results revealed significant differences between positive, negative and neutral momentum groups in relation to self-efficacy and affect. The highest and lowest levels of self-efficacy and affect were found in the positive and negative momentum groups respectively. Despite this, no significant differences were found between momentum groups in relation to arousal or persistence. As such, the evidence offered only partial support to the multidimensional model.

Momentum Triggers and Outcomes

Despite inconclusive evidence, athletes and coaches appear to be convinced that psychological momentum exists. From an applied perspective, it is important to establish how athletes achieve and maintain positive momentum, and reverse negative momentum. After reviewing the literature on psychological momentum, I (along with my colleague Mark Nesti) suggested that what most previous researchers had failed to do, was talk to the athletes who had experienced momentum and try to understand their perspectives (10). Much past research involved either filling out brief questionnaires or examining archival data on win/loss records or scoring configurations. Box 1 (below) shows the reported triggers that initiated positive momentum sequences and the outcomes associated with positive momentum.

Triggers and outcomes of psychological momentum in football

Tiggers	Outcomes
Negative body language of opponents	Thinking ahead
Opponents weaknesses	Increased confidnece
Opponents mistakes	Percived success
Confidence	Feelings of invincibility
Good fortune	Doing thins not normally attempted
Schoring goals	
Refereeing decisions	
Past experience	
Encouragement	
Team Cohesion	
Positive attitude	

In research that relied on spectator interpretations of momentum, triggers have been reported for tennis and basketball (9). For example, a trained observer watched quarter-final and semi-final matches from the 1990 US Open and identified triggers that specifically led to momentum sequences. An average of 30 such events per match were noted with dramatic shots, unforced errors, break of serve and not converting a break point opportunity representing the major triggers. Approximately two thirds of the events were attributable to positive play as opposed to mistakes by opponents. In basketball, the main momentum triggers were found to be dramatic play, a scoring run, an important player leaving the game, and a time out. In this case, 78% of events leading to momentum sequences represented positive play.

Reversing negative momentum

The flipside of this concerns what athletes can do when they are experiencing negative momentum and how this might be reversed. I recently interviewed an elite tennis coach and asked him if there were any tips he gave to his players in dealing with an opponent who hits a 'hot streak'. The main point he made was that tennis was a problem solving sport and that players need to be proactive and look to change things in order to reverse the momentum (see box 2, above). This coach also suggested that when it comes to maintaining it, the crucial factor was to stay calm and focused on the task at hand. Similarly, soccer players have often reported making changes in an attempt to reverse negative momentum, including changing tactics, controlling the pace of the game and frustrating the opposition. Clearly though, it's not just a case of expecting your opponent's performance to drop off; there's a need to try something different to upset your opponent's rhythm and perhaps break their focus. That might require the courage to take calculated risks. It is also vital to remain positive and not to let the opposition see any frustration or negative body language as this can hand them an increased sense of control and can help to maintain their positive momentum se[illegible] [illegible] below gives some practical tips for maintaining psychological momentum. And remember, if opponents show their frustration or attempt to distract you, remind yourself that this is [illegible] se [illegible] re in control!

References

1. [illegible] 8 (1): 2006
2. [illegible] Dictionary, London, UK: Harper Collins 1993
3. [illegible] 18: 167-181 1995
4. [illegible] Psychol 10: 92-108 1988
5. [illegible] Motor Skills 84: 475-485 1997
6. [illegible] 23: 181-197 2000
7. [illegible] hol 17: 295-314 1985
8. [illegible] 23: 349-363 2000
9. [illegible] Psychol 6: 51-70 1994
10. [illegible] Psychol 20: 421-436 1998
11. [illegible] Psychol 20: 57-72 2008

ISSN- No- 2231- 4687

International Journal of Management and Economics

Special Issue

International Conference on E-governance for Emerging India

17th & 18th February- 2017

Vol.I No.16 February 2017

Contents

International Journal of Management and Economics

1) **Digital Marketing as a Strategy of E-Governance in Sri Lanka: Case study of Sri Lankan Hospitality Industry** 1
Devaka Punchihewa, Kennedy Gunawarden, DAC Silva , *Srilanka*

2) **ICT and Society: An overview** 12
Prof. Dr. Markande Madan Rambhau
Gandhi College, Kada, Tal. Ashti, Dist. Beed.

3) **Policy Regulations In E-commerce Sector- Critical Analysis of FDI Guidelines For Marketplace Model** 20
Aakash Ashok Kamble, Dr. Shubhangi Walvekar

4) **E-governance Policy In Maharashtra State: An Overview** 30
Ms. Arati Manik Nishantrao, Aurangabad

5) **E- Governance: Impact on corruption,** 36
Hrishikesh S. Kakde,
Sanjay V. Sarkate, Jalna

6) **Wounded Information System in Yemen Civil War: A Case Study** 45
Hani Haidara Omer,
Dr. Prasad S. Madan, Aurangabad

7) **Talent Management System & E-governance as a Tool for successful Businesses** 48
Ms. Jyoti Munde, Aurangabad.

8) **Introduction of E-Governance and E-Governance Standards** 52
Juie Alte , Aurangabad

9) **ICT and Indian Trade** 59
Dr. Vikas Choudhari

10) **A Framework & Implementation Strategy of M-goverence In India** 64
Miss. Ozalwar Monika M. , Nanded

11) **E-goverence In India** 72
Dr. Ganesh N. Kathar, Ms. Sanjivani N. Salvi, Aurangabad

12) **Comparing E-government Development between UAE and USA based on United Nations E-government Indicators** 81
Afrah Abdullah Ali Khamis Afrah A. A. Khamis
Abdulmalik Abdullah Ali Al-AsadiAbdulamlik A. A. Alasadi

13) **Role of e-Governance in Agricultural Development** 97
Prof. Dr. S. D.Talekar, Partur
Yogita Shitole, Aurangabad

14) **Prospects & Changes Before E-Governance in India** 105
Prof. Dr. Subhash M. Vadgule, Sengaon, Dist. Hingoli

15) **E-Governance and Change Management** 118
Dr. B. N. Mutkule, Beed

16) **E-governance Barriers Through Effective Human Resource Management** 130
Ms. Deepmala R. Biradar, Aurangabad
Dr. Abhijit Shelke Professor, Aurangabad

17) **E-Governance: An Effective Tool in Community Industry Services** 141
Dr. Dalbir Singh Kaushik, Rohtak, Haryana

18) **Impact of E-Governance Transperancy and Economic Growth in India** 150
Mr. Prashant Poojari, Aurangabad

19) **Challenges before E-Governance and Indian Rural Development** 159
Dr. Vanjari Sandip Bhasuaheb, Aurangabad

20) **Challenges before E-Governance and Indian Rural Development** 164
Mrs. Harshali Patil, Aurangabad
Dr. A. B. Kharpas, Aurangabad

21) **E-Governance and Banking Sector** 193
Mr. Sanjay Ramraje, Pune
Dr. Maniram K. Dekatet, Mumbai

22) **Success of E-governance with Rigidness in Literacy of human being** 202
Smita Dixit, Aurangabad

23) **Impact of E-governance on Corruption: An Overview** 210
Mr. Sangapal Prakash Ingle, Aurangabad

24) **Convergence of Corporate Social Responsibility and Corporate Governance** 215
Prof. Sachin Deshmukh, Pune
Dr. Shivaji Madan, Jalna
Dr. Vijay Dhole, Pune

25) **Online banking – An effective tool for countrymen** 232
Ms.Vijayta Kaushik, Rohtak, Haryana

26) **E-Governance Challenges & Their Resources** 237
Manoj Banswal, Aurangabad
Dr. Abhijeet Shelke, Aurangabad
Sagarsingh K. Pawar, Jalna

27) **E-Governance in Rural India**
Dr. S. D. Talekar
M. P. Pagare, Jalna 247

28) **Smart Cities and Role of E-Governance: A comparative study & Developed and Developing Countries in India** 252
Mrunalini D. Dodkey, Nashik
Dr. Abhijeet Shelke, Aurangabad

29) **Role of E-Governance in Rural Development in the State of Maharashtra** 261
Dr. R. S. Wanare, Aurangabad

30) **Role of E-Governance in Rural Development** 266
Dr. Manik S. Waghmare, Kannad, Dist. Aurangabad

31) **Role of E-Governance and Human Resource Management Practices in Municipal Councils for Marathwada Region** 275
Miss. Ujgare Manisha Bhimrao, Aurangabad
Mrs. Patil Harshali, Aurangabad

32) **Role of E-Governance in Rural Development of India** 285
Hoke A. K.
Kulkarni M. K. , Majalgaon Beed

33) **A Study of E-Governance in Rural India** 293
Dr. M. B. Biradar, Jafrabad, Jalna

34) **E- Governance: Opportunities and Challenges** 297
Ms. Archana. M. Pandagale
Dr. A. P. Borade, Aurangabad

35) **Impact of Demonetization on E-Commerce with Special Reference to Life Insurance Sector in India** 302
Rajesh R. Gawali, Pune
Dr. R. P. Patil, Jafrabad, Dist. Jalana

36) **Knowledge Management and Organizations' Performance** 308
Dr. Ganesh N. Kather Abdulaziz Bahashwan, Aurangabad

37) **E-Governance : An overview** 316
Prof. S. L. Kotkar, Jalgaon

38) **Growth and Development of E-Governance in India** 322
Sarwade C. W. , Pune

39) **E-Governance for Rural Development in India** 327
Professor Dr. Ambhore Shankar B. , Jalna

40) **E-Commerce and Its Impact on Indian Society** 331
Dr. Kishor L. Salve, Aurangabad.
Dr. Satish Manikrao Dhoke, Jalna

41) **E-Governance and Rural Development** 335
Dr. Karad Bhalchandra Gopinathrao, Beed

42) **E- Commerce: An Overview** 339
Dr. Bhor J. R., Pune

43) **Role of E-Governance in Rural Development** 346
Prin. Dr. H. G. Vidhate, Beed

44) **E-Governance and Rural Economy** (with Special Reference to Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Scheme) 356
Ms. Sharda P. Bhudhwant, Aurangabad.
Dr. Somani Praveen, Aurangabad

45) **An Overview of IT Governance** 363
Dr. Kailas Arjunrao Thombre, Aurangabad

46) **E- Business Potential for SMEs**
Dr. Uttam V. Panchal, Aurangabad. 372

47) **E-Governance : A Pathway to Digital Democracy**
Dr. Pramod Deo, Aurangabad 377
Dr. Hemchandra Deshmukh, Aurangabad

48) **Emergence of Electronic Government**
Dr Memon Ubed, Aurangabad 384

49) **E-Governance and Cultural Diversity at Workplace and Its Impact on Human Resource Management Practices in an Indian Context** 392
Mr. Makrand Deshpande, Aurangabad
Mr. Ravideep singh chhabda, Lt. Colonel, EME, Batallion, Indian Army

50) **Application and challenges of E-governance**
Keshav Lengare, Osmanabad 396

51) **A Study of E-Governance and Green Marketing**
Dr. Sanjay Aswale, Omerga 406
Asha Shinde (Karbhar), Pune

52) **A Study of E-Governance and Green Marketing**
Dr. Sanjay Aswale, Omerga 413
Asha Shinde (Karbhar), Pune

53) **E-Governance: A Move to Better Governance**
(with reference to Telangana) - S. Sairam, Nizamabad 422

54) **An Overview of Supply Chain Management with reference to E-governance practice in Retail and Manufacturing Industries** 426
Dr. D. M. Khandare, Nanded
D. B. Magar, Aurangabad
K. R. Dachawar
S. S. Bajaj

55) **A Study of Adoption of Cashless System by Elderly citizen in Marathwada region of Maharashtra State in India** 439
Mrs. Pooja A. Kulkarni, Pune
Dr. S. A. Ghumare, Aurangabad

Role of E-Governance in Rural Development

30

Dr. Manik S. Waghmare,
Research Guide & Head, Department of Commerce
Shri. A. B. College Deogaon (R), Tq. Kannad, Dist. Aurangabad

Abstract: Development in every sector becomes compulsory for our county and it today's scenario focusing on the use of Electronic governance for faster development. Rural part is the big part of our county and the real India is situated in Rural India said by Mahatma Gandhi. The Rural part of India is facing many problems from the independence of India like Poverty. Illiteracy, unemployment, lack of proper environment for living, less education, financial problem etc. Efficient and effective development is possible through use of E-governance and Now government is successfully using it as the main weapon of development in different sector in rural areas. The article is focusing on the important role of E governance for rural development with pointing out the recent steps taken by the government for development of rural areas with the help of Electronic governance.

Key Words: E-Governance, Rural Development, ICT.

Objectives of the study:

The objectives of the study are:

1. To understand the impact and use of E-Governance for Rural Development
2. To focus on the E-Governance Scheme and Plans of Government for Rural Development

Research Methodology:

In the present research work data is contributed by using Secondary sources. Various books, journals, research papers & Internet used to collect secondary data.

1.1 Introduction:

E-Governance refers to how managers and supervisors make use of IT and Internet to perform their functions of supervises, arrangement, organize, coordinate, and recruitment successfully, it also means communicating national or local government information and services through the Internet or other digital means to common people or businesses or other governmental agencies.1

E-governance providing number of benefits it is convenient, efficient, transparent,

accountable, paperless, cost saving and it is connecting users and government and also provides easy access to user's online2and it is a one-stop Internet gateway to important government services. E-government facilitating in different manner like it is providing relevant government information in electronic form to the common people at right time by improved service delivery. People are empowered with recent, current information without the bureaucracy; improving productivity and cost savings with performing business with suppliers and customers of government; and participating in public plan decision-making.Rural development receiving increasing consideration of the governments. In the Indian framework rural development assumes unique significance for two key reasons first about two thirds of the population still lives in villages without not much progress remaining them still backward and Second, the backwardness of all the rural sector would be a major hurdle in the overall progress of the economy.

The all India Rural Credit Review Committee in its report warned "If the fruits of development continue to be deprived to the large sections i.e. rural community, and prosperity accrues to some section, the tensions created .will affect on social and economical process of orderly and peaceful change in the rural economy but also disturb the national development It was therefore felt necessary to national affords to set up agricultural production and making proper arrangements for the distribution of fruits of development to the rural weak and backward section of society.

1.2 Concept of E-Governance:

E-governance is a means to success for excellent governance. It is giving the facilities to the common people to get benefits from the services provided by the Government. E-governance motivating people to adopt the new changes and as result there is considerable increase in the percentage of individuals using the Internet in India from 0.53% in 2000 to 15.10% in 2013.4

E-Governance is an application or use of electronic resources for interacting between government and citizens and government and business, for simplifying and improving democratic government and business aspects of governance. Number of developing countries facing the similar problem like problems of inefficiency in providing and delivering

better services, lack of proper internal and external communications, hurdles in communication. The use of ICT (Information and Communication Technology) is the solution for all the above problem but the Civil society organizations often lack the capacity to use ICT (Information and Communication Technology) effectively which can be powerful tool for preventing the corruption also.[4]

India is a country of villages and As said by Mahatma Gandhi real India lives in villages it is very important to develop and sustain the overall prosperity, growth and development in the global competitive regime. The National E-governance plan (NEGP) seeking to lay the foundation with various projects focusing from the grass-root levels, and providing momentum for long-term e-governance within the country. Development is the direction for rural e-Governance applications implemented in the recent few years it has been representing and communicating the importance of Information and Communication Technologies (ICT) in the concerned areas of rural development. Without a doubt, some of the schemes introduced in rural India have improved the government services greatly.

The different E-Government project implemented through the country are properly working and generating the result in different sector the project like Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act (MGNREGA), Warna Project in Maharashtra, Online Income Tax, Online Central Excise, Unique ID and E-office successfully developing the respective areas and contributing to country's economic development. At state level the various rural E-governance projects such as SETU Project in Maharashtra etc, projects by providing excellent services and saving time and money of common people as well as of government and are contributing to the socio- economic development of rural India. As ICT is a significant instrument in E-Governance and Rural Development, there is compulsory need of appropriate infrastructure and design for proper functioning.[5]

Table No. 1

E-transactions for government services

Total e-transactions

Year	Total e-transactions
2016	9,75,40,23,055
2015	6,75,14,80,673
2014	3,57,69,49,576

E-transactions in 2016	
December	7,31,60,678
November	93,58,06,049
October	98,22,25,375
September	80,73,60,567
August	74,25,30,864
July	83,08,56,558
June	1,17,59,31,507
May	1,15,47,42,280
April	76,08,46,741
March	67,43,22,535
February	73,62,79,433
January	87,99,60,468

Source: www.etaal.gov.in

Above Table No. 01 gives the information about E transaction taken place for various government services and as the figures mentioned above The total number of electronic transactions taken place in the country in 2016 has crossed Rs 1,000 crore, averaging near about Rs2.8 crore payments every day, reported by the government web portal eTaal. The portal also given the report that e-transaction statistics of national and state level e-governance projects Electronic transactions increased by 33 per cent from last year's Rs 760 crore. From 2014 mass increase in the number of e-transactions undertaken by the e-governance projects. The total e-transactions were around Rs 350 crore in 2014, and increased to Rs 760 crore in 2015". The month of November registered 93.58 core Electronic transactions for government services. The report taking into account all electronic transactions providing public services from the government to common people from different sectors they are agriculture, health, transportation, telecommunication and Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act (MNREGA).6

1.3 Rural Development Problems :

Robert Chambers a well known researcher of Rural Development describing the rural progress as "Rural progress is a planning to make possible a definite group of people they are poor rural women and men, gaining for themselves and their children more of what they want and need. It is involving, helping the poorest among these who are seeking a livelihood in the rural areas to demand and control more of the benefits of rural development. The group includes small scale farmers, tenants and the landless.7 The following are the specific problems becoming hurdles for Rural Development:8

A. Problems according to People:

- Conventional way of thinking.
- Poor understanding.
- Less education for understanding the developmental efforts and new technology.
- Poor psychology and scientific orientation.
- Short of confidence.
- Less awareness.
- Existence of unfelt needs.
- Individual ego.

B. Agricultural related problems:

- Not having expected awareness, knowledge, skill and attitude.
- Less availability of inputs.
- Poor marketing facility and Infrastructure

Insufficient staff and services.

Multidimensional responsibilities to extension personnel.

Undersized size of land holding.

Division of land.

Reluctance to work and stay in rural areas.

C. Infrastructure related problems:

Poor infrastructure facilities like water, electricity, transport, educational institutions, communication, health, storage facility etc.

D. Economic problems:

Adverse economic condition to adopt high cost technology.

High cost of inputs.

Deprived rural industries

E. Social and Cultural problems:

Different Cultural norms and traditions

Heavy Conflict within and between groups, religions, castes, regions languages.

F. Leadership related problems:

Maximum leadership among all in the hands of inactive and unskilled people.

Interest of leaders.

Influenced political will

G. Administrative level problems:

No attention at all level, lack of Planning. Earlier, majority of the programmes were planning based on top to bottom approach and were target oriented.

Increasing Political interference.

Lack of motivation and interest at officer level.

Not ready to work in rural area.

Inappropriate utilization of budget.

1.4 E-Governance Developmental Schemes for Rural Development: 9

Government of India started different schemes from the point of view of the development of the Rural areas and equally distributing the fruits of the development. The following are some of the successful E-Governance based schemes focusing on the important role E governance for Rural development.

Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act (MGNREGA)

The popular scheme which guaranteeing hundred days of wage-employment in a financial year to a rural family unit whose adult **member's unpaid assistant to do unskilled manual** work. The Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act 2005 aiming at enhancing the living of people and providing security in rural areas by guaranteeing the employment in a financial year. The Central government in association with the state governments has been adding different e-governance initiatives in this scheme.

E-Governance in Indira Awaas Yojna

Indira AwaasYojana (IAY) was launched in May 1985 as a sub-scheme of the JawaharRozgarYojana. The scheme started for specially meeting the housing needs of the rural poor people and it is being implemented as an independent scheme from 1 January 1996. The Indira Awaas Yojana aiming at helping to the rural people living below the poverty-line belonging to SCs/ST category and other free bonded labourers and non-SC/ST categories working in construction of dwelling units and up gradation of existing unserviceable kutcha houses by providing grant-in-aid. From 1995-96, the IAY includes widows or next-of-kin of defence personnel killed in action and benefits of IAY extended to them as well as to the ex-servicemen and retired members of the paramilitary forces as long as they are fulfilling the normal eligibility conditions of the Indira Awaas Yojana.One major initiative taken by the government by including new e-governance systems in the scheme. It is including different work like AWAAS Soft, Lodge Public Grievances, and Check Redressal of Grievance Complaint Register

Council for Advancement of Rural Technology:

By combining two agencies, the 'Council for Advancement of Rural Technology' (CART) and People's Action for Development in India (PADI) CARPART was formed. It is an autonomous body registered under the Societies Registration Act 1860, and it is carrying out its work under the support of the Ministry of Rural Development, Government of India. This agency mainly promoting and focusing for the rural development in India, assisting near about 12,000 voluntary organizations across the country in implementing a wide range of development initiatives.

National Social Assistance Programme (NSAP)

The National Social Assistance Programme (NSAP)which came into effect from 15th August, 1995 representing a significant step towards the fulfillment of the Directive Principles in Article 41 of the Constitution. The programme is introducing a National Policy for Social Assistance for the poor people and aiming at ensuring the least national standard for providing social assistance in addition to the benefits that states at present

providing or might provide in future.

E-Governance in NSAP including the following schemes:

______Indira Gandhi National Old Age Pension Scheme (IGNOAPS)

Indira Gandhi National Widow Pension Scheme (IGNWPS)

______Indira Gandhi National Disability Pension Scheme (IGNDPS)

Online information about different scheme and projects are made available by this project like beneficiary abstract, annual progress reports, data gap report, report on PDAs created, report on linking of beneficiary to PDA, monthly progress reports , area-wise disbursement report, month-wise disbursement report, pass book for pensioner, beneficiary search, category-wise disbursement report, released pension amount report, acquaintance abstract, funds receipts and expenditure, fund utilization and disbursement etc.

Pradhan Mantri Gram Sadak Yojana

The PradhanMantri Gram SadakYojana (PMGSY)was launched by the Govt. of India mainly for providing connectivity to unconnected rural backward people and areas as part of a poverty decrease policy.Government of India is willing to set high and uniform technical and management standards and facilitating policy development planning at State level for the purpose to ensure sustainable management of the rural roads network.

Swarnjayanti Gram Swarozgar Yojana

Swarnjayanti Gram SwarozgarYojana (SGSY) is focusing on the poor families and having the aim to bring those (Swarozgaries) above the Poverty Line by ensuring considerable continued level of income over a period of time. This objective achieved by organizing the rural poor people into Self Help Groups (SHGs) through the process of social mobilization, their training and capacity building and provision of income generating assets. The Swarnjayanti Gram Swarozgar Yojana is keeping the approach for helping to the poor to build their self-confidence through community action, Interacting group meetings and taking collective decision making enable them to identify and priorities their needs and resources. This process is ultimately leading to the strengthening and socioeconomic empowerment of the rural poor class as well as improving their collective bargaining power.

Rural Business Hubs

Rural Business Hubs (RBH) is aiming to remove rural poverty and creating employment opportunity speciallyin rural India.The Ministry of PanchayatiRaj adopted the goal of "Haat to Hypermarket" as the vital objective of the Rural Business Hubs. The initiative taken aimed at moving from more livelihood support to promoting rural wealth, growing rural non-farm incomes and augmenting rural employment.

Backward Regions Grant Fund (BRGF)

The Backward Regions Grant Fund is specially designed to remove the regional imbalances in development process. This fund is providing financial resources for supplementing and converging existing developmental inflows into 250 identified districts, the purpose behind this is to:

Bridging the significant gaps in local infrastructure and other development requirements that are not being adequately met through existing inflows.

Strengthening to Panchayat and Municipality level governance with more appropriate capacity building in to them , to facilitating participatory planning, decision making, implementation and monitoring, to reflect local felt needs,

By Providing professional support to localise bodies for planning, implementation and monitoring their plans.

1.5 Other Rural Development schemes that includes e-Governance:

Government has undertaken many projects for the benefit of rural India. Many of these projects have been successful implemented but Still more initiatives can be taken for making proper awareness and distribution of fruits of development and improving current one systematically for further keeping in mind the problems being face by the people in accessing these kind of projects. The few selected projects are discussed below:

Gyandoot: It is a government initiative to start the project. It is Government to citizen intranet based project launched first time in Thar district of Madhya Pradesh on 1st January 2000. It is using of Information Technology for benefiting of rural areas where people is not having the facilities as those in cities. For making the changes 21 soochnalayas were set up which are equipped with computers and each of these soochnalayas/kiosks covering about 20,000- 30,000 villagers. The project Gyandoot was given the 'Stockholm Challenge IT Award' in 2000 in the 'Public service and democracy' category.10

Bhoomi: The Bhoomi is an initiative of Karnataka government to computerize land records because "Land record forms are the base for all land reforms and therefore regular online updating of land records is essential and project BHOOMI has done it."TheRecords of 6.7 million farmers dealing with 20 million records in Karnataka state have been computerized. The Government Revenue department along with NIC successfully implemented this computerization of land records. A farmer is requiring information of his official land records for many purposes like for getting loan on crop or purchase of any asset from any financial institution or for any legal dispute, etc.

The Problems occurs with the earlier manual systems were registers of land record are not properly maintained, or not very legible lead to its computerization. Now with the help of BHOOMI farmer can now readily get their land record from land record kiosks available around there area.11

E-Choupal: One of the governments undertaking ITC Ltd had taken the initiative to formed this E-Coupal. This project is a successfully implemented and given lot of benefits to farmers. In this project a trained villager called as Sanchalak was appointed to run the ITC internet kiosk. E-choupal containing information about the latest farming techniques, , crop insurance, weather forecasts etc. through which the farmers remain well informed.12

Conclusion:

Rural Development will affect on the countries overall development process because of the use of E governance. The changing technology has given the tremendous advantage of reaching up to the masses effectively and efficiently with less time and money. The use of information technology is increasing and Government have taken several initiatives by increasing the use of E-Governance and making continuous awareness among the people to accept the changes. The rural part of the country now accepting the changes and changing themselves. Thus the Role of E Governance for development of Rural Part becomes indispensable and vital.

References:

1. SCJ Palvia, www.iceg.net
2. Nidhi Srivastava, International Journal of Computer Science and Information Technologies, Vol. 6 (1) , 2015, 741-744
3. Report of the All India Rural Credit Committee, New Delhi, 2003
4. ITU World Telecommunication, ICT Indicators database, www.itu.int/en/ITU-D/Statistics/Pages/stat/default.aspx
5. Kumar Saha, "Role Of ICT in E-Governance and Rural Development", Sep 11, 2014.
6. www.etaal.gov.in
7. Robert Chambers, Rural Development in India, Oxford University Press, 1987
8. Dr. Narendrasinh B. Chauhan, "Rural Development", www.aau.in.
9. India.gov.in
10. www.dha.nic.in/GYANDOOT.htm
11. bhoomi.karnataka.gov.in/home.aspx
12. www.itcportal.com/sustainability/embedding-sustainabilityin-business.aspx

...legde shared through books

Rural Marketing in India	Anjali Publications, Aurangabad, March 2000
Globalization and Indian Economy, issues, strategies& perspective (Edited)	Aparant Publication House Aurangabad March 2002
Agricultural Marketing in India	Vaicharik Prakashan Kendra, Worli (Mumbai) March 2006
Globalization and foreign direct investment in India (Edited)	Asian computers and publishers, Aurangabad March 2007
Business environment	Sagar offset printers and designers, Aurangabad, March 2008
Disinvestment in Indian industries	Vaicharik Prakashan Kendra, Worli (Mumbai), March 2010 (ISBN)
Supply chain Management	Paar Publishing co. Daryaganj New Delhi -2010 (ISBN)
Retail Management	Paar Publishing co. Daryaganj New Delhi -2010 (ISBN)
Micro finance for socio-economic development (Edited)	National conference proceeding, 12-13 March-2010 (ISBN)
E-Commerce text and cases	A.K. Publishers Daryaganj New Delhi April - 2010 (ISBN)
Emerging trends in Commerce and Management	Pacific Publication house Daryaganj New -Delhi- May 2011
Public sector and disinvestment policy	Universal publishing house New Delhi Dec -2014
Jang Pahile Jawalune (Marathi)	Chetan Publications, Aurangabad, 23 January 2015

...tional/ National Journal Editorial Moard Member

...itor	Title of the Journal
...torial Board Member	ISSN- Journal of Management and Economics, University of defence, Brno 66210, The Czech Republic (2013)
...ef Editor	ISSN- International journal of Management and Economics, Chetan Publications Aurangabad (2012)
...ciate Editor	ISSN- Journal of Management Review, Aurangabad (2010)
...orial board member	ISSN- Journal of Agricultural Scientists, IInd Agri -Horticulture society, Muzaffarnagar, U.P. (2009 -10)
...orial board member	ISSN Journal of international business studies [illegible]
...ditor	ISSN Excel Journal of Engineering, Technology and Management (2011)
...Editorial Board	[illegible]

Chetan Publications Aurangabad- India
...30VA, "Vaishwabhu", Sangamitra Park, Vasundhara Colony, Bhavsinghpura Road, Near Akanksha Apartment, Post Cantt. Aurangabad-431004, Maharashtra, India
Email: Maharashtra.commerce@gmail.com——submissionjme@gmail.com
...91-09423780549, 09021705805-0240-2371705-WEB- www.walmiksarwade.com-
www.chetanpublication.com

International Journal of Management and Economics Special Issue

International Journal of Management and Economics

Special Issue

International Conference on
E-governance for Emerging India
17th & 18th February- 2017

Vol.I No.16 February 2017

CHETAN PUBLICATIONS, AURANGABAD- INDIA

Professor Sarwade W. K.
Academic Co-ordinator, Faculty of Commerce
Director, Department of Management Science
Former Head, Department of Commerce
Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad- 431002

EDITORIAL BOARD

Prof. Natalya (Natasha) ...and Director, Business Programme Cameron School of Business, ...University of ST. Thomas Houston, Texas	Dr. Ravichandran Moorthy Professor of Commerce and Management National University, Malaysia	Prof. M.W. Wikramarachchi Emeritus Professor Faculty of Commerce and finance Sri Jaivardhanepura University Srilanka
Prof. S.S. Thrikawala ...t. of commerce and Financial Mgt. University of Kelaniya, Srilanka	Prof. Ferdous Farazi Bisti School of Asia-Pacific studies Waseda University, Tokyo	Prof. Seperantasofia Milancoaici Western University Vasilegoldsarad Romania
Prof. Chan Hua Susan Lin ..., Faculty of Business Management, ...iwan Shoufu University, Taiwan	Prof. Akbar Salehi Tarbiyat Moallem University, Thehran Iran	Prof. Vernekar Sachin Dean, Faculty of Management science, Bharti Vidyapeeth University Pune
Prof. Frantisek Bozek University of Defense Kounicova, Czech Republic	Dr. Arun Chainit Phranakhon Rajabhat University Bangkok, Thailand	Dr. Jacobo Feas Professor faculty of Management and Finance Santiago University Spain, Europe

ADVISORY BOARD

Prof. P. Purushothaman Former Dean, Faculty of Commerce Osmania University, Hyderabad	Prof. Venkatratnam Former Vice-Chancellor Kakatiya University warangal	Dr. Mwafaq M. Dandan Professor of Economics and Finance, Ajloul University Kingdom Saudia Arabia
Prof. Yong Chen Chen Professor of Commerce University of Malaysia, Kulal Lumpur Malaysia	Prof. Pramola Krish Dean, School of Commerce and Economics University Kebangsaan, Malaysia	Prof. Akbar Ali Khan Former Vice-Chancellor Telangana University Nizamabad (A.P.)
Professor Dr. E.B. Khedkar Vice chancellor Ajeenkya D.Y. Patil University, Pune	Prof. K. Ramkrishna Reddy Vice-Chancellor Shri Krishna Devaraya University Anantpur	Dr. Ratapom Deesomsak Professor in Finance Durham Business school Durham University DHI- 3b U.K.
Prof. Michael Graff Department of Economics School of Humanities and Social ...iences, Jacobs University Breming Gmbh Grman Germany	Prof. Ramesh Agadi Dean & Director, Faculty of Management Science Gulbarga University Gulbarga	Prof. B. Ramesh Past President, All India commerce conference Former Dean, Faculty of Commerce, University of Goa

...teenth Edition
...y-2017
...d in Aurangabad-India
...O: 2231-4687
...n Publications, Aurangabad
...No.: 17347361/2011

• Chief Editor
Professor. W. K. Sarwade
Copyright©Dr. Chaitali Sarwade, 2014
All rights reserved. No part of this journal may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording, or otherwise without, the prior written permission of the Author.

• Publisher & Printer
Chetan Publications Aurangabad
Plot No. 30A,"Vaishwath."
Sangamitra Park,Vasundhara Colony, Bhavsinghpura Road, Post Card, Aurangabad—431002

• Subscription
(annually) Rs. 3000/-
Four issues, Rs. 500/-
postal charges extra
Foreign subscriber $ 500

International Journal of Management and Economics

International Journal of
Management and Economics

Contents

1) **Digital Marketing as a Strategy of E-Governance in Sri Lanka: Case study of Sri Lankan Hospitality Industry** — 1
Devaka Punchihewa, Kennedy Gunawarden, DAC Silva , *Srilanka*

2) **ICT and Society: An overview** — 12
Prof. Dr. Markande Madan Rambhau
Gandhi College, Kada, Tal. Ashti, Dist. Beed.

3) **Policy Regulations In E-commerce Sector- Critical Analysis of FDI Guidelines For Marketplace Model** — 20
Aakash Ashok Kamble, Dr. Shubhangi Walvekar

4) **E-governance Policy In Maharashtra State: An Overview** — 30
Ms. Arati Manik Nishantrao, Aurangabad

5) **E- Governance: Impact on corruption,** — 36
Hrishikesh S. Kakde,
Sanjay V. Sarkate, Jalna

6) **Wounded Information System in Yemen Civil War: A Case Study** — 45
Hani Haidara Omer,
Dr. Prasad S. Madan, Aurangabad

7) **Talent Management System & E-governance as a Tool for successful Businesses** — 48
Ms. Jyoti Munde, Aurangabad

8) **Introduction of E-Governance and E-Governance Standards** — 52
Juie Alte , Aurangabad

9) **ICT and Indian Trade** — 59
Dr. Vikas Choudhari

10) **A Framework & Implementation Strategy of M-goverence In India** — 64
Miss. Ozalwar Monika M. , Nanded

11) **E-goverence In India** — 72
Dr. Ganesh N. Kathar, Ms. Sanjivani N. Salvi, Aurangabad

12) **Comparing E-government Development between UAE and USA based on United Nations E-government Indicators** — 81
Afrah Abdullah Ali Khamis Afrah A. A. Khamis
Abdulmalik Abdullah Ali Al-AsadiAbdulamlik A. A. Alasadi

13) **Role of e-Governance in Agricultural Development** — 97
Prof. Dr. S. D.Talekar, Partur
Yogita Shitole, Aurangabad

14) **Prospects & Changes Before E-Governance in India** — 105
Prof. Dr. Subhash M. Vadgule, Sengaon, Dist. Hingoli

Assistant Professor
Asramiji ... College
Deogaon (R.) Tq. Kannad, Dist. A'bad.

74

Professor Sarwade W. K

15) E-Governance and Change Management 118
Dr. B. N. Mutkule, Beed

16) E-governance Barriers Through Effective Human Resource Management 130
Ms. Deepmala R. Biradar, Aurangabad
Dr. Abhijit Shelke Professor, Aurangabad

17) E-Governance: An Effective Tool in Community Industry Services 141
Dr. Dalbir Singh Kaushik, Rohtak, Haryana

18) Impact of E-Governance Transperancy and Economic Growth in India 150
Mr. Prashant Poojari, Aurangabad

19) Challenges before E-Governance and Indian Rural Development 159
Dr. Vanjari Sandip Bhasuaheb, Aurangabad

20) Challenges before E-Governance and Indian Rural Development 164
Mrs. Harshali Patil, Aurangabad
Dr. A. B. Kharpas, Aurangabad

21) E-Governance and Banking Sector 193
Mr. Sanjay Ramraje, Pune
Dr. Maniram K. Dekatet, Mumbai

22) Success of E-governance with Rigidness in Literacy of human being 202
Smita Dixit, Aurangabad

23) Impact of E-governance on Corruption: An Overview 210
Mr. Sangapal Prakash Ingle, Aurangabad

24) Convergence of Corporate Social Responsibility and Corporate Governance 215
Prof. Sachin Deshmukh, Pune
Dr. Shivaji Madan, Jalna
Dr. Vijay Dhole, Pune

25) Online banking – An effective tool for countrymen 232
Ms.Vijayta Kaushik, Rohtak, Haryana

26) E-Governance Challenges & Their Resources 237
Manoj Banswal, Aurangabad
Dr. Abhijeet Shelke, Aurangabad
Sagarsingh K. Pawar, Jalna

27) E-Governance in Rural India
Dr. S. D. Talekar 247
M. P. Pagare, Jalna

28) Smart Cities and Role of E-Governance: A comparative study & Developed and Developing Countries in India 252
Mrunalini D. Dodkey, Nashik
Dr. Abhijeet Shelke, Aurangabad

29) Role of E-Governance in Rural Development in the State of Maharashtra 261
Dr. R. S. Wanare, Aurangabad

30) Role of E-Governance in Rural Development 266
Dr. Manik S. Waghmare, Kannad, Dist. Aurangabad

31) Role of E-Governance and Human Resource Management Practices in Municipal Councils for Marathwada Region 275
Miss. Ujgare Manisha Bhimrao, Aurangabad
Mrs. Patil Harshali, Aurangabad

32) Role of E-Governance in Rural Development of India 285
Hoke A. K.
Kulkarni M. K., Majalgaon Beed

33) A Study of E-Governance in Rural India 293
Dr. M. B. Biradar, Jafrabad, Jalna

34) E- Governance: Opportunities and Challenges 297
Ms. Archana. M. Pandagale
Dr. A. P. Borade, Aurangabad

35) Impact of Demonetization on E-Commerce with Special Reference to Life Insurance Sector in India 302
Rajesh R. Gawali, Pune
Dr. R. P. Patil, Jafrabad, Dist. Jalana

36) Knowledge Management and Organizations' Performance 308
Dr. Ganesh N. Kather, Abdulaziz Bahashwan, Aurangabad

37) E-Governance : An overview 316
Prof. S. L. Kotkar, Jalgaon

38) Growth and Development of E-Governance in India 322
Sarwade C. W., Pune

39) E-Governance for Rural Development in India 327
Professor Dr. Ambhore Shankar B., Jalna

40) E-Commerce and Its Impact on Indian Society 331
Dr. Kishor L. Salve, Aurangabad.
Dr. Satish Manikrao Dhoke, Jalna

41) E-Governance and Rural Development 335
Dr. Karad Bhalchandra Gopinathrao, Beed

42) E- Commerce: An Overview 339
Dr. Bhor J. R., Pune

43) Role of E-Governance in Rural Development 346
Prin. Dr. H. G. Vidhate, Beed

44) E-Governance and Rural Economy (with Special Reference to Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Scheme) 356
Ms. Sharda P. Bhudhwant, Aurangabad
Dr. Somani Praveen, Aurangabad

45) An Overview of IT Governance 363
Dr. Kailas Arjunrao Thombre, Aurangabad

e sign already emerging of this underlying tension is the use of m-government systems playing pranks, such as hoax messaging, encouraged by the anonymity that many bile devices (which are often unregistered) offer.

Trust/security: if m-government is to encompass m-payment systems or other sactional public services, then it must have good security and must be trusted. As yet, e is still a credibility gap to be crossed for many mobile device users.

Data overload: mobile devices increase the pressures of a world in which users are manently connected: "always on". These permanent connections increase the number messages circulating and can create a blizzard of communications - some valuable, ne not - in which public service communications can come to be devalued or lost.

nclusion

e overall study the M-Gov is very useful or very important concept or part of the E-ernance. Some challenges are ignore then the future of m-Government throughout the d seems extremely bright and the changes are welcome. Efforts are on towards verting all government services from e-Services to m-Services, as mobile devices e into the hands of almost every individual in the society. Thus the future seems bright requires tremendous upliftment of the technical infrastructure, socioeconomic ptance, security and privacy considerations, Implementation of legal standards epted globally and the challenges of services' unification.

erences:

Easton, Jaclyn, (2002), Going Wireless: transform your business with wireless ile technology, HarperCollins.
Bassara, M, Wisniewski and P. Zebrowski; USE-ME.GOV- Usability-driven open orm for mobile government; Proceedings of Business Information Systems (BIS-2005)
K. Binti, M. Noor, R. Bagga and K. VijayaSekhar; m-Governance future in Indian ext; CSI Communications, October 2011.
AngelaYu; Wireless Unbound: The Surprising Economic Value and Untapped ntial of the Mobile, McKinsey and Company, December 2006.
http://www.mgovworld.org/libra/mgovernance/papers/make-m-government-egral- part-of-e government

●●●

E-goverence In India

- Dr. Ganesh N. Kathar
Research Guide ,A.B.CollegeTqKannad,Dist Aurangabad.
- Ms. Sanjivani N. Salvi
Research Student , A.B. College, Tq Kannad, Dist. Aurangabad

Abstract- It is extensively believed that information and communication technology (ICT) enables organizations to compact costs and enlarge capabilities. Technology in the system of the government and for the betterment of the society, It provides solutions for e-Governance implementation and its issues. E-Governance is an important part of ICT. It is the nearly everyone recent trend in the domination enlargement all over the world. E-Governance is defined as "the public sector's use of information and announcement technology with the aim of improving information and provide services to the citizen and helps them in decision making process to make management more accountable, obvious and effective. This literature review is about applications and issues of E-governance.

Introduction

ICT is "Information and Communication Technologies." ICT refers to technologies that make available right to use to information throughout telecommunications. It is parallel to Information Technology (IT), but focuses primarily on announcement technologies. ICT having number of communication channels like wireless networks, cell phones, Internet and other. The rapid development and implementation of the Information and Communication Technology is transforming every aspect of human life.

According to Robert E. Davis "Developing and implementing IT governance design effectiveness and efficiency can be a multidirectional, interactive, iterative, and adaptive process". ICT has opened up new avenues and opportunities for growth and advance around the world, ICT have a valuable potential to help meet good governance goals in world. It spread information to the user for widen their choices for Economic and social privileges. The E-Governance is the application of Information and Communication Technology (ICT). The word "govern" derives from the latinword "gubernare" which means "to direct, rule, guide," originally "to steer"). "Fundamental aspects of governance" are: graft, rule of law, and direction effectiveness. Other dimensions are: voice and responsibility, political instability and violence, and authoritarian burden (Kaufmann, Kraay and Zoido-Lobaton 1999). The five philosophy of sincerity, contribution, liability,

helpfulness and standardization exercise thin this framework support democratic vernance. The concept of e-government arted with the advent of government websites the early 1990s. Before the development e-vernance the status of government was rigid, atic hierarchical synchronized, at the same ne as web is energetic, smooth and fettered. E-governance navigating the social stem, through which organization can be ected, controlled. In simple words we can say

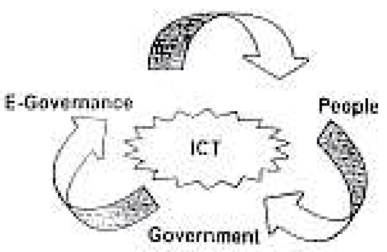

Figure: ICT

overnance is new style of leadership with new ways of deciding policy and investments, w ways of organizing, new ways of education. E-Governance has become an essential rt of any government program in India and other countries. However its application in dia is a challenging and enormous task. But the potential opportunity is large benefit are ried and can be quite important. Successful implementation of e-governance require ility and willingness to reengineer the working department the skills of organization large ale change in addition to the technical infrastructure. It includes the capacity and the llingness of the communal sector to deploy ICT for improving knowledge and information the service of the citizens (Global e-govt. readiness report 2005). The impact or tcomes of Government are better delivery of government services to citizens, improved eractions with business and industry, citizen empowerment through access to ormation, or more efficient government management. There are four basic elements in governance are:

Elements of E-governance

Research Methodology:

Secondary data:

The sources of secondary data are the reference books, research journals, websites, and libraries. Keeping the objectives of the study in view, an exhaustive study of growth of hospitality sector will be undertaken.

Apart from exhaustive reference to available literature, it included information and data collected from experts in this fields. In view of large number of

such type of business in the universe, it has been decided to carry out a sample study. Hence, the sample respondents' will be selected from these units representing different lines of activities.

Review of Literature

Dr. Giovanni Vincenti is a Lecturer for the Department of Computer and Information Sciences at Towson University, in Towson, MD. He received his Doctorale of Science in Applied Information Technology from Towson University in 2007. He has been teaching undergraduate and graduate courses for several years, letting him develop his interest in instructional technologies that range from simple learning objects as a supplement to in-person instruction, all the way to the utilization of virtual worlds in the classroom. He has been collaborating for years with James Braman, co-authoring several published works including the edited volumes titled Teaching through Multi-User Virtual Environments: Applying Dynamic Elements to the Modern Classroom and Multi-User Virtual Environments for the Classroom: Practical Approaches to Teaching in Virtual Worlds.

James Braman is a Lecturer in the Department of Computer and Information Sciences at Towson University. He earned a M.S. in Computer Science in 2006 and is pursuing a D.Sc. in Information Technology. James serves as joint editor-in-chief for the Institute for Computer Sciences, Social Informatics and Telecommunications Engineering (ICST) Transactions on E-Education and E-Learning along with Dr. Vincenti. He has published several edited books, the most recent, Multi-User Virtual Environments for the Classroom: Practical Approaches to Teaching in Virtual Worlds. He has been involved in virtual world research for several years, along with providing consulting and research services for businesses and organizations utilizing virtual worlds and augmented reality. He has also published numerous research

Applications of E-governance

articles related to affective computing, intelligent agents, computer ethics and education in virtual and immersive environments.

Applications of E-governance

These days, over 1000 e-governance services can be accessed athwart the length and breadth of the country through NeGP. Since Jan 2013, over 237 crore e- transactions have been delivered. E-Governance offers many reimbursement and recompense across the country for the government, corporate sector and society. E-Governance facilitates better delivery of government services to citizens, improved interactions with business and industry, citizen empowerment through access to information, or more efficient government management. It simplifies internal operations and improves performance of government departments while helping all sections of society to avail government services at lower cost with maximum ease of use. E-governance means that government is taking advantage of the new technology development to provide people with better government services. The basic aims of e-governance are to improve the ability of all people to participate in democracy and to enhance the efficiency and effectiveness of all kinds of government services. E-government/governance can be directly linked to the main dimensions of "good governance" (Leitner, 2003), especially. Success of e-Governance initiatives would depend on capacity building and creating awareness within government and outside it. "Robust interoperability platform is the key to successful delivery of e-governance services especially when multiple government departments are involved in catering to the needs of the same set of citizens." Kristina Markande Principal Technical Architect Product Engineering Group Infosys Technologies Limited. There are following applications:

II. E-Information & Broadcasting

Broadcasting is the distribution of video and audio content in all directions at the same time. It is a program that is transmitted over airwaves for public reception by anyone. For example radio, television, films, press and print publications. Advertising and fixed modes of communication plays an important role in helping people to access information. Users can find information about the broadcasting, neighborhood radio stations, Prasar Bharti, Doordarshan, Conditional Access System (CAS), DTH and IPTV etc and check online services provided by regime like [16]:

1. Check status of title register for fresh and duplicate cases with Registrar of Newspapers for India
2. Check online status of newspaper title registration application
3. File complaints with Press Council of India
4. Get official videos and photos of Prime Minister of India
5. Check month or year-wise press releases of Ministry of External Affairs
6. Check and search for registered titles with Registrar of Newspapers for India
7. Check press releases shared by Information and Public Relations Department of Meghalaya

III E-Agriculture

E-governance is useful to the agricultural sector. It provides products and services which are of use to the agricultural community, including farmers, livestock breeders, herders, dairy workers, agriculture extension workers, traders, scientists, middlemen, and NGOs working in the agriculture sector. There are a range of interventions that are useful for the agrarian community. For example, those aimed at increasing crop productivity, reducing crop damage due to weather and pests, improved livestock management, improved access to credit and government schemes, better market rates for farm products, providing food security, conservation of bio-diversity, reduce in use of chemicals, and access to better seed varieties and technology. The government provides online facilities for farmers like Agriculture License, Fertilizer & pesticides, Organic farming, Horticulture, seeds, soil and water conservation etc. There are some online projects based on agriculture:

1.Gyandoot: In the State of Madhya Pradesh it is an Intranet-based Government to citizen (G2c) service delivery initiative.

2. BELE: It is a web-based application with 3-tier architecture for capturing and monitoring the major activities and services.

3. AGMARKNET: It is a project approved by Department of Marketing & Inspection (DMI), Ministry of Agriculture, and Government of India.

4. SEEDNET: It is a SEED informatics network under ministry of Agriculture, Government of India. The project was started in Chhattisgarh in the month of July' 2008 for Kharif season.

IV. E-Sports

The Department of Sports under the Ministry of Youth Affairs and Sports seeks to support the development activities and programmes in the field of sports by using E-governance [4]. Users can find detailed information on the general policies, support organizations, beneficiaries, government observers, awards and awardees etc. Details of various schemes and national code against age fraud in sports are given. Information is provided on the Sports ability of India training centers in the States and Union Territories. Users need to select a state, district, regional office and

port discipline from the drop downstairs list to access in turn on the training centers of that istrict or state. There are many official websites to give information to the user: schemes of inistry of youth affair and sports, citizen charter of ministry of youth affairs and sports, formation of SAI Training center etc. In July 7, 2013, IeSF was selected as counterpart for e Electronic Sports discipline of the 4th Asian Indoor and belligerent Arts Games. This as a big breakthrough for e-Sports and the IeSF, as the branch was introduced in an lympic event for the first time.

. E-Health

ectronic-health (also written e-health) is a relatively recent term for healthcare practice pported by electronic processes and communication, dating back to at least 1999.[1] sage of the term varies. A study in 2005 found 51 unique definitions.[2] Some argue that it interchangeable with health informatics with a broad definition covering electronic/digital ocesses in health while others use it in the narrower sense of healthcare practice using e Internet. It can also include health applications and links on mobile phones, referred to m-health or m-Health. Since about 2011, the increasing recognition of the need for better ber-security and regulation may result in the need for these specialized resources to velop safer e-Health solutions that can withstand these growing threats.[7]
e of the factors blocking the use of e-Health tools from widespread acceptance is the ncern about privacy issues regarding patient records, most specifically the EPR ectronic patient record). This main concern has to do with the confidentiality of the data. ere is also concern about non-confidential data however. Each medical practise has its n jargon and diagnostic tools. To standardize the exchange of information, various ling schemes may be used in combination with international medical standards. stems that deal with these transfers are often referred to as Health Information change (HIE). Of the forms of e-Health already mentioned, there are roughly two types: nt-end data exchange and back-end exchange. Front-end exchange typically involves patient, while back-end exchange does not. A common example of a rather simple front- exchange is a patient sending a photo taken by mobile phone of a healing wound and ding it by email to the family doctor for control. Such an action may avoid the cost of an ensive visit to the hospital.

vantages of E-Health

ental health has a number of advantages such as being low cost, easily accessible and iding anonymity to users. However, there are also a number of disadvantages such as cerns regarding treatment credibility, user privacy and confidentiality. Online security involves the implementation of appropriate safeguards to protect user privacy and confidentiality. This includes appropriate collection and handling of user data, the protection of data from unauthorized access and modification and the safe storage of data. [5]

Disadvantages of E-Health

E-mental health has been gaining thrust in the academic research as well as practical arenas in a wide variety of disciplines such as psychology, clinical social work, family and matrimony therapy, and mental health counseling. Testifying to this momentum, the E-Mental Health movement has its own international organization, The International humanity for Mental Health Online.

VI. E-education

Education is one sphere that has accompanied civilization throughout the centuries, adapting its tools to fulfill the potential of students and the needs of teachers. Such tools can be as obvious and traditional as pencils and notebooks, or as complex and novel as websites or multi-user virtual environments. Typical in-person learning environments, such as classrooms and meeting rooms, are at times not the best solution to enable and maximize a student's capacity to learn. Although they do fulfill their purpose of giving students the opportunity to understanding course material and two of reaching their instructors, they sometimes can create barriers that cannot be without difficulty overcome.
Web-based education and multi-user virtual environments allow more autonomy in terms of time restraints and the physical limitations innate to typical lectures and classroom settings. Through these innovative mediums we can explore concepts while being a part of a learning community through socialization and association online. Many universities, public institutions and personal businesses are projecting themselves on the Internet and in virtual worlds to reach the patron at any time, giving them the notion of a virtual presence that cannot be delivered through a simple website. This watching sparks the idea that is at the very foundation of this publication with a focus on e-learning and e-education. This journal's aim is to develop into a central repository of information about the exploitation of on-line education through web-based instruction and multi-user virtual environments. With this journal we wish to create a one-stop supply to teachers, researchers and practitioners who wish to access information of high quality and broad coverage. Topics to be discussed in this journal focus on (but not limited to) the following concepts:

- Teaching/ Educational Models and Frameworks
- Accessibility and usability of web-based instruction in the classroom
- Best Practices
- Developing courses and content to be used in on-line educational environments

- Student appointment
- Experiments
- Impacts of on-line on traditional teaching and learning strategies
- Cost analysis

Conclusion:

Day by day the usage of Information Technology is increasing very fast, Indian government is manufacture many efforts to provide services to its populace through e-Governance. Although Indian government is spending a lot of money on e-Governance projects but still these projects are not successful in all parts of India. ignorance in people, local language of the people of a particular area, privacy for the personal data of the people etc. are main challenges which are responsible for the unsuccessful accomplishment of e-Governance in India. Government must take some actions to make the people aware about the e-Governance activities so that people may take full gain of these activities and e-Governance projects can be implemented effectively. The participation of people can play a vital role in implementation of e-Governance in India.

References:

(1) Pagliari, Claudia; Sloan, David; Gregor, Peter; Sullivan, Frank; Detmer, Don; Kahan, James P; Oortwijn, Wija; MacGillivray, Steve (2005). "What IseHealth (4): A Scoping Exercise to Map the Field". Journal of Medical Internet Research. 7 (1): e9. doi:10.2196/jmir.7.1.e9. PMC 1550637 . PMID 15829481. Retrieved 2012-04-15.

(2) Ahern, David K; Kreslake, Jennifer M; Phalen, Judith M; Bock, Beth (2006). "What IseHealth (6): Perspectives on the Evolution of eHealth Research". Journal of Medical Internet Research. 8. doi:10.2196/jmir.8.1.e4. Retrieved 2012-04-15.

(3) Oh, Hans; Rizo, Carlos; Enkin, Murray; Jadad, Alejandro; Powell, John; Pagliari, Claudia (24 February 2005). "What IseHealth (3): A Systematic Review of Published Definitions". Journal of Medical Internet Research. 7 (1): e1. doi:10.2196/jmir.7.1.e1. PMC 1550636 . PMID 15829471.

(4) "e-Diabetes on the website of the Dutch Diabetes foundation". Diabetesfederatie.nl. Retrieved 2012-04-15.

(5) Bennett, K; Bennett, A.J; Griffiths, KM (2010). "Security Considerations for E-Mental Health Interventions". Journal of Medical Internet Research. 12 (5): e61. doi:10.2196/jmir.1468. PMC 3057317 . PMID 21169173.

(6) Bennett, K; Reynolds, J; Christensen, H; Griffiths, KM (2010). "e-hub: an online self-

help mental health service in the community". Medical Journal of Australia. 192 (11): S48-S52. PMID 20528710.

(7) https://en.wikipedia.org/wiki/EHealth

(8) The NHS Confederation (2013) "E-Mental Health: what's all the fuss about?" London, UK.

(9) Australian Government (2012) "E-Mental Health Strategy for Australia." Canberra, Australia.

(10) National Institute for Health & Clinical Excellence (2008) "Computerised cognitive behaviour therapy for depression and anxiety." London, UK.

(11) American Psychiatric Association (2000) "Diagnostic and Statistical Manual of Mental Disorders." EigalMeirovich, Baltimore, US.

(12) Civljak M.; Sheikh A.; Stead L.F.; Car J. (2010). "Internet-based interventions for smoking cessation". Cochrane Database of Systematic Reviews.9: CD007078.

Knowledge Management and Organizations' Performance

- Dr. Ganesh N. Kather
- Abdulaziz Bahashwan
Department Of Management Science,
Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad

Abstract- today innovation depending on low factory, the essential one is people and the second is technology and these two are main component of term called knowledge management. So, the implementing of the knowledge management in organizations are referring to innovative organizations. Therefore, this study aimed to determine the effect of knowledge management on the organization also to provide detailed information on the knowledge management and organization performance. In this paper, we have used review research, we have explained the effect of the knowledge management in the organization performance. This study has indicated that knowledge management is positively effective in the process of organization performance, and all effective factors of knowledge management significantly affect the efficiency and performance of organization.

Keywords: Knowledge management; Innovation; organization performance ,

Introduction: To date, there are a number of studies have explored a variety of research in the field of knowledge management and organization change. But, there are a difference in all studies such as the ideas and how to present it.

Knowledge management is the creation, transfer, and exchange of organizational knowledge to achieve a competitive advantage.(John Girard & Jo Ann Girard,2015) the simple definition has given the main operation of KN creation, transfer and exchange. Knowledge management is the deliberate and systematic coordination of an organization's people, technology, processes, and organizational structure in order to add value through reuse and innovation. This is achieved through the promotion of creating, sharing, and applying knowledge as well as through the feeding of valuable lessons learned and best practices into corporate memory in order to foster continued organizational learning. (Dalkir& Liebowitz,2011) this definition has incorporated both the capturing and storing of knowledge perspective. The organization required the knowledge management to improve organization effectiveness.as the popular sentence saying that knowledge is a power. based on this wisdom we can say that the knowledge management is the key of the power.

The management of knowledge has generated considerable interest in business and management circles due to its capability to deliver to organizations, strategic results relating to profitability, competitiveness and capacity enhancement (Chua, 2009; Jeon, Kim and Koh 2011). the knowledge management is play an important role in the organization specially to enhance the Value of profitability and competitiveness of the organization. KM is identified as a framework for designing an organization's strategy, structures, and processes so that the organization can use what it knows to learn and to create economic and social value for its customers and community. Organizations need a good capacity to retain, develop, organize, and utilize their employees' capabilities in order to remain at the forefront and have an edge over competitors. So, the aims of this study were to determine the effect of knowledge management on the organization also to provide detailed information on the knowledge management. And this paper has provided convincing evidence of a positive effect of knowledge management in organization. this article comprises of (4) section, section [1] provided a brief introduction to the knowledge management, in section [2] we explained the component of knowledge management, we provided and important contextual information regarding knowledge management strategies and system in section [3], in section [4] conclusion.

Knowledge management

Before we begin to discuss about knowledge management (KM), we must start by clear the difference between the knowledge, information and data. in daily language the word knowledge has used in difference meaning such as know - how, wisdom. On many occasions, it even uses to refer to information. to clarify, (Theirauf (1999)) defined the three components as follows; data is the lowest point, an unstructured collection of facts and figures; information is the next level, and it is regarded as structured data; finally, knowledge is defined as "information about information".Data: (Thierauf (1999)): "unstructured facts and figures that have the least impact on the typical manager".Information: For data to become information, it must be contextualized, categorized, calculated and condensed (Davenport & Prusak 2000). Essentially information is found "in answers to questions that begin with such words as who, what, where, when, and how many" (Ackoff 1999).Knowledge: The knowledge possessed by each individual is a product of his experience, and encompasses the norms by which he evaluates new inputs from his surroundings (Davenport & Prusak 2000).

Figure [1] shows the different between data, information and knowledge.

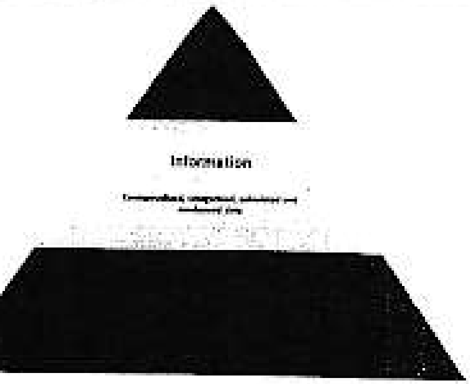

omponent of the knowledge:

h the review of this paper we have got a lot of component but the main component very author share it are three people, process, and technology. Some companies e that the technology is the essential element in the knowledge management but the ation came that processes and technology alone are not enough to drive anization but its human force (staff) are very integral pivot in organization's success. fore,in order to manage knowledge effectively, attention must be paid on to four key onents: Knowledge, People, Processes and Technology (Desouza 2011).

rst component of knowledge is people the main source and consumers of edge in organizations. The majority of organization knowledge is stored in people's and many people do not realize the extent to which this is extremely valuable. Small zations are generally considered more effective because everyone knows who to their expertise. In mid to large sized organizations the ability to find expertise is key nt of keeping the organization agile and getting things done quickly.AsDrucker points out, workers (people) need to be able to seek out knowledge, experimentwith n from it, and even teach others as they innovate so as to promote new dgecreation.

cond component is processes.Knowledge management is the planning, organizing, ling, and controlling of people, processes and systems in the organization to ensure knowledge-related assets are improved and effectively employed. (Baloh et al. define processes, which is another KM component, as mechanical and logical that guide how work is conducted in organizations. Processes may have made of,

and executed by human or some time by machines. according to the activities in the organization this is what people attempt to implement knowledge management, we identify 8 steps as following:

- Analysis organization activities (requirement analysis).
- Architecture design.
- Design processes.
- Processes test.
- Implement processes.
- Monitor processes.
- Revise processes.
- Execute the processes.

The third component of the knowledge management is technology. (Kulkarni, U. R., Ravindran,2006) According to a managing partner at a KM consultancy firm based in New York, "The biggest misconception that IT leaders make is that knowledge management is about technology. Usually people begin a KM project by focusing on the technology. But the key is people..." (Lee et al.2004) The biggest contributor to this brilliant growth of the knowledge management system is information technology." information technologies that can be used to facilitate knowledge management. Knowledge Management Technologies are intrinsically no different from information technologies, but they can focus on knowledge management rather than information processing. Knowledge Management Technologies also support knowledge management systems and benefit from the knowledge management infrastructure, especially the information technology infrastructure. KM technologies constitute a key component of KM systems.

Knowledge Management is a systematical process which includes collecting, organizing, clarifying, disseminating and reusing the information and knowledge throughout an organization. KM deals with explicit knowledge and tacit knowledge and should possess maturity attribute, dynamic attribute and self-growth attribute. Successful KM needs a trust-basedorganizationalculture to facilitate knowledge sharing and should be supported by an organization structure which can result in organization learning and fits in the trust and open cultural environment. Organizational knowledge is the result of an integration of collective thinking materialized in best practices, staff mental models and business process management, and as much tacit knowledge control and management. Also, enterprises have a perception, a dynamic memory and a long-term memory.

Knowledge management strategy:

KM in research has been defined in many ways, like Sousa and Hendriks (2006) defined it as Knowledge management addresses policies, strategies, and techniques aimed at supporting an organization 's competitiveness by optimizing the conditions needed for efficiency improvement, innovation, and collaboration among employees (Sousa and Hendriks 2006). Based on theoretical results several practical models have been developed and introduced to companies. The preparation of these actions demands to create knowledge management strategy of the company. As it is a special functional sub-strategy, it can be deduced from innovation and performance strategies.

Managing knowledge is important because knowledge is one of the most strategic weapons that can lead to sustained increase in profits. It is no surprise that many researchers have investigated enablers for fostering knowledge (Nonaka, Toyama, & Konno, 2000; O'Dell & Grayson, 1998; Teece,2000). Three research areas for knowledge management strategies have been identified (Zack, 1999b). First, which knowledge is unique and valuable? Studies on intellectual capital (Edvinsson & Malone, 1997; Kitts, Edvinsson, & Beding, 2001; Sveiby, 1997) or intangible resources (Hall,1992) attempt to solve this issue. Second, how can these resources and capabilities support a firm's product and market positions? This research question deals with resource-based theory (Collins & Montgomery, 1995;Praha lad & Hamel, 1990) and organizational capability(Grant, 1996; Teece, Pisano, & Shuen, 1997). Lastly, thereal challenge lies in finding the link between knowledge management strategies and its processes. This paper attempts to explore this issue.The fit between knowledge management processes and knowledge management strategies is a lynchpin in improving corporate performance. It is essential to identify which knowledge processes represent unique and valuable capabilities for effective knowledge management (Holsapple &Singh, 2001; Zack, 1999b). However, implementing knowledge processes within a firm can be very costly and fragile (Soliman & Spooner, 2000).Knowledge management focus is one of the most common considerations for establishing knowledge management strategies; they can be described along two dimensions reflecting their focus (Hansen et al., 1999; Zack,1999a). One dimension emphasizes the capability to help create, store, share, and use an organization's explicitly documented knowledge. The strategy as per this dimension emphasizes codifying and storing knowledge. Typically, knowledge can be codified via information technology(Davenport, Long, & Beers, 1998; Lee & Kim, 2001;Liebowitz & Wilcox, 1997; Swan, Newell, & Robertson,2000). Codified knowledge is more likely to be reused. emphasis is on completely specified sets of rules about what to do under every possible sets of circumstances (Bohn,1994).Another dimension emphasizes knowledge sharing viainter personal interaction. The strategy as per this dimension utilizes dialogue through social networks including occupational groups and teams (Swan et al., 2000). It helps share knowledge through person-to-person contacts (Hansen et al.,1999). This strategy attempts to acquire internal and opportunistic knowledge and share it informally (Jordan &Jones, 1997). Knowledge can be obtained from experienced and skilled people. This strategy can be referred to as human strategy.

Knowledge management system

A knowledge management system (KMS) is a system for applying and using knowledge management principles. These include data-driven objectives around business productivity, a competitive business model, business intelligence analysis and more.

A knowledge management system is made up of different software modules served by a central user interface. Some of these features can allow for data mining on customer input and histories, along with the provision or sharing of electronic documents. Knowledge management systems can help with staff training and orientation, support better sales, or help business leaders to make critical decisions.

As a discipline, knowledge management is often confused with business intelligence, which also focuses on acquiring data for making business decisions. Some experts distinguish the two by pointing out that business intelligence has a focus on explicit knowledge, whereas knowledge management is a broader category that includes both implied and explicit knowledge. This differentiation has led many to classify business intelligence as part of greater knowledge management, where the wider category drives decisions in a more fundamental way. As a broad designation, knowledge management can be applied in a lot of different ways to individual business processes. It's up to top-level managers to use these systems in ways that make the most sense for a particular enterprise .james Robertson (2007) goes as far as to argue that organizations should not even think in terms of knowledge management systems. He argues that KM, though enhanced by technology, is not a technology discipline, and thinking in terms of knowledge management systems leads to expectations of "silver bullet" solutions. Instead, the focus should be determining the functionality of the IT systems that are required for the specific activities and initiatives within the firm. However, with proper implementation, IT systems have become a critical component of KM today.

For more clarification (intended to be useful for those people that do search for terms like knowledge management systems), we will break these down into the following general categories (adapted from the work of Gupta and Sharma 2005, in Bali et al 2009):

Groupware systems & KM 2.0

The intranet and extranet

Data warehousing, data mining, & OLAP

Decision Support Systems

Content management systems

Document management systems

Artificial intelligence tools

Simulation tools

Semantic networks

These categories will cover the vast majority of the systems that people would normally associate with a KM system.

Conclusion

Knowledge management is systematical processes which includes collecting, organizing, clarifying, disseminating, sharing knowledge and storage to enhance the organizations performance. The knowledge management depend one three components that is people and processes and technology. Now a day's knowledge management is essentially for organization. Therefore, this research aimed to determine the effect of knowledge management on the organization also to provide detailed information on the knowledge management and organization. this article provides convincing evidence between knowledge management and organization performance. Therefore, the result yielded there are positive effect of knowledge management on the organization.

References:

1) Dalkir, K., & Liebowitz, J. (2011). Knowledge management in theory and practice. MIT press.

2) http://www.johngirard.net/leading-knowledge-2-0/.

3) Newman, B. D., & Conrad, K. W. (2000, October). A Framework for Characterizing Knowledge Management Methods, Practices, and Technologies. In PAKM.

4) Omotayo, F. O. (2015). Knowledge Management as an important tool in Organisational Management: A Review of Literature. Library Philosophy and Practice, 1.

5) http://www.knowledge-management-tools.net/knowledge-information-data.html.

6) Edwards, J. (2010). A Process View of Knowledge Management: It Ain't What you do, it's the way That you do it.

7) http://integra.com/blog/2013/01/16/four-elements-for-successful-knowledge-

management/.

8) Iqbal, J., & Mahmood, Y. (2012). Reviewing knowledge management literature Interdisciplinary Journal of Contemporary Research in Business, 4(6), 1005-1026.

9) Kulkarni, U. R., Ravindran, S., & Freeze, R. (2006). A Knowledge Management Success Model: Theoretical Development and Empirical Validation. Journal of Management Information Systems, 23 (3), 309-347.

10) Lee, H.-S., Chae, Y.-I., & Suh, Y.-H. (2004). Knowledge Conversion and Practical Use with Information Technology in Korean Companies. Total Quality Management, 15 (3), 279-294.

11) King, W. R. (2009). Knowledge management and organizational learning (pp. 3-13). Springer US.

12) Huang, Y. (2010). Overview of Knowledge Management in Organizations. Creating the Discipline of Knowledge Management, 34-42

13) Dickel, D. G., & de Moura, G. L. (2016). Organizational performance evaluation in intangible criteria: a model based on knowledge management and innovation management. RAI Revista de Administração e Inovação, 13(3), 211-220.

14) Szakály, D. (2002). Knowledge Management Strategies. Theory, Methodology, Practice, 1(1), 51.

https://www.techopedia.com/definition/7962/knowledge-management-system-kms.

❀ ❀ ❀

M.S.P. Mandal's

Sunderrao Solanke Mahavidyalaya, Majal

Dist. Beed. (M.S.) India. 431 131

Reaccredited by NAAC with 'B' Grade

Proceeding of National Conferen
On
"INNOVATIVE TRENDS IN COMMERCE AND MANAGEMENT"

27th September 2016

Organized By

Department of Commerce

ISBN No. 978-1-

Dr. V. P. Pawar
Pricipal & Chief Organiser

Dr. R. B. Laha
Convener

Ph.: Off. 02443 - 234037
E-mail : majalgaon_college123@yahoo.in

Fax : 02443
Website : www.mcm-col

Principal

Shri Asaramji Bhandwaldar Arts, Commerce & Science College Deogaon R. Tq. Kannad Dist. Aurangabad-431115

Asst. Prof.
Shri Asaramji Bhandwaldar Arts, Comm. Science College, Devgaon (R.)
Tq. Kannad, Dist. Aurangabad

Sr. No.	Title of Paper	Name of Author
1.	Promotion of Foreign Direct Investment	Dr. Kalyan Bhausaheb Laghane
2.	Rural Entrepreneurship in India: Challenges and Problems	Dr Satyeprem Ghumare
3.	Role of Micro, Medium and Small Enterprises under Make in India	Dr. Rajendra Ashokrao Udhan
4.	Education: A Tool for Success of Make in India	Dr. Vilas G. Dapke
5.	Foreign Direct Investments	Dr. Pandurang Bhimrao Kharat
6.	Banking and Financial Services Industry in India	Dr. Rajesh B.Lahane
7.	'Delhi-Mumbai Industrial Corridor'(DMIC)' Project for Indian Industrial Growth	Dr. Rajendra L. Kable
8.	Rural Marketing Problems and Challenges	Kiran R. Phadnis
9.	A Study of Rural Entrepreneurship Development in a: Prospects & Challenges	Shri. Rathi S.R.
10.	Government's Role In Implementing Entrepreneurial Development Programme In Industries	Dr Memon Ubed Yusuf
11.	Special Economic Zone in China and India	Dr. Bharat A. Pagare
12.	Innovative Trends in Industries for Entrepreneurship Development (MSME)	Dr. Chavan Ashok Daulatrao
13.	Opportunites of Women Entrepreneur's in Rural Areas	Dr. L.C. Kurpatwar
14.	Make in India: Its impacts on Economic growth	Dr. Mahesh B. Thorat
15.	The Role of Governance in Commerce and Management	Dr. M.D. Kachave
16.	Human Resource Management Problems In India	Dr. Pawar Pandurang Tukaram,
17.	Empowerment of Women and Empowerment of Nation	Dr. Prakash Ratanlal Rodiya,
18.	Role of threefold training in Human Resource Development	Dr. Sandeep Gaikwad
19.	Women Entrepreneurship In India - Conseptual Issues, Problems & Prospects	Dr. Sow. Munde S.D.

ASSOCHAM Meet, "MSMEs segment will lead 'Make in India' Program, Advertorial, 2015.

Bala Subrahmanya, M. H. (2004), "Small Industry and Globalization: Implications, Performance and Prospects", *Economic and Political Weekly*, Volume XXXIX, No.18, pp 1826-1834.

Bargal, H., Dashmishra, M., and Sharma, A. (2009), "Performance Analysis of Small Scale Industries - A Study of Pre-liberalization and Post-liberalization period", *International Journal of Business and Management*, Vol 1, No 2.

Dixit, A. and Pandey, A.K. (2011), "SMEs and Economic Growth in India: Cointegration

Analysis", *IUP Journal of Financial Economics*, Vol. IX, No.2, pp. 41-59.

Government of India Ministry of Micro, Small and Medium Enterprises, Annual Report 2013-14.

J.S. Sultan (2014), "Problems and Prospects of Micro, Small & Medium Enterprises (MSME's) in India. *International Journal of Innovative Research and Studies*, Vol. 3(5), pp. 141-161.

Mali, D.D. (1998), "Development of Micro, Small and Medium Enterprises of India. Current Scenario and Challenges", *SEDME (Small Enterprises Development, Management and Extension) Journal*, Vol.25, No.4.

Singh, R., Verma, O.P., and Anjum, B. (2012), "Small Scale Industry: An Engine of Growth",

Zenith International Journal of Business Economics & Management Research, Vol.2, Issue 5, pp. 42-74.

***

Education: A Tool for Success of Make in India

By
Dr. Vilas G. Dapke,
Assistant Professor, A. B. College, Deogaon (R)

1. INTRODUCTION

Education is the base requirement for the growth of an individual and society. Education plays a crucial role in the advancement of technologies. India is the world's 3 largest education system with 700 universities, 35,000 colleges and over 2.5 Crore students enrolled. India is having various challenges to set up strong education system. Many attempts were made by government for improving education system in India. Problems faced by Indian Educational system consists lack of facilities, deficiency of faculties , out of date teaching methods , regional imbalances in the growth of educational institutions , declining student-teacher ratio. There is need to improve the standard of education and relate it with requirements of government , public , private-sector by increasing academic connection with industry, incentives to teachers and researchers, using innovative methods of communication , providing need based and job oriented courses. The need for such improvement has become significant in ensuring success of "Make in India" programme of central government in which lot of importance is given to skill development.

Objective of the study:

1) To study contribution of education in Make in India.
2) To understand the role of education in Skill Development.
3) To know various improvements needed in current education system w.r.t. Make in India.

Data Collection:
The data is collected from the various reports published by government of india, private [illegible] websites, newspapers and other related publications.
Scope and Limitation of Study:
The research paper is based on the secondary data published by various government and private bodies. The scope of the paper is limited to education and its relation with Make in India [illegible]

2. MAKE IN INDIA

The Make in India is a program initiated by Prime Minister Narendra Modi on 25th September 2014 as a step of nation building initiatives. This initiative was designed to transform India into a global design and manufacturing hub. It was a powerful, galvanizing call to action to India's citizens and business leaders, and an invitation to potential partners and investors around the world. It represents comprehensive and extraordinary renovation of out-dated processes and policies. It [illegible] complete change of the Government's mindset – a shift from issuing authority to business [illegible] keeping with Prime Minister Modi's tenet of 'Minimum Government, Maximum Governance'. For promotion of this program separate web portal, logo and brochures are used [illegible] priority sectors of the economy.

Figure 2.1 Logo of Make in India   Description on Logo

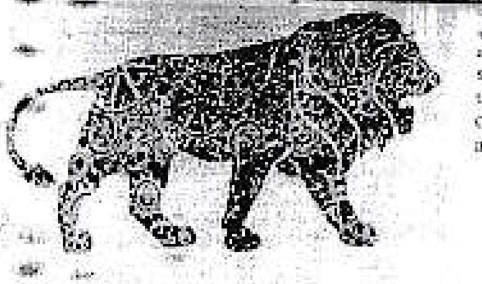

The logo for the Make in India campaign is an elegant lion, inspired by the Ashoka Chakra and designed to represent India's success in all spheres. Wheel denotes peaceful progress and dynamism. Lion has been the official emblem of India" and it stands for "courage, tenacity and wisdom – all Indian values.

MAKE IN INDIA

This initiative focuses on job creation, skill development and innovation. This initiative will encourage Public Private Partnership (PPP), Joint Ventures (JV) and Foreign Direct Investment (FDI) inflow.

Higher education will also play an important role in improving the quality of Research and Development (R & D).

3. ROLE OF EDUCATION IN SKILL DEVELOPMENT

Education and skill plays a very important role in growth and development of a country. High skilled labour is required for the various industrial units. In India plenty of labour is available but there are skill gaps. The Economic Survey for 2014-15 has clearly stated that the Prime Minister's Skill India objective should be accorded high priority in order to realise the Make in India objective.

According to views expressed by central ministers, officials and industrialists in a seminar on "Make in India: The Way Forward", organized by the central government and the Confederation of Indian Industry (CII) in February 2016 the ecosystem for skill development, technology and innovation is critical for 'Make in India' to succeed.

Education and Skill Development in India:

Earlier government was worried about the rich and poor gap but nowadays gap between skilled and non-skilled is a case of worry for government. The Government of India has always considered skill development as a national priority. All kinds of jobs will be given equal emphasis with traditional jobs. According to Prime Minister, Skill India won't be just a programme but a movement. Here, youth who are jobless, college and school dropouts, along with the educated ones, from rural and urban areas, all will be given value addition. Certificates will be issued to those who complete a particular skill or programme and this certificate has to be recognized by all public and private agencies and entities, including overseas organisations. National Skill Development Policy released in 2009 has given following skill development initiatives:

1. Growing ability and proficiency of present Education/Training system to ensure rightful admission to all.
2. Encouraging life-long education, upholding superiority and significance, according to changing obligations mainly of developing knowledge economy.
3. Producing operational union between school education, different skill improvement efforts of government and between government and Private Sector initiative.
4. Capacity constructing of institutions for design, quality assurance and participation of stakeholders.
5. Creating institutional machinery for research growth, quality declaration, examinations & certification, memberships and certification.

The structure of the Education and Skill Development System in India is as shown below.

Figure 3.1: Education & Skill Development System in India

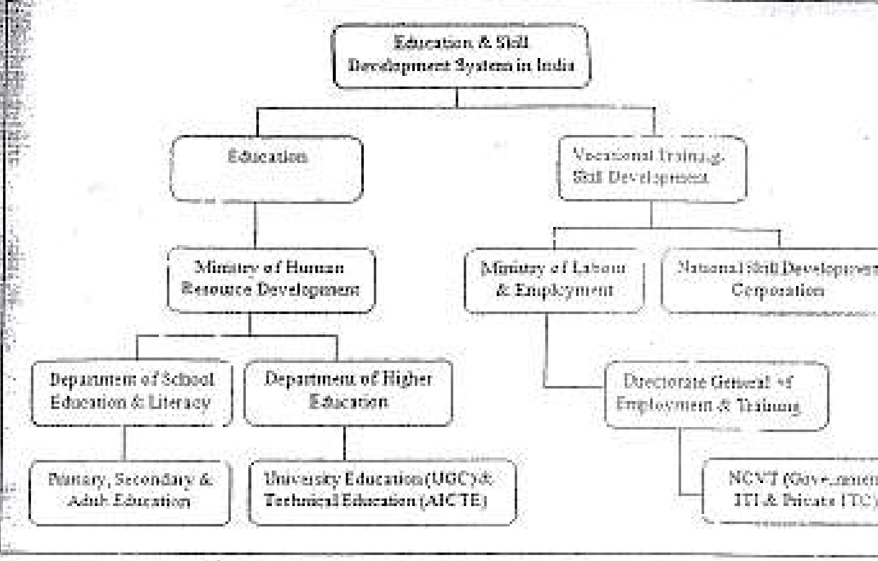

The status of labour force education in India as compared to various countries is as shown following figure.

Figure 3.2: Labour Force Education (% of Total)

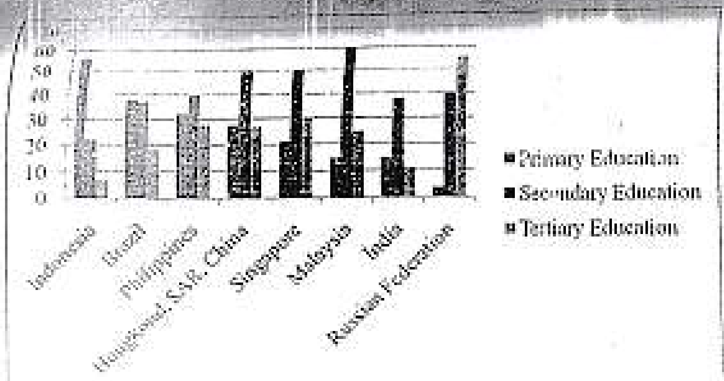

Source: "*Make in India- Pressing the Pedal,*" *2015, p.29*

The figure shows that in India about 14% of the labour force has primary education, 38% have secondary education and 11% have tertiary education.

4. EDUCATION AND MAKE IN INDIA

According to report by ASSOCHAM India, following are the benefits of education for Indian Economy.

- 1% increase in Government expenditure on education can lead to 0.1% increase in per capita GDP.
- Bridging demand gap for skilled manpower - nearly 1.2 Crore people added to workforce every year in India; nearly 35 Crore skilled employees 8 expected in key sectors by 2022.
- Enhance competitiveness in specialised skills e.g. R & D, IT, Biotech, Design, Innovation & Architecture – 50 Crore Indians need to be job ready by 2022.
- Significant improvement in job creation, earning capacity, poverty reduction and key health indicators and mortality rate.

These benefits will play an important part in Make in India initiative. India targets creation of 500 million skilled workers in 2022.The need to train fresh graduates in new skills and ensure that they remain employable is important.

Improvements needed in Current Education System:

Following improvements are needed in current education system with reference to Make in India.

1. Specialized Courses: Specialized courses should be offered to get latest and best education which will help students for becoming industry ready and employable. These courses will also help in improvement of entrepreneurial skills.
2. To increase number of universities: Present number of universities is too less to cover all geographical areas of India. So more universities should be started to provide quality education in required places.
3. Innovative Practices: The innovative technologies offer wide opportunities for economic growth, improved health, better service delivery, improved learning and socio-cultural advances.
4. Personality Development: In education emphasis should be given on creating good personality students rather than suppression of creativity.
5. Examination Patterns- Examination patterns should be shifted from the terminal, annual and semester examinations to regular. Continuous assessment of student's performance should be done at regular intervals.

7. Promotion for Teachers and Researchers: Teachers and researchers should be [illegible] way of incentives to make these professions more attractive for the current generation.
7. To mobilize resources: Effective measures will have to be adopted to mobilize resources for higher education to get subsidized education to students from lower economic levels.
8. World Class Education: Standard of education in India should be improved. Education in India should be compatible with international education standards. Syllabus for all educational institutions should be same for particular level of education.
9. Privatization of Higher Education: Government alone cannot reach everywhere in India therefore privatization of higher education should be done.
10. To Provide Need Based Job-Oriented Courses: There should be need based and job oriented courses to deal with industry needs.
11. Student-Centred Education and Dynamic Methods-. Student-centred education and method of distance education will have to be implemented on large scale.
12. Establishment of new IITs, IIMs, and AIIMS: New IITs, IIMs, and AIIMS should be established to boost student capacity in institutes of excellence

5. CONCLUSION

Education is a key for employment, entrepreneurship and empowerment. factors which will play important role in Make in India campaign.

The Government of India has taken several steps including opening of IITs and IIM's in new locations as well as allocating educational grants for research scholars in most government institutions.

Skill development and Education both are needed for success in Make in India campaign. [illegible] to fulfill need of advanced skills Indian Education System needs improvements [illegible] modifications, Change in Quality of Education and improvements in strategies and policies of education. Skilled manpower mapped to the natural potential and creation of sustainable growth will be the focus of 'Make in India'.

REFERENCES:

Books:

- Kothari, C., (2009), Research Methodology. New Delhi: New age international.
- Sachdeva, J., (2010). Business Research Methodology. Mumbai: Himalaya Publishing House.

Websites:

- http://www.makeinindia.com/about
- http://www.assocham.org/userfiles/YES_BANK_ASSOCHAM_Knowledge_Report__Make_in_India_-_Presing_the_Pedal.pdf
- https://amarrnaik.blogspot.in/2014/11/skill-development-for-make-in-india.html
- https://www.tribuneindia.com/news/business/skill-development-key-for-make-in-india-objective-says-report/47685.html
- http://profit.ndtv.com/news/budget/article-skill-development-seen-critical-for-make-in-india-1277978
- http://www.mapsofindia.com/my-india/society/skill-india-a-new-programme-to-be-launched-in-march-2015

Research Papers:

- Khavnekar, R. P. Changing Scenario Of Skill Develeopment In India. *[illegible] Research Journal*, pp. 107-113.
- Bardiya, S. C., Biyani, P., & Patodiya, P. K. (2015). Make in India and Skills Education in India: Challenges and Remedies. Impact of 'Make in India' Efforts on Management of Business, pp. 57-59.
- Biyani, S. (2015). Quality Improvements in Higher Education to Meet Challenges of Make in India. Impact of 'Make in India' Efforts on Management of Business, pp. 66-68.
- Make in India- Pressing the Pedal (2015). ASSOCHAM India.

IMPACT FACTOR SJIF 2016 = 6.177
ONLINE ISSN 2278-8808

AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, QUARTERLY

SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

EDITOR IN CHIEF

YASHPAL D. NETRAGAONKAR, Ph. D.
Associate Professor, MAAER'S MIT School of Education & Research, Kothrud, Pune

EDITOR'S

BAVISKAR, C. R, Ph. D.
Director, School of Education, SRTM University Nanded.

JACINTA A. OPARA,
Center for Environmenta
Universidad Azteca, Cha

NISHIKANT JHA, Ph. D.
Thakur Art,Commerce & Science College
Kandiwali West,Thakur village, Mumbai

SHABIR AHEMAD BHATT, Ph. D.
Associate Professor, Department of Education, University of Kashmir, India

VAIBHAV G. JADAHV
Assistant Professor, Depa
Education & Extension, U
of Pune.

**Amitesh Publishing House, Shivkrupa Residency, S. No. 5/14, Flat
Dattnagar, Near Telco Colony Ambegaon (Kh), Pune. Maharashtra.
India. Website: www.amiteshpublishers.in , www.srjis.com
Email: editor@srjis.com**

Principal
Shri Asaramji Bhandwaldar Arts, Commerce & Science College Deogaon R. Tq. Kannad Dist. Aurangabad-431115

Asst. Professor
Shri Asaramji Bhandwaldar Arts, Commerce & Science College, Deogaon R.
Tq. Kannad, Dist. Aurangabad

38. NEED OF TALENT MANAGEMENT TO CREATE HIGH PERFORMANCE ORGANIZATION IN CURRENT ECONOMIC CONDITION
Prof. Jyoti Munde (197-199)

39. ENVIRONMENTAL MANAGEMENT SYSTEM & ITS IMPORTANCE
Prof. Dr.Shelar B. A. (200-206)

40. NABARD'S SHG BANK LINKAGE PROGRAMME: PATHWAY OF RURAL DEVELOPMENT MANAGEMENT
Prof. Ravindra A. Jadhav (207-211)

41. RETAIL MARKETING AND INDIAN ECONOMY
Prof. Shinde Gorakshnath Bapurao (212-216)

42. THE ROLE OF HUMAN RESOURCES MANAGEMENT
Prof. R. T. Taplondhe (217-220)

43. MANAGEMENT PERSPECTIVE OF GOODS AND SERVICES TAX (GST) EXECUTION IN THE INDIAN ECONOMY
Prof. Sandeep B. Bhise & Prof. Pramod D Bhore (221-226)

44. NEW AVENUES OF FINANCIAL MANAGEMENT IN CHANGING ECONOMY
Dr. S. V. Tile (227-229)

45. EFFECTS OF MEDIA ON EMOTION INTELLIGENCE
Prof. Nilesh Vitthal Nikam (230-233)

46. GLOBAL TRENDS IN RETAIL MANAGEMENT OF INDIA
Prof. Rupali K. Sanap (234-236)

47. HUMAN RESOURCES AND SUSTAINBALE DEVELOPMENT
Prof. Bhagwan Haribhau Sarate (237-241)

48. MANAGEMENT OF RESEARCH
Dr. G E. Wakale (242-245)

49. WOMEN LEADERSHIP IN INDIAN CORPORATE
Dr. Ganesh Raosaheb Patil (246-251)

50. WOMEN ENTREPRENEURS: A CRITICAL REVIEW OF THE LITERATURE
Prof. Pavin Ramesh Kulthe (252-257)

51. DEMONETISATION & RISK MANAGEMENT THROUGH ITS IMPLEMENTATION IN INDIA
Prof. CA Trupti Ganaji Deore (258-268)

52. MANAGEMENT PRACTICES AND RURAL DEVELOPMENT
Dr. Shaikh Mahamadali Liyakatali & Prof. Khedkar Pitam Laxman (269-272)

53. GROWTH AND CHALLENGES OF RETAIL INDUSTRY IN INDIA
Dr. Manisha K. Aher (273-276)

54. DEMONETISATION AND WEALTH MANAGEMENT
Prof D.B. Male & Prof P.S. Kute (277-279)

55. IMPACT AND DEVELOPMENT OF TOURISM INDUSTRIES IN INDIA
Prof. Pavan Laxman Gaikwad (280-288)

56. NEED OF ELECTRONIC MEDIA MANAGEMENT IN INDIA
Prof. Ashwini Nirgude (289-294)

57. NEED OF EFFECTIVE CSR IN NASHIK DISTRICT
Prof. Shweta S Sonawane (295-298)

58. MANAGEMENT PRACTICE AND DEVELOPMENT
Prof Prerna Mohite (299-301)

59. भारतीय अर्थव्यवस्थेच्या विकासातील व्यवस्थापनाची भूमिका
प्रा. श्रीमती रुपाली पी. कोलवार (302-305)

60. सामाजिक जबाबदारी आणि व्यवस्थापन
Dr. Vilas G. Dapake & Prof. Avinash A. Sonawane (306-309)

61. व्यवसायाची सामाजिक जबाबदारी हा व्यवस्थापनातील आधुनिक प्रवाह
डॉ. मिलिंद थवई (310-314)

62. सामाजिक जबाबदारी आणि व्यवस्थापन
प्रा. सुनीत भास्कर फर्डके (315-317)

63. सामाजिक जबाबदारी आणि व्यवस्थापन
प्रा. सीमा नाग (318-319)

64. व्यवस्थापनाची सामाजिक जबाबदारी
डॉ. जे. डी. पवार (320-321)

65. SOCIAL RESPONSIBILITY AND MANAGEMENT (कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व तथा
डॉ. डी.पी.देवांगन & डॉ. शरद कुमार देवांगन (322-325)

66. LIVESTOCK MANAGEMENT IN MIXED FARMING: AN ASSET FOR RURAL E INDIA
Prof. Bhagwat Bhaurao Gadekar (326-330)

67. MANAGEMENT AND INDIAN ECONOMY
Dr. Patil Nayana Bhimrao (331-334)

68. ORGANISED RETAILING IN INDIA: OPPORTUNITIES AND CHALLENGES
Dr. Munde Sanjeevani Dashrathrao (335-339)

60. सामाजिक जबाबदारी व व्यवस्थापन

Dr. Vilas G. Dapake & Prof. Avinash A. Sonawane (M.com, B.Ed, SET)
[1]Shri Asharamji Bhandwaldar Arts, Comm. & Science Collage Devgaon (Rangari)
[2]Arts, Comm. & Science Collage, Rajarammagar (Kadwa)

प्रस्तावना :

व्यवसाय ही एक आर्थिक क्रिया आहेआणि मानवी जीवनाचा आर्थिक क्रियेशी अत्यंत जवळचा संबंध आहे. मानवाला जिवंत राहण्यासाठी काहीतरी कार्य करावे लागते. कारण त्यामधूनच त्याच्या प्राथमिक गरजा पूर्ण करून तो जिवंत राहू शकतो. मानवाच्या उत्क्रांती पासून जर विचार केला तर पूर्वी व्यवसाय हि संकल्पना विकसित नव्हती. परंतु आधुनिक काळात व्यवसायाची संकल्पना व व्याप्ती यामध्ये मोठा बदल झालेला आहे. Business like weather is with us every day. अशा वातावरणाप्रमाणेच व्यवसाय ही बदलत गेलेला दिसून येतो. व्यवसायात होणाऱ्या विविध क्रियांचा माणसांच्या व्यक्तिगत व सामाजिक जीवनाशी जवळचा संबंध आहे. कारण माणसाला त्याच्या गरजा पूर्ण करण्यासाठी पैसा लागतो. आणि पैसा / नफा मिळविण्यासाठी काहीतरी कार्य / व्यवसाय करावाच लागतो. म्हणूनच नफा मिळविण्याच्या उद्देशाने केलेल्या कोणत्याही कार्याला व्यवसाय असे म्हणतात. व्यवसाय एक असे कार्य आहे, ज्या मध्ये उत्पादन केले जाते,वस्तूंची खरेदी विक्री होणे किंवा देवान-घेवाण होते. नफा मिळविण्याच्या उद्देशाने समाजाला सेवा पुरविणे असे विविध कार्य व्यवसायात केले जातात.

व्यवसायाची कल्पना ही उत्पादन घटकाशिवाय होऊ शकत नाही. सामान्यपणे व्यवसायाला पुढील प्रकारचे उत्पादन घटक (m-Factor) लागतात. उदा. भूमी, श्रम, भांडवल, जमीन व व्यवस्थापन इ. यामध्ये प्रत्येक घटक महत्वाचा आहे. परंतु या घटकापैकी व्यवस्थापन हा घटक महत्वाचा आहे, कारण इतर घटकांना योग्य दिशा देण्याचे किंवा त्याचा योग्य उपयोग करण्याचे काम व्यवस्थापनाला करावे लागते. सर्व उत्पादन घटक मुबलक प्रमाणात असले तरी व्यवस्थापन जर नसेल तर व्यवसाय आपले उद्दिष्ट कधीच पूर्ण करू शकत नाही. व्यवसायात व्यवस्थापनाचे स्थान हे शरीरातील मानवी मेंदूप्रमाणे आहे. व्यवसायात प्रत्येकाला आपल्या लहरी प्रमाणे काम करण्यास मोकळीक दिली तरी सगळा गोंधळ निर्माण होईल साधन संपत्तीचा अपव्यय होईल. व्यवसायाकडे अमर्याद गरजा व मर्यादित उत्पादन साधने असल्याने त्याचा योग्य उपयोग करवून घेण्याचे काम व्यवस्थापनाचे आहे.

व्यवस्थापन संकल्पना फार जुनी आहे ती व्यापक असून काळानुसार सतत बदलत गेली. व्यवस्थापनाचे कार्य व त्यासंबंधी विचार हे मानवी संस्कृती एवढेच जुने आहे. जेव्हा मानवी संस्कृतीचा

जन्म झाला तेव्हा पासूनच व्यवस्थापनाची क्रिया कोणत्याना कोणत्या स्वरूपात अस्तित्वात आहे. परंतु पूर्वीच्या काळापेक्षा आजच्या काळात व्यवस्थापन विचारामध्ये बदल झाला आहे. औद्योगिक क्रांती, संज्ञापन क्रांती व आर्थिक विकास यामुळे व्यवस्थापनाचे स्वरूप, तत्वे, कार्य तंत्र व दृष्टिकोन बदलून गेले व्यवस्थापन उत्क्रांतीचा शोध घेतला तर इजिप्त मधील पिरॅमिड, रोममध्ये चालणारा चर्च व्यवसाय, ग्रीस मधील अथेनिअम कॉमनवेल्थ ही संस्था व्यवस्थापनाची साक्ष देते. भारतात ही जुन्या काळातील राज्य कारभार व ग्रामीण व शहरी आर्थिक जीवनाची स्वयंपूर्ण व्यवस्था दिसून येते.

व्यवस्थापन विचारांच्या विकासाचे टप्पे...

१) टेलरपूर्व काळातील व्यवस्थापन विचार.

२) टेलरचा शास्त्रीय व्यवस्थापन विचारांचा कालखंड.

३) आधुनिक व्यवस्थापन विचारांचा कालखंड.

या प्रमाणे दिसून येते.

टेलरपूर्व काळात प्रा. चार्लस बॅबेज, जेम्सवॅट, ज्युनिअम आणि मस्तु रॉबिन्सन ऑल्टन, रॉबर्ट ओवेन, हेंटी टाऊने व हेरी सेंट सिमन्स यांनी विचार मांडले आहेत. तर नंतर च्या काळात टेलरने शास्त्रीय व्यवस्थापनातून विचार मांडून व्यवस्थापनाचे नवीन पर्व सुरु केले. त्याच समकालीन हेन्री फेऑलने प्रशासनिय व्यवस्थापना संबंधित विचार मांडले. त्यानंतर काळात मानवी संबंधविषयी एल्टन मेयो, मानवी वागणूकीचा मेरी पार्कर, सामाजिक संबंधाचा चेस्टर बर्नार्ड ने विचार मांडले. अशा प्रकारे काळानुसार व्यवस्थापनाला विविध पैलू पडत गेले आणि व्यवस्थापन ही बदलत गेले.

व्यवस्थापन (management) :

व्यवस्थापन म्हणजे इतरांकडून कार्य करून घेणे होय. किंवा व्यवस्थापन अशी प्रक्रिया ज्यामध्ये योजना तयार केल्या जातात. संघटना निर्माण करणे कर्मचाऱ्यांना प्रोत्साहित केले जाते व्यवस्थापन करताना व्यवस्थापनासंबंधी विविध पूर्वतयारीचे व अंमलबजावणीचे कार्य केली जाते तर ल्युथर गुलिक यांनी POSDCORB च्या माध्यमातून व्यवस्थापन कार्य सांगितले. व्यवस्थापन ही एक कला व शास्त्र व पेशा आहे. अशा प्रकारे व्यवस्थापनाचे व्यवसायातील महत्त्व करता येईल.

सामाजिक जबाबदारी (Social Responsibility) : व्यवसायाचा हेतू नफा मिळविणे असला तरी तो मिळवित असतांना व्यवस्थापकाने सामाजिक जबाबदारीचे भान ठेवले पाहिजे. कारण व्यवसाय व समाज एकमेकांना पूरक परस्परावलंबी आहे व्यवसायाची निर्मिती घेणारा वर्ग ग्राहक हा समाजाचा भाग आहे . व्यवसायाचे कामकाज सुरळीत पार पाडण्यासाठी कायदे तयार करणारे शासन हे सुध्दा समाजाचा एक भाग आहे. अशा प्रकारे व्यवसाय व समाज वेगळे करता येणार नाही. सामाजिक जबाबदारी म्हणजे व्यवसायाने अशा पद्धतीने वस्तू व सेवा निर्माण करणे किंवा वितरीत करणे, की ज्यामध्ये नफा मिळवितांना समाजहिताचा विचार करावा.

व्याख्या : सामाजिक जबाबदारी म्हणजे व्यवस्थापकाने सर्वसामान्य जनतेचे उद्दिष्टे विकसित करण्यासाठी प्रयत्न करणे होय. समाजाला मुलभूत सेवा पुरविणे आणि सामाजिक स्थिरतेचा विचार करणे होय. थोडक्यात व्यवसायाने सर्वच नफा स्वत:साठी न वापरता तो सामाजिक विकासासाठी खर्च करावा हे अपेक्षित आहे.

सामाजिक जबाबदारीचे कार्यक्षेत्र...

१	कामगार	२	ग्राहक
३	गुंतवणूकदार	४	शासन
५	स्पर्धक	६	समाज
७	पुरवठादार	८	पर्यावरण

सामाजिक जबाबदारी(CSR) सोप्या भाषेत समजावयाचे झाले तर व्यवसायाने सामाजिक बांधिलकीचा गांभीर्याने विचार करणे होय. मध्यंतरी सोशल नेटवर्क मध्ये रतन टाटा चे नाव झळकत नाही तर याचे उत्तर ही सी.एस.आर. मध्येच आहे. टाटा संन्स या कंपनीची मालकी सामाजिक ट्रस्टकडे असून रतन टाटा म्हणजे कोणा एका व्यक्तीकडे नाही. त्यांनी सामाजिक जबाबदारीचे भान ठेवूनच कामे केलेली आहे त्याची उदाहरणे पुढील प्रमाणे आहे.

१) लोकांसाठी स्वस्त दरामध्ये स्पेशालिटी रुग्णालयाची नोंद करणे – टाटा कॅन्सर मेमोरियल हॉस्पिटल

२) महानगर पालिका शाळा दत्तक घेणे उदा. एल.ॲन्ड टी. कंपनीने पवई येथील महानगर पालिकेची शाळा घेतली.

३) [illegible] मुलांना कपडे पुरवण्याचे काम रेमंड करते.

४) आवश्यकता [illegible] पुरविणारी तुई मेकर कंपनी.

५) समाजाचे आरोग्य जपण्यासाठी कोलगेट कंपनीचा फ्रि डेंटल चेकअप प्लॅन.

नवीन कंपनी ॲक्ट १९९३ मध्ये १ एप्रिल २०१४ नुसार खाजगी किंवा सार्वजनिक कंपनीला तिचे मु[...] ५०० कोटी व उलाढाल १,००० कोटी व एकूण नफा ५ कोटी असेल तर अशा कंपन्यांनी त्यांच्या नफ्या[...] २% नफा सामाजिक हितासाठी खर्च करावा.

समारोप : व्यवसायांना सर्वच नफा स्वत:साठी न उपयोग आणता सामाजिक बांधिलकी म्हणून [...] नफा किंवा कामे समाज हित साठी करावी, समाजासाठी धोरणे करावी, आपल्या व्यवसाया[...] पर्यावरणाचा विनाश होणार नाही. याची काळजी घ्यावी तसे होत असेल तर झाडाचे वृक्षारोपण व संव[...] करणे. ग्राहकांसाठी चांगल्या दर्जाच्या वस्तू पुरविणे तसेच नैतिक जबाबदारीचे भान ठेवावे. शी[...] बनविणारी कंपनी असेल पाण्याची क्षती कमी होत असेल तर सी.एस.आर च्या अंतर्गत जलसंधार[...] कामे करावी नैतिक मुल्यांचा विचार करूनच समाज हिताची जाणीव व बांधिलकी ठेवूनच काम कर[...] हेच सी.एस.आर मध्ये अपेक्षित आहे. थोडक्यात सी.एस.आर म्हणजेच सक्सेस रेट वाढविणे अ[...] म्हणता येईल. अशा प्रकारे व्यवसायात व्यवस्थापन करत असतांना समाजातील सामाजि[...] जबाबदारीचे उत्तरदायित्व पार पाडावे.

संदर्भ

Business Management

प्रा.सुरेश मिरड

प्रा.भास्कर जाधव

व्यवस्थापनाची तत्वे व कार्य

प्रा.सुरेश मिरड

प्रा.भास्कर जाधव

आधुनिक प्रबंध विश्वकोष भाग – १०

डॉ. रिता माथुर

वाणिज्य

डॉ. अमित बंसल

www.social Responsibility.com

Asst. Professor
Smt.Asaram ji Bhandwaldar Arts, Comm. & Science College, Devgaon (R.)

61. व्यवसायाची सामाजिक जबाबदारी हा व्यवस्थापनातील आधुनिक प्रवाह

डॉ.मिलिंद तायडे
असोसिएट प्रोफेसर, भोसला मिलिटरी कॉलेज, नाशिक

व्यवस्थापनाच्या / व्यवसायाच्या सामाजिक जबाबदा-या: व्यवसाय ही सामाजिक आर्थिक क्रिया असल्याने विविध सामाजिक समुहाशी व्यवसायाची काही कर्तव्ये व जबाबदा-याही येतात. यांनाच व्यवसायाच्या सामाजिक जबाबदा-या असे म्हणतात. लोकशाही समाजपध्दतीत सामाजिक जबाबदारी म्हणजे व्यवसायाचे ग्राहकवर्गासंबंधी असलेल्या कर्तव्याचे वृहत् रुप होय. सामाजिक स्विकृती हे व्यावसायिक संस्थेचे उद्दिष्ट असते. व्यावसायिक संस्थेच्या सामाजिक जबाबदा-यासंबंधी पहिला विचार १९५३ मध्ये हॉवर्ड आर बॉवेन यांनी मांडला. अर्थात तत्पूर्वी विसाव्या शतकाच्या सुरुवातीस अँड्रयू कार्नेजी, हेन्री फोर्ड यांनी तसेच भारतात सर जमशेटजी टाटा बजाज इ. व्यक्तींनी शिक्षणसंस्था, धार्मिक कार्य इ. साठी धर्मदाय खर्च खूप केला व समाजाच्या ऋणातून उतराई होण्याचा प्रयत्न केला. परंतु व्यवसाय व्यवस्थापन व प्रशासन या ज्ञानशाखेत या विषयावरचा शास्त्रशुध्द विचार हा १९५३ पासून सुरु झाला. औद्योगिक क्रांतीनंतर व्यवसायात भांडवलाला महत्व आले होते. अलिकडे २० व्या शतकाच्या उत्तरार्धात व्यवस्थापनास महत्व आले. पीटर ड्रकर यांनी व्यवस्थापनास २० व्या शतकाचे अपत्य मानले आहे. २० व्या शतकाच्या उत्तरार्धावर व्यवस्थापनात नवीन प्रवाह रुढ होत आहेत.

व्यावसायिक नीतिमत्ता ह्या संकल्पनेतून पुढील प्रवाह रुढ झाले आहेत.

१. व्यवस्थापनाची सामाजिक जबाबदारी
२. परिवर्तनाचे व्यवस्थापन
३. संकटकालीन व्यवस्थापन
४. समग्र गुणवत्ता व्यवस्थापन

या नविन प्रवाहामुळे व्यवस्थापनाचा दर्जा सुधारतो आहे. व्यवस्थापन हे कुंपणाच्या आतमध्ये न राहता त्याचे प्रभावक्षेत्र व्यापक झाले आहे. ग्राहक, सरकार,भागधारक, समाज या दृष्टीकोनातून व्यवस्थापनावर नवीन जबाबदारी टाकण्यात आलेली आहे. व्यवस्थापनातील अलीकडील प्रवाहात व्यवस्थापनाची सामाजिक जबाबदारी या महत्वपूर्ण प्रवाहाचा येथे विचार करणार आहोत.

व्यवस्थापनाची सामाजिक जबाबदारी: व्यावसायिक नीतिमत्तेमधून व्यवस्थापनाची सामाजिक जबाबदारी ही नवीन संकल्पना पुढे आली आहे. दिवसेंदिवस व्यवसाय हा ग्राहकाभिमुख होत आहे. शिवाय सरकार,भागधारक, समाज ह्या दृष्टीकोनातूनही त्यास काही जबाबदारी पार पाडावी लागत आहे. व्यापक समाधान शोधण्याचा प्रयत्न या सामाजिक जबाबदारीतून व्यक्त होतो व्यवसाय ही संकुचित अर्थ व विचार हा विचार औद्योगिक क्रान्तीपासून २० व्या शतकाच्या पूर्वार्धापर्यंत टिकून होता, त्यात बदलत्या सामाजिक संकल्पनेतून व्यवसायास सामाजिक जबाबदारी पार पाडावी लागत आहे आणि पुढे ही सामाजिक जबाबदारी पाहावी लागणार आहे.

व्याख्या :- उद्योगपती रामकृष्ण बजाज यांनी बिझिनेस इंडिया या फेब्रु ७९ च्या अंकातून व्यवस्थापनाच्या सामाजिक जबाबदारीबाबत पुढील महत्वपूर्ण मत व्यक्त केले आहे.

"व्यवसायाची प्राथमिक जबाबदारी ही होय की, औद्योगिकरण संपूर्ण समाजास उपयुक्त झाले पाहिजे आणि त्याचबरोबर ग्राहक, कामगार आणि भागधारक यांच्या हिताचे रक्षण झाले पाहिजे".

हॉवर्ड बोवेन यांच्या मते- "व्यवस्थापनाने असले निर्णय,धोरणे व कृती पाहून सामाजिक मूल्यांची जाणीव ठेवून आवश्यक कार्य करणे म्हणजे व्यवस्थापनाची सामाजिक जबाबदारी होय".

कूंट्ज आणि ओडोनेल यांच्या मते- "स्वहित साधण्याबरोबरच इतरांचे अधिकार आणि हक्क यावर आक्रमण होणार नाही याबाबत दक्ष राहणे" - वरील व्याख्येमधून असे दिसून येते की, व्यवस्थापनाने समाजाच्या हितावर आक्रमण करता कामा नये, शिवाय समाजाच्या हिताची उपयुक्त व्यवस्थापनाने केली पाहिजे.

व्यवस्थापनाची / व्यवसायाची आधुनिक उद्दिष्टे : सामाजिक जबाबदारी: नफा मिळविणे हे व्यवसायाचे पारंपारिक उद्दिष्ट आहे. त्याचे महत्वही फार आहे. नफा न मिळवता व्यवसाय चालू ठेवणे शक्यही नसते. तेव्हा या उद्दिष्टाबद्दल कोणतेही दुमत होणार नाही. परंतु अलीकडील काळात व्यवसाय ही एक सामाजिक संस्था या दृष्टीने विचार केला जातो. त्यामुळे नफा मिळविणे या उद्दिष्टाचा त्याग न करताच इतर अनेक उद्दिष्टांची पूर्तता व्यावसायिक संस्थेने करावी अशी अपेक्षा केली जाते. या उद्दिष्टांच्या बदलातील पहिला टप्पा म्हणजे व्यावसायिकाने अशा वस्तू वा किंवा सेवांची निर्मिती करावयाची की त्यामुळे उपभोक्त्याचे संपूर्ण समाधान होऊ शकेल आणि त्यांना विशिष्ट संस्थेला परत परत ... व्यावश्यक वाटतील. अलीकडील काळात या दोन उद्दिष्टांव्यतिरिक्त इतर उद्दिष्टेही व्यावसायिक संस्थेपुढे असू शकतात. विशेषत: मोठ्या आकारमानाच्या व्यावसायिक संस्थांकडे साधनसामग्रीची संपन्नता असल्यामुळे त्यांनी पुढाकार घेतला तर काही गोष्टी केल्यास समाजस्वास्थ्य आणि समाजकल्याण साध्य होण्यास मदत होऊ शकेल.

व्यवस्थापनाने आपली सामाजिक जबाबदारी पुढीलप्रमाणे पार पाडली पाहिजे.याचे विभाजन दोन भागात करता येईल.

व्यवस्थापनाची / व्यवसायाची सामाजिक जबाबदारी

अ. अन्तर्गत घटकबाबत सामाजिक जबाबदारी
१.आपली कंपनी
२.भागधारक
३.कामगार
४.विश्वस्त भावना
५.औद्योगिक शांतता
६.नाविन्याचा स्वीकार

ब.बाह्य घटकबाबत व्यवस्थापनाची सामाजिक जबाबदारी
७.उपभोक्त्याप्रती (Consumer) / ग्राहकप्रती सामाजिक जबाबदारी
८. सरकारप्रती सामाजिक जबाबदारी -
९. गुंतवणूकदारप्रती सामाजिक जबाबदारी :-
१०. पुरवठादारप्रती सामाजिक जबाबदारी :-
११. समाजप्रती सामाजिक जबाबदारी :-

- अ. अन्तर्गत घटकबाबत सामाजिक जबाबदारी

अंतर्गत घटकबाबत व्यवस्थापनाने सामाजिक जबाबदारी पार पाडली पाहिजे

१.आपली कंपनी :- जेथे आपण काम करतो, जेथे आपणास पगार मिळतो त्या कंपनीचे उद्दिष्ट साध्य करण्याची पहिली जबाबदारी व्यवस्थापनावर येते. आपल्या प्रत्येक कृतीतून कंपनीच्या हिताचे रक्षण झाले पाहिजे.

२.भागधारक :- कंपनीचे खरेखुरे मालक भागधारकांना जास्तीत जास्त लाभांश मिळेल असा प्रयत्न व्यवस्थापनाने केला पाहिजे. साधन सामग्रीचा पर्याप्त उपयोग करून, कमीत कमी उत्पादन खर्च करून भागधारकांच्या हिताचे रक्षण करता येते. भांडवल सतत सक्रिय ठेवणे आवश्यक असते.

३.कामगार :- उपक्रमातील अत्यंत संवेदनशील घटक कोणता असेल तर श्रम म्हणजेच मनुष्यबळ होय. ह्या घटकाने आपला वेळ, उपक्रमाला दिलेला असतो. कामगारांच्या श्रमावरच करताना नफा मिळवत असतो. केवळ भांडवलाने घर

Sunderrao Solanke Mahavidyalaya, Majalgaon, Dist. Beed

NAAC Re-accredited 'B' Grade

National Conference
On

" INNOVATIVE TRENDS IN COMMERCE AND MANAGEMENT"

27th September 2016

Organized by
Department of Commerce

Certificate

This is to certify that Prof./Dr./Mr./Miss. Vilas G. Dapke. has participated as of Shri A.B. College Deogan (R) Kannad. Chair Person / Resource Person / Attended / Presented Research Paper entitled " Education: A Tool for success of make in India"

Principal
Shri Asaramji ... Arts, Commerce & Science College ... 431115

Dr. R. B. Lahane
Convener

Dr. V. P. Pawar
Chief Organiser

Asst. Professor
Shri Asaramji Bhandwaldar Art's, Comm. & Science College, Deogaon (R.), Ta. Kannad Dist. Aurangabad